लोक-मैत्रेय

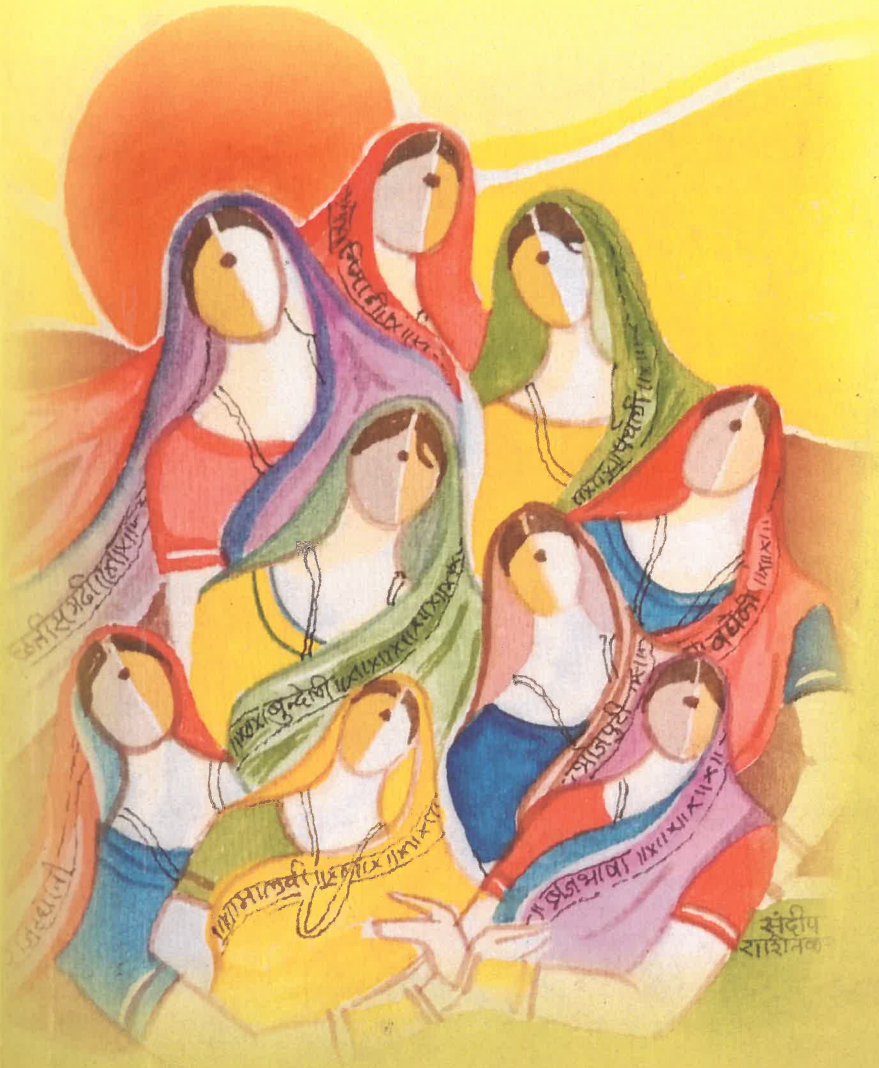

संपादक

मणिमोहन चवरे

लोक-मैत्रेय

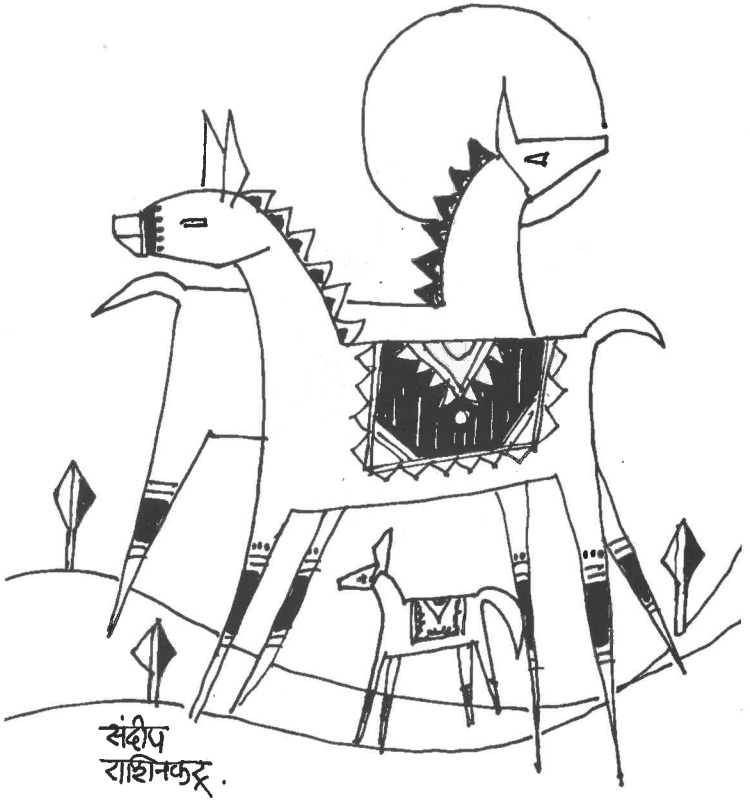

दस लोक-भाषाओं का परिचायक रचित साहित्य

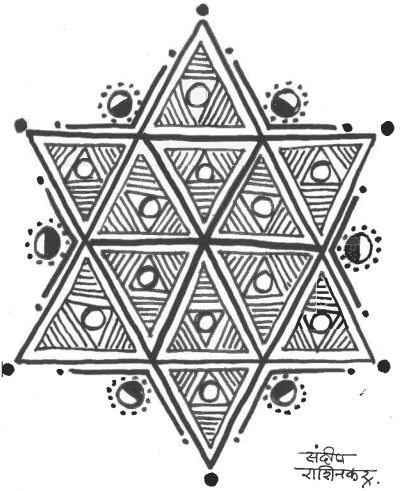
संदीप
राशिनकर.

लोक-मैत्रेय

संपादक
मणिमोहन चवरे

समन्वयक
सुषमा सिंह कर्चुली

लोक-मैत्रेय प्रकाशन खंडवा, उज्जैन, पूना

लोक-मैत्रेय

संपादक : मणिमोहन चवरे (मो. 9850980334)

समन्वयक
श्रीमती सुषमा सिंह कर्चुली, मोबा. 8889254695

प्रकाशक
लोक-मैत्रेय प्रकाशन खंडवा/उज्जैन/पूना
मोबा. 7067526606, 9850980334

प्रस्तुति
निमाड़ी लोकभाषा परिषद्, खंडवा एवं
स्व सेवा संयोजन समिति सिहोरा, जबलपुर

संस्करण : फरवरी 2022

© संपादक/समन्वयक

आवरण एवं आंतरिक चित्रांकन
संदीप राशिनकर, इंदौर
मोबा. 9425314422

अक्षर संयोजक
जितेंद्र शर्मा

मुद्रक
साईं कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिंटर्स उज्जैन
मोबा. 9827430261

मूल्य : 200/- (दौ सौ रुपए)

LOK MAITREY By MANIMOHAN CHOUREY

संपादकीय....

प्रस्तुत ग्रंथ में जिन दस लोकभाषाओं की उपस्थिति दर्ज हुई है, वे सभी, आधुनिक भारतीय आर्यभाषा-कुल के अंतर्गत विभिन्न प्राकृत-अपभ्रंशों से विकसित होकर, हमारी राष्ट्र भाषा को समृद्ध कर रहीं हैं। इनमें –

1. 'शौरसेनी अपभ्रंश के पश्चिमी-हिन्दी समूह की 'ब्रजभाषा', 'बुन्देली' और 'निमाड़ी';
2. अर्धमागधी-अपभ्रंश के पूर्वी-हिन्दी समूह की 'बघेली' और 'छत्तीसगढ़ी';
3. मागधी-अपभ्रंश के बिहारी-हिन्दी समूह की 'भोजपुरी' और 'मगही';
4. आवंती एव पैशाची प्राकृत तथा आवंती एवं पैशाची अपभ्रंश के मिश्रित रूप से उपजी 'मालवी';
5. शौरसेनी-अपभ्रंश के गूजरी समूह की 'राजस्थानी' तथा
6. भारत के भौगोलिक केंद्र में बसे पचेल-अंचल में बोली जाने वाली, 'पचेली' (जोकि बुन्देली, बघेली, गोंडी आदि स्थानीय बोलियों के पंचमेल से विकसित हुई) सम्मिलित हैं।

इन 10 लोक भाषाओं को देवनागरी वर्णक्रमानुसार, भाषावार, नौ खंडों में समाहित किया गया है। इस प्रयोग में हमने, विद्वान साहित्यकारों के साथ ही नवोदित रचनाकारों को भी सम्मिलित किया है ताकि, संबंधित भाषाओं के रचित साहित्य में, भाषा के विज्ञान से लेकर भाषा के व्यवहार तक को जानने-समझने का अवसर मिल सके।

सर्वाधिक व्यवहृत संपर्क भाषा ही किसी देश की राष्ट्रभाषा अथवा मातृभाषा कहलाने की अधिकारिणी हो सकती है। भारत में यह गौरव हिन्दी भाषा को प्राप्त है। देश की एकता, अखंडता और प्रगति के लिए, यह हमारा राष्ट्रधर्म है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा को सुदृढ़ और समृद्ध बनाए रखें। यदि हम चाहते हैं कि, हमारी

देशभाषा की फुलवारी फलती-फूलती रहे तो हमें, क्षेत्रीय बोलियों की वल्लरियों को बड़े जतन से पोषित करते रहना होगा; क्योंकि ये बोलियाँ राष्ट्रभाषा के वटवृक्ष की शाखें होकर भी उनकी जड़ें होतीं हैं।

संस्कृत के एक ही सोते से निसरी हमारी अनेक बोलियों ने अब भाषा का पथ पकड़ लिया है। ऐसे में, भाषाविदों, साहित्य-सर्जकों का काम महत्वपूर्ण और चुनौती भरा हो गया है। साहित्य का महल, भाषा-संस्कृति के पुख्ता स्तंभों के बिना खड़ा नहीं रह सकता। लोक व्यवहार से तो बोलियों की बिदाई हो ही रही है। हम देख रहे हैं। नई पीढ़ियों का उत्तरोत्तर, शिक्षित होकर शहरों की ओर कूच करना रोका नहीं जा सकता। प्रगति के पथ पर 'रिवर्स-गियर' नहीं लगता है। परंतु यदि रचित साहित्य में भी लोकभाषाओं की गरिमामय छवि सुरक्षित नहीं रह सकी तो निकट भविष्य में वे साहित्य से भी विलुप्त हो सकती हैं। इस संकट से हमें मिलजुलकर निपटना होगा। अपनी कलम को लोक की ओर मोड़ना होगा।

विविधता में एकरसता बनाए रखना हमारी भारतीयता का युगादि मूलमंत्र है। विभिन्न लोकभाषाओं की अपनी सांस्कृतिक पहचान अक्षुण्ण बनाए रखते हुए, उनके आपसी सौहार्द एवं सामंजस्य से अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी को सुदृढ़ और समृद्ध बनाए रखने के संकल्प के साथ, यह 'लोक-मैत्रेय' ग्रंथ आपके हाथों में समर्पित है।

किसी पुस्तक की प्रस्तुति अथवा प्रकाशन, सम्मिलित-कौशल्य से ही संभव होता है; अतः सहकर्मियों की दक्षता बखाने बगैर, आभार व्यक्त करना, मात्र एक औपचारिकता ही रह जाएगी।

प्रस्तुत कृति के निर्माण में, 'स्व सेवा संयोजन समिति' सीहोरा, जबलपुर की संरक्षक, श्रीमती आशा निर्मल जैन, श्रीमती सुधा दुबे, अध्यक्ष श्रीमती सुषमा कर्चुली, उपाध्यक्ष डॉ. अनुराग दुबे, सचिव श्रीमती रश्मि सेठी, श्रीमती मंजू मिश्रा, कोषाध्यक्ष श्रीमती सुषमा खरे, श्रीमती साधना साहू, संयोजक रमा सरावगी, मीनू परिहार तथा सविता चतुर्वेदी, सुधा पांडे, सारिका साहू, दीप्ति जैन और रंजना ठाकुर आदि सदस्यों ने बड़े उत्साह से प्रस्ताव रखा। समिति की अध्यक्ष, श्रीमती सुषमा कर्चुली ने कई महीनों के अथक परिश्रम से दर्जनों रचनाकारों की शताधिक रचनाओं

को एकत्र करके संपादन पटल तक पहुँचाया। उनका समन्वय कौशल विशेष रूप से सराहनीय है।

इस ग्रंथ में 10 लोक भाषाओं के 76 रचनाकारों की 128 रचनाएँ सम्मिलित हैं। अपने प्रतिभाजन्य साहित्य-सृजन से, संकलन को 'लोक-मैत्रेय' बनाने वाले सभी साहित्यकारों का सहयोग अभिनंदनीय है। समस्त रचनाओं को भाषावार नौ खंडों में संयोजित करके, संबंधित लोकभाषाओं के, परिचयात्मक आलेख भी दिए गए हैं, जो कि संबंधित भाषाओं के परामर्शदाताओं द्वारा लिखे गए हैं। इनमें, छत्तीसगढ़ी के लिए, श्री चेतन भारती; निमाड़ी के लिए श्री मणिमोहन चवरे; पचेली के लिए डॉ. कौशल दुबे; बघेली के लिए डॉ. रामगरीब पाण्डेय 'विकल'; बुन्देली के लिए श्री सुरेन्द्र सिंह पँवार; ब्रज के लिए पं. राधा बिहारी गोस्वामी 'भागवाताचार्य'; भोजपुरी के लिए डॉ. आरती पाठक; मालवी के लिए डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा तथा राजस्थानी के लिए डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' के आलेख विशेष महत्व रखते हैं।

लोक साहित्य को लोककला का परिधान पहनाते हुए, आवरण-पृष्ठ की मनोहारी कलाकृति सहित आंतरिक-पृष्ठ और खंड-पृष्ठों के रेखांकन, देश के जाने माने चित्रकार और मेरे आत्मीय सखा श्री संदीप राशिनकर ने बड़े मनोयोग से बनाए हैं। वे एक अच्छे लेखक और समीक्षक भी हैं। उनकी तूलिका का स्पर्श पाते ही किताबें बोलने लगती हैं।

विभिन्न बोलियों की अलग-अलग वर्तनी को धैर्य और जतन से टंकण करने के लिए, अक्षर संयोजक, उज्जैन के श्री जितेंद्र शर्मा और लोक-मैत्रेय प्रकाशन के संयोजक श्री अक्षय कुमार चवरे विशेष प्रशंसा के पात्र हैं।

आपने-अपने क्षेत्र में निपुण, इन समस्त सहकर्मियों का अंतस्तल से आभार व्यक्त करते हुए दस लोक-भाषाओं का यह परिचायक संग्रह सुधी पाठकों को लोकार्पित करता हूँ।

– मणिमोहन चवरे

मोबा. 9850980334

अनुक्रमणिका

01.	सम्पादकीय	5-7
02.	छत्तीसगढ़ी - खंड	9-18
03.	निमाड़ी - खंड	19-38
04.	पचेली - खंड	39-55
05.	बघेली - खंड	57-78
06.	बुंदेली - खंड	79-105
07.	ब्रजभाषा - खंड	107-117
08.	भोजपुरी/मगही - खंड	119-131
09.	मालवी - खंड	133-147
10.	राजस्थानी - खंड	149-164

लोक-मैत्रेय

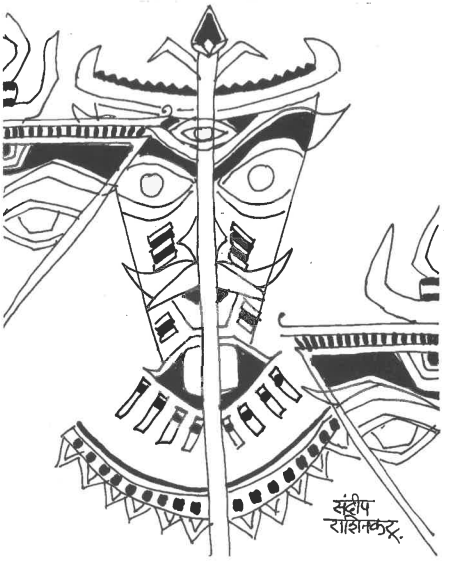

छत्तीसगढ़ी-खंड

रचना-क्रम

1. **चेतन भारती**
   छत्तीसगढ़ी भाषा : सामान्य परिचय 11-14
   जिन्गी के चार दिन/ओलहा के पाग/
   भारत माता के वंदना

2. **शंभू लाल शर्मा 'वसंत'**
   वनवासी हम 15

3. **रश्मि रामेश्वर गुप्ता**
   दाई अउ बबा के भाखा/छत्तीसगढ़ वंदना 16-17

4. **बोधराम साहू**
   आवा पौधा लगाबो 18

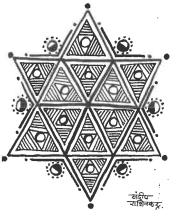

छत्तीसगढ़ी बोली का परिचय

– चेतन भारती
वरिष्ठ साहित्यकार

आधुनिक आर्यभाषाओं के विकास क्रम में , अर्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वी हिंदी की बोली के रूप में छत्तीसगढ़ी भाषा विकसित हुई। यह छत्तीसगढ़ राज्य की प्रमुख बोली है, जो कि लगभग दो करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है।

सम्पूर्ण राज्य में बोली और समझी जाने के कारण, यह प्रदेश की संपर्क भाषा है। छत्तीसगढ़ हिंदी-भाषी भारत का दक्षिण-पूर्वी सीमांत क्षेत्र होने से यहाँ की भाषा-संस्कृति पर मराठी, उड़िया और आर्येत्तर-भाषा गोंडी का गहन प्रभाव पड़ा है। जाति तथा भौगोलिक सीमाओं के आधार पर, छत्तीसगढ़ी के अनेक रूप मिलते हैं - बिलासपुरी, रायपुरी, खल्लाटी, लरिया, बैगानी, कलंगा, भूलिया, सदरी-कोरबा, बिंझवारी, खैरागढ़ी, बस्तरी, हल्वी आदि। प्रदेश के मैदानी इलाकों में, मुख्यतः आर्यभाषा समूह की बोलियों का प्रयोग किया जाता है, जबकि अन्य इलाकों में, द्रविड़ और मुंडा भाषा समूह की बोलियाँ प्रचलित हैं।

छत्तीसगढ़ी की वर्णमाला का गठन लगभग देवनागरी जैसा ही है। इसमें 8 स्वर, 2 संध्यक्षर, 29 व्यंजन सम्मिलित हैं। इसके व्यवहारिक रूप में श, ष, त्र, ज्ञ, क्ष तथा ऋ अक्षरों का प्रयोग नहीं होता। यहाँ उल्लेखनीय है कि, छत्तीसगढ़ी में, ऐ और औ का उच्चारण अइ और अउ के समान होता है। इसकी रूप-रचना में, लिंग न तो प्रभावित करता है और न ही प्रभावित होता है।

छत्तीसगढ़ी की विकास यात्रा इसके साहित्य के गाथा-युग से, भक्ति-युग होती हुई आधुनिक-युग तक आती है। इसका परंपरागत काव्य, प्रेम और वीरता की भावना से ओतप्रोत है।

आजकल छत्तीसगढ़ी साहित्य में, अनेक विधाओं में, व्यापक साहित्य-सृजन हो रहा हैं। प्रतिवर्ष दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। शब्दकोश और व्याकरण पर काम हुआ है और शोधकार्य जारी है।

मोहदी, अभनपुरा (छ.ग.)
मो. 9827957056

चेतन भारती
जन्म : 30 मार्च, 1946
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी)
कृति : अचरा के पीरा/ हरि ठाकुर अभिनंदन ग्रंथ/ हंसी एक नाव सी/ठोमहा भर घाम/समय का सूरज आदि पुस्तकें
सम्प्रति : मोहदी, अभनपुरा, जिला-रायपुर (छ.ग.)
मोबा. 9827957056

जिन्गी के चार दिन

ढोलकी के बोल गूँजे
धिक धिनाधि धिन
हांसत गोठिया ले तनिक
जिये बर हावे दू चार दिन

जिन्गी नंदिया क धार
तन हावे काकरो उधार।
जिन्गी जिये के नाव हे
करम नाहके के नाव हे
सुनता के धरी पतवार
जागही भाग एका दिन

गनती के बाँचे हे साँस
तभो इच्छा के पार नइये।
दूरिहा हे रस्ता, इऊर जाय म
कोनो देये बर सांध नइये
काकरो आसरा करना छोड़
मिहनत के फर पाकही परन दिन

कोन हावे दुनियाँ म अइसन
जौन ल पाये के कुछु आस नइये।
मन के आँखी उधार देख तो
आँसू पोछे कहुं आय नइये।
अपने अपन झींक तो गाड़ी
हिम्मत म भाग जागही एका दिन

ओलहा के पाग

घूमत घामत, आजा रे बादर
सुग्घर बरसा बरस दे।
सुखाये हे टोंटा, पियासे धरती
किसानी के जिन्गी दरप दे।

घेंच म पहिरे, कर्जा के ताबीज
परे इन खेती खार परिया
कसके घरन दे ओला हरिया
पेट औंटा के डारे हावे बीजहा
ओल्हा के पाग म पानी परन दे

कहूं नइसे काकरो चिन्हइया
स्वारथ म चपके आँखी कान
रटहा परछी तरी रतिहा पहाथे
बिन पानी के हावें हलाकान
जीवरा हमरो होगे ढरकाहा
पाँव के फोरा म, फुहार परन दे।

तोर वर गिरवी धराय स्वांसा
मोर सुरवागे, सुग्धर फुलवारी।
फुर्र के उड़ाय झन देखे सपना
संग छोड़य झन संग के संगवारी
नखा नंदिया म बांध बना बो
गरज चमक के पानी गिरन दे।

-चेतन भारती

भारत माता के वंदना

बन्दन भारत भुइया मोर
मइया परत हौ तोर पइंया

आँखी म गंगाजल समाये
माता सुग्धर अमरित पियइया।
तोर अंचरा म अन्न भंडार भरे
फुरहुर चलत हावे पुरवइया।
चारो कोत हरियर खार हंसे
जम्मो करत हवें बरवान हो...

चटक चंदइनी कस दमकत हावे
तोर मुकुट ऊपर हिम गंगान म
किलकत हांसत फूल, खिल खिलाये
दाई पुलकत हावे, खलिहान म
तीनों सागर मिलके उछलत
तोर पाँव के करत हवें परवार हो

पान पतई मन झूलना झुलावें
सबके मन ल तिही रमइया हस
गुरतुर बोली तोर कंठ ले निकरे
मइया तिही सबके दुख निमरइया अस
तोर सरन म जौन आथे दाई
गावत रहियें सब तोर गान हो...

-चेतन भारती

●●●

शंभूलाल शर्मा 'वसंत'
जन्म : 11 अप्रैल, 1948
शिक्षा : बी.ए.,बी.एड.
साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन
संपादन : शिक्षा दीप (त्रैमासिक)
कृतियाँ : मामाजी की अमराई/चंदा मामा के आँगन में

वनवासी हम

वन से रखते रिश्ते-नाते
वनवासी कहलाते हम,
वन-पर्वत हैं जान हमारी
इनकी शान बढ़ाते हम।

कंद-मूल-फल खाकर नितदिन
सुखमय जीवन जीते हम,
हर मौसम के तेवर सहकर
श्रम का बिगुल बजाते हम।

सीधा-सादा जीवन अपना
वन से मन बहलाते हम,
मिल-जुलकर सुख-दुख सहलेते
पर न कभी घबराते हम।

•••

रश्मि रामेश्वर गुप्ता
जन्म : 01 जुलाई, 1973
शिक्षा : बी.ए.,बी.एड.
कृतियाँ : आत्मदर्शन/हिंदी प्रेरक प्रसंग सियान मन के सीख (2 भाग)/एक दीप जला देना (काव्य संग्रह)
संप्रति : बिलासपुर (छ.ग.) मोबा. : 9755252605

दाई अउ बाबा के भाखा

झन कर नोनी, झन कर बाबू,
अड़बड़ समझाईन,
तभो ले नोनी अउ बाबू के समझ म,
कुछू नई आईस।

एक दिन, नोनी अउ बाबू, दूनों झन
अंगरा ल धर पारिन,
जगरे उंखर हाथ हा,
अउ रहिगे मुँहे म,
मुँहे के बात हा।

सुन न दाई, सुन न बबा,
अड़बड़ गोहराईन,
अउ मुड़ धर के, दूनों झन,
अड़बड़ पछताईन।

दाई अउ बबा के हिरदय हा,
अंतस ले रोवय,
अउ रो-रो के अपन,
आँखी ल खोवय।

गोहार पार के बबा हा,
चौरा म चिचियावय,
अउ दाई हा धीर कन,
कान म फुसफुसावय।

अपन ले बड़े के बात ला,
सुने ले बेटा,
नई बिगड़य कुछू बात हा,
दिन तो पहा जाथे बेटा,
अउ रहि जाथे केवल रात हा,
गुने बर, सुने बर अउ धुने बर।

हमन तो चल देबो बेटा,
रहि जाही तो हमर भाखा,
हमर मान ला मत करव बेटा,
अपन मान ला तो राखा,

●●●

छत्तीसगढ़ी वंदना

छत्तीसगढ़ के पावन भुइयाँ
तन मन अर्पित तोला,
आए हौं दाई तोर सरन मा,
आशीष दे दे मोला...
छत्तीसगढ़ के पावन भुइयाँ
तन मन अर्पित तोला...
जय हो जय हो भुइयाँ,
तोर माय के जनम जुग दाई,
बने रहय ओ छइँहा....

दीन दुखी के काम मैं आवँव,
देव ला झन बिसराँवव,
धरम करम म मन ला लगावँव,
जग में नाम कामवव,
अरपा पैरी सोंढुर महानदी,
के तै प्रेम दे मोला,
छत्तीसगढ़ के पावन भुइयाँ ...

माटी चंदन ये भुइयाँ के,
अमृत असन हे बानी,
हवा इहां के पावन दाई,
अमिट अटल है कहानी,
दूध असन पानी म दाई,
तर जाही ये चोला,
छतीसगढ़ के पावन भुइयाँ ...

डोंगरगढ़ खल्लारी
खैरागढ़ के राजा रानी,
भैरव बाबा राजीवलोचन
करथे इहाँ निगरानी,
महामाया दाई ये भुइयाँ के,
करथे सिंगार सोला,
छत्तीसगढ़ के पावन भुइयाँ
तन मन अर्पित तोला,
आए हौ दाई तोर सरन मा,
आशीष दे दे मोला,
जय हो जय हो भुइयाँ
तोर मया के जनम जुग दाई,
बने रहय ओ छइँहा....

-रश्मि रामेश्वर गुप्ता

•••

बोधीराम साहू
जन्म : 28 मई, 1971
शिक्षा : एम.ए. (हिंदी/अंग्रेजी/सहित 10 विषयों में)
विधा : काव्य
सम्प्रति : पुराना चंदनियाँ पारा, जाँजगीर (छ.ग.)
मोबा. 9425541664

आवा पौधा लगाबो

आवा संगी आवा साथी हमन पौधा ल लगाबो जी।
सबो जुर मिल के ये धरती ल आवा सरग बनाबो जी।
हमर प्रकृति म झन होवय ऑक्सीजन के कमी आवा पौधा लगाबो जी।
झन काटो जी पेड़ ल आवा हमन सुग्घर पौधा लगाबो जी।
पौधा लगाके हमर धरती ला आवा सुघ्घर बनाबो जी।
हरीयर हरीयर दिखही चारो कोती आवा खुशी मनाबो जी।
पौधा लगाए के आवा हमन अभियान चलाबो जी।
पौधा लगाबो जीवन बचाओ अउ करबो एकर सुरक्षा जी।
आम,पीपल, बिही, पपीता, आँवला, जम्मो पौधा ल लगाबो जी।
मिल जुल के सबो संगी साथी एकर परब ल मनाबो जी।
पेड़ लबाओ जीवन बचाबो हर कोई ल संमझोबा जी।
खेत, खार, बारी, कोला, गरोसा सबो म पौधा लगाबो जी।
जीवन सफल हो जाहि संगी आवा पौधा ल लगाबो जी।
एक पौधा लगाय के पुण्य दस लइका समान हावय पौधा लगाबो जी।
लइका, सियान, जवान, सबो झन आवा पौधा लगाबो जी।
एकर महिमा है अड़बड़ संगी आवा हमन पौधा लगाबो जी।
पौधा लगा के संगी हमन घर परिवार जम्मो खुशी मनाबो जी।
आवा संगी आवा साथी हमन पौधा लगाबो जी।

●●●

लोक-मैत्रेय

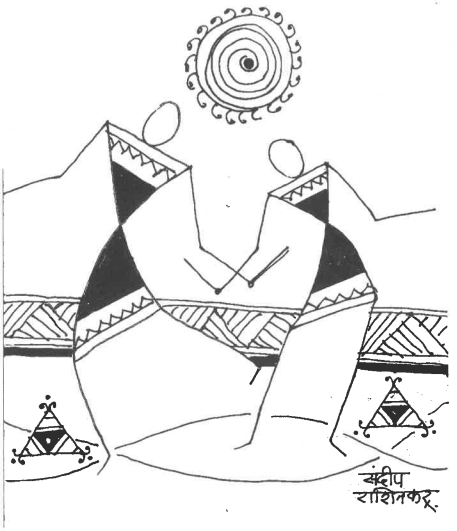

निमाड़ी-खंड

रचना-क्रम

1. **मणिमोहन चवरे**
   निमाड़ी लोकभाषा : सामान्य परिचय 21-22

2. **शरदचन्द्र त्रिवेदी**
   तरी छे उनकी/पावणाजी अपणा नेता छे/
   मत निकळ घर सी यार 23-25

3. **एकता कश्मीरे**
   माय तू हळद की गाँठ/बागी गुलाब/दाजी की खीज 26-28

4. **ब्रजेश बड़ोले**
   जतरा कबीरा/कागज पऽ उभई गई रे/
   आड़ी-तिरछी वाट कबीरा 29-31

5. **श्रीमती किरण केशरे**
   सासरऽ की मूँदी/असाड़ी को पाणी/
   साँपळई भी मरी गई... 32-34

6. **श्रीमती विभा भटोरे**
   संक्रमण की आग/उपाय 35

7. **श्रीमती ममता कानूनगो**
   अहिंसा दिवस/प्रभात-फेरी/लाली 36-38

निमाड़ी लोकभाषा : एक परिचय

- मणिमोहन चवरे
वरिष्ठ साहित्यकार एवं निमाड़ी भाषाविद

निमाड़ी, पश्चिमी-हिंदी-समूह की एक स्वतंत्र और परिनिष्ठित लोकभाषा है। मध्यप्रदेश के दक्षिण-पश्चिमी भूभाग में 'निमाड़-अंचल', लगभग 26 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। इसके पाँच जिलों - खंडवा, खरगोन, बड़वानी, बुरहानपुर, हरदा तथा आसपास में बसे लगभग 40 लाख लोगों द्वारा निमाड़ी भाषा, बोली जाती है। निमाड़ी यहाँ के अधिकांश निवासियों की मातृभाषा है तथा इस भूभाग के गाँव-कसबों की संपर्क भाषा भी है। यद्यपि निमाड़ी भाषी लोगों की संख्या बहुत अधिक नहीं है, तथापि यह भाषा व्याकरण सम्मत है और इसका लोकसाहित्य अद्वितीय है।

विंध्य और सतपुड़ा के मध्य, नर्मदा की सुरम्य तराई में स्थित आज का निमाड़, पौराणिक काल में 'अनूपदेश' कहलाता था। तेरहवीं शताब्दी में, मुगलों के शासनकाल में अनूप जनपद का नाम, निमाड़ प्रांत हो गया। निमाड़ी लोकभाषा, भारत के सबसे बड़े भाषायी परिवार, 'आधुनिक भारतीय आर्य भाषा परिवार' की वंश-परंपरा में आती है। अपभ्रंशकाल के बाद, मध्यप्रदेश की शौरसेनी से उत्तर भारत में अनेक भाषा समूह विकसित हुए। इनमें 'पश्चिमी हिंदी समूह' के अंतर्गत खड़ी-बोली, ब्रज, बुंदेली, निमाड़ी, हरियाणवी, कन्नौजी आदि बोलियाँ आती हैं। इस तरह हम देखते हैं कि, निमाड़ी का स्थान शौरसेनी अपभ्रंश के पश्चिमी हिंदी-समूह में आता है।

निमाड़ी के रचित साहित्य का प्रथम दर्शन 1443 ई. में संत लालनाथगीर की निर्गुण भक्ति रचनाओं में होता है; अतः कहा जा सकता है कि, इससे बहुत पहले, संभवतः तेरहवीं शताब्दी के आसपास पश्चिमी हिंदी-समूह की अन्य बोलियों के सामानांतर ही निमाड़ी का उद्‌गम हुआ। प्रथम चरण में निमाड़ी के वाचिक साहित्य का शैशवकाल रहा, जबकि दूसरा चरण 1443 से आरंभ होकर 500 वर्षों तक निर्गुणी संतों की भक्ति रचनाओं से आप्लावित रहा। विकास का यही चरण निमाड़ी साहित्य के इतिहास का आदिकाल भी था। इसके बाद उन्नीसवीं

शताब्दी की अंतिम दशाब्दी से निमाड़ी लोकभाषा का आधुनिक काल आरंभ होता है जो आज तक चल रहा है।

आधुनिक काल की रचनाओं में बीसवीं सदी के आरंभ से ही ठेठ शब्दों के साथ निमाड़ी का सुस्पष्ट भाषिक रूप उभरकर आया; फलस्वरूप भाव, भाषा, विषय और प्रस्तुति में निखार आने लगा। भाषा की गढ़न-बनक और मानकता पर ध्यान दिया गया, परिणामस्वरूप निमाड़ी में परिनिष्ठत साहित्य रचा जाने लगा। संस्कृत के तद्रूप शब्दों का प्रयोग लगभग समाप्त सा हो गया। विलंबित-'अ' के भाषावैज्ञानिक अध्ययन, नियमन तथा सटीक प्रयोग से तथा वर्तनी और विन्यास की व्यवस्था से निमाड़ी ने अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है।

निमाड़ी वर्णमाला में - 10 स्वर, 33 व्यंजन और 2 आयोगवाह हैं। जबकि, देवनागरी के पारंपरिक वर्ण - ऋ, अः, ङ, ञ, श, ष, क्ष, ज्ञ तथा श्र वर्ण निषिद्ध हैं। इस लोकभाषा में, अनेक उपस्वन, संयुक्त ध्वनियाँ तथा संध्वनियाँ मौजूद हैं।

निमाड़ी मूलरूप से ओकारांत भाषा है। इसकी विशेष ध्वनि, विलंबित-'अ' एक आयोगवाह वर्ण है, जिसके उच्चारण की अवधि ईषत-दीर्घ (पौने दो मात्रा) की होती है; और मात्रा चिह्न अंग्रेजी के व्यंजन वर्ण 'ऽ' जैसा होता है। इसका प्रयोग मुख्य रूप से अकारांत शब्दों के अंत्याक्षरों के साथ किया जाता है, जिससे उच्चारण में, शब्द के अंतिम वर्ण में निहित 'अ' स्वर की ध्वनि में विलंबित तान आ जाती है। विलंबित 'अ' का प्रयोग; शब्द की ध्वनि, वर्तनी एवं अर्थ को प्रभावित करता है। जैसे - मनऽ = मैंने, आगऽ = आगे।

निमाड़ी लोकभाषा के शब्दकोश, व्याकरण, भाषाविज्ञान, अनुवाद-कार्य आदि अनेक ग्रंथ, इसकी परिपक्वता प्रांजलता एवं मानकता के परिचायक हैं। कुल मिलाकर बीसवीं और इक्कीसवीं सदी का संक्रांति काल, निमाड़ी लोकभाषा की विकास यात्रा का स्वर्णिम पड़ाव कहा जा सकता है; जब 'निमाड़ी', बोली की पगडंडी से चलकर, एक व्याकरण सम्मत, लोकभाषा के पथ पर आसीन हुई है। निमाड़ी का लोक साहित्य समृद्ध एवं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और इसका रचित साहित्य भी सभी विधाओं में लिखा जा रहा है।

पूना (म.प्र.)
मो. 9850980334

शरदचन्द्र त्रिवेदी
जन्म : 21 अक्टूबर, 1964
शिक्षा : एम.कॉम. एम.ए. (हिंदी, राजनीति), बी.एड., डिप्लोमा इन स्पेशल एजुकेशन
सम्प्रति : शिक्षक, खरगौन (म.प्र.)
मोबा. : 9406816411

तरी छे उनकी

वो तरबतर तरी छे उनकी,
जिनको पाणी मरी गयो
पाणीदार सूख्यो सरावण मऽ,
पाणी सूखो करी गयो
बूँद-बूँद सी भरऽ घड़ा अवँ,
ये अंदाज पुराणा छे
भर्‌या घड़ा प घात लगी,
धीरज मटको झरी गयो
चल्यो भगीरथ लईकऽ गंगा,
अपणा घर का द्वारा प
जनता छे बेहाल कि
भोले शंकर बेबस डरी गयो
बिकऽ पाणी को मोल भला
अब इनकी औकात कल्याँ
जब से बढ्या भाव पाणी का,
नेता चिच्चऽ गिरी गयो
पाणी-पाणी होय लोग कवँ
घुळऽ मैळ पाणी मऽ
राम रहीम को नाम कसो,
दामन कऽ मैळो करी गयो।

•••

पावणाजी अपणा नेता छे

नानी बईण का भाग खुलीगा पावणा जी अपणा नेता छे
लोगनऽ की सेवा करज, जेका बदलऽ खाता-पेता छे
वो तो बड़ा दंदी-फंदी छे, उनकी तो कमई अंधी छे
उनका छे हजार मिलन्या दुस्मन, दुई-चार भाई बंदी छे
याहेण जरा बोलती चालती छे, याईजी जसा नर्सिंघ मेहता छे ।।
पावणाजी आपणा....

पुलिस सी तो साठगाँठ छे, अफसरनऽ सी बंदरबाँट छे
बड़ा-बड़ा मंतरीनऽ का भी, उनका लेण खुल्ला कपाट छे
दुई-चारनऽ का पाँय पड़ी लेज, न लाखों से सलामी लेता छे ।।
पावणाजी आपणा....

भाई अपणी-आपणी बारऽ छे, तीन-तेरा न नौ-अठारा छे
अपणोज खाणु न अपणोज पेरनु पावणा जी की तो पौ-बारा छे
धेला भर की रोकटोक नी, रात-दिन अँगरेजी पेता छे ।।
पावणाजी आपणा....

गरीब की कुटिया बँधाड़ज ऊ, न स्कूल की पंगत रँधाड़ज ऊ
भण्या तो हाँई दुई किताब नी, पण भणेल की नौकरी लगाड़ज ऊ
उप्पर निच्च लेण-देण म, सबई सी कमीसन लेता छे ।।
पावणाजी आपणा....

सरकार बदलने पर

आँवऽ उनका राज नी रया मंतरी सब आई गया नया
दुस्मननऽ का दाँव लगी गा अपणा भी अवँ अपणा नी रया
ओका पोर्या पारी एल्हा करी रयाज म्हारी नानी का घणा फजीता छे ।।
पावणाजी आपणा....

- शरदचन्द्र त्रिवेदी

●●●

मत निकळ तू घर सी यार

मत निकळ तू घर सी यार
मिलता नी आवँ खाँधा चार
जहेर हवा म घुळयो रे प्यारा
थोड़ा दिन रव्ह न्यारा-न्यारा
मुँडा प मुस्को भीड़ सी दूरी
समझी ल सबकी मजबूरी
करी ल तू जीवन सी प्यार
मत निकळ तू घर सी यार

फैली दुनिया म असी बीमारी
खुटी रई सुविधा सरकारी
हवा दवा को टोटो हुईगो
पैसा की छे मारा-मारी
आवँ तो धापी गई सरकार
मत निकळ तू घर सी यार

झाड़-फूँक को बस नी चलतो
दवा-दारू सी खतरो नी टळतो
अस्पताल म बठ्या लुटेरा
अपणा सी परिवार नी पळतो
घर बठी राम नाम उच्चार
मत निकळ तू घर सी यार

- शरदचन्द्र त्रिवेदी

एकता कश्मीरे
जन्म : 27 नवंबर, 1982
शिक्षा : बी.एससी.(बायो.), पीजीडीसीए, डी.एन.एच.ई,
लेखन : तर्क संग्रह, साहित्य तरकश, विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्म/वेब-सीरीज़, स्टोरी मिरर आदि पर लेखन, पेपरविफ निमाड़ी एंबेसेडर 2019
संप्रति : स्वतंत्र लेखन, इंदौर (म.प्र.)
मोबा. : 9960773746

माय तू हळद की गाँठ

माय तू हळद की गाँठ सरी की।
दुख-दरद की दवा छे तू।
माय तू हींग की म्हयक सी,
म्हारी जिनगी को सवाद छे तू।
कदी लगऽ तू लीम सरी की,
कदी सहेद सरी मिट्ठी छे तू।
कदी लगऽ तू मिरी सरी की,
गुस्सा मऽ जवँ खीजज तू।
माय तू काची-पाकी कैरी,
खाटो-मिट्ठो सवाद छे तू।
कदी लगऽ तू गउर सरी की,
दपड़ावऽ निजी वात नी तू।
माय तू सौंदारऽ की चहा सरी की
म्हारी लत, रफत, जरवत छे तू।

•••

बागी गुलाब

उना गंज बड़ा बँगळा का बाह्यरऽ वाड़ा म लगेल गुलाब का फूलनऽ म वातचीत चली रह्यी थी। एतरा म बड़ी सेठाणी ख देखीनऽ अजाण्या गुलाब नऽ पत्तानऽ का पाछऽ दपड़ीनऽ कयो, 'ई माय तो मंदिर जाणऽ वाटऽ हमखऽ तोड़नऽ आईज रे, हमखऽ नी जाणू।' एतरा म एक स्याणो गुलाब अगेड़ी आई गयो अनऽ माय नऽ ओखऽ तोड़ी लियो।

'हुँह.... ई तो डोकरो हुई गो थो। एखऽ तो सरग की जरवत भी थी।' कळनईनऽ-नऽ कयो।

एतरा म घरधणि को बड़ो छोरो वाड़ा तरफ आयो। ओखऽ देखीनऽ गुलाब-होण खोब खुस हुई गया, कि मोठाभाई हमखऽ तोड़ीनऽ लई जायगा अनऽ बड़ी लाड़ी-भाभी का जूड़ा म सजावऽगा। आखिर खुस होणऽ वाळई वात तो थी। एक बड़ी लाड़ी-भाभीज तो थी, जी वाड़ा का गुलाब का झाड़नऽ मऽ खाद-पाणी करती थी, अनऽ खोब प्यार सी उनखऽ पोम्हाळती थी। बड़ा भैया नऽ एक गुलाब तोड्यो न ऊ चली गया।

थोड़ी देर मऽ छोटा भाई आवता देखाण्या।

स्याणा गुलाब नऽ कयो - 'हमखऽ तो इनका सात नी जाणू... छोटा भइया लाड़ी-भाभी ख धोको दई रह्याज। ऊ कथईं मंदिर या भाभी का लेणऽ फूल नी तोड़ता, ऊ तो जूली का लेणऽ लइ जाई रह्याज, जी इनखऽ अपणा तिरिया चरित म फसई रह्यीज। ई तो गलत छे। वा तो माँड्यो घर मोड़ी देगा।'

पण कळईनऽ उचकी रह्याई थीं कि छोटा भैया उनखऽ तोड़ी ले। हुयो भी असोज। उननऽ आठ दस कळईनऽ तोड़ी, एक गुलदस्तो बणायो न निकळई गया। पण उनी कळईनऽ मऽ काटा वाळो एक गुलाब भी थो, जेनऽ कसम खाई थी कि ऊ असो होणऽ नी देणऽ को। जसोज़ छोटा भैया नऽ जूली ख उनो गुलदस्तो दईनऽ परेम को राग आलाप्यो, उ तमतमायल गुलाब अपणो खेल खेली गयो। घड़ी भरी मऽ जूली का हाथ सी खून का लाल छींटा, छोटा भाई का गाल पऽ छपई गया।

-एकता कश्मीरे

दाजी की खीज

'काका अरु काई हालचाल, सब बेस छे की ?'

'काँय को बेस रे भाई ! जिवणो हराम हुई गयोज, थारी काकी अनऽ छोरा-वयड़ीनऽ नऽ नाक म दम करी दियोज। खेत म सी आवाँज तो सुतकाळ्यानऽ सरी को न्हवाड़ज, वन्हानऽ ख भी भिंजाड़ज। तवँ जाईनऽ पाणी पेणऽ ख देज। चहा भी फीकी-पच्च बणावज।

नात्या नऽ हाथ धवण्यो साबू को पाणी लाईनऽ धरी दियोज। आज नातणी नऽ हाथ म दारू सरि-को गँधाएल पाणी दियो न कयो कि हातनऽ खऽ रगड़ी लेओ। अवँ हातनऽ सी तो आज तक तमाखू रगड़ीज।

बजार जाऊँ तो छोरो कैज कि, 'मुँडा पऽ मास्क पेरीनऽ जाओ भाईजी।' अरु तो अरु पटवारी जी का य्हाँ काम सी गयो तो उन्नऽ भी पयलऽ हात धवाड्या, फिरी काग़ज पत्तर देख्या। म्हारी जोड़ को चम्प्यो दाजी, रूखड्यो काको न रुपसिंग भाई भी अवँ वड़ का निच्चऽ वटला प, नी आवता हईं। अनऽ तू पूछी रह्योज कि काई हाल छे !

म्हाराज साळूभाई का य्हाँ याव थो, ओका य्हाँ भी नी गयो, बईण का ससरा ख, पोयचावणऽ भी नी जाणऽ दियो, अरु काई हाल बताऊँ रे तुखऽ।

'काई कराँ काका, बीमारीज असी आई गईज। जिंदा रह्यणुज तो, ई सब तो करनुज पड़से।

कथईं बाह्यरऽ जाओ तो मास्क पेरी नऽ जाओ। बाह्यरऽ सी आओ तो, आईनऽ हात धवणु। रिकामा फिरनु-हिंडनु नी लोगनऽ सी दूर सी राम राम करनू। ईनी वातनऽ को ध्यान राखोगा तो अच्छो रह्यगा।'

'हाव रे नाना ! अवँ ध्यान राखूँगा इनी वातनऽ को। चल अवँ घर जाऊँ, थारी काकी रस्तो देखी रह्यी होयगा।'

- एकता कश्मीरे

ब्रजेश बड़ोले
जन्म : 23 अक्टूबर, 1962
कृति : 'पापा जूठ बोलते हैं' (कविता संग्रह)
लेखन : देशभर की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में व्यंग्य रचनाएँ एवं कविताएँ प्रकाशित/आकाशवाणी दूरदर्शन से रचनाओं का प्रसारण।
सम्प्रति : अध्यापक, खरगौन (म.प्र.)
मोबा. : 9977072864

जतरा कबीरा

मानो तो या जिनगी छे जतरा कबीरा,
नई तो फिर लफड़ा भी सतरा कबीरा।

लाड़ी खऽ खुस कसो राखणु ऊ बतावऽ,
करेल जेका चार-चार नातरा कबीरा।

सासू बिना न्हाएल चउका मऽ नी जाय,
वउ का किचन मऽ बठऽ कुतरा कबीरा।

ऊ छे नेता परखणु ओखऽ घणो कठण,
अपणा हित सारू बदलऽ पैतरा कबीरा।

माल्या, मेहुल, नीरव की चौकसी करी नी,
जप्तीवाळा होरी का उखाड़ऽ, पतरा कबीरा।

राजनीति गजब दुकान सिंगारऽ अनऽ छोलऽ,
हाथ मऽ सबका छे पजाएल उस्तरा कबीरा।

नद्दी खऽ चलो करीनऽ चली गया तारणहार,
अवँ तूज बता पार कसा, उतराँ कबीरा।

•••

आड़ी तिरछी वाट कबीरा

आड़ी तिरछी वाट कबीरा,
जिनगी घणी कचाट कबीरा।

छोरो लायो डनपल गद्दो,
बाप की टूटी खाट कबीरा।

सासू करऽ ज्हाँ गोबर पूँजो,
वउ खऽ आवऽ, उछाट कबीरा।

परेम नद्दी मऽ डुबण्यो तरी गयो,
कई गयो खुसरो सई साट कबीरा।

कोई नी लायो अमर को पट्टो,
जिनगी दो दिन को हाट कबीरा।

सोन चिड़ी थो देस रे म्हारो,
लगी गई केकी नाट कबीरा।

ई बुरा दिन भी इति जासे रे,
डरीनऽ तू मत न्हाट कबीरा।

पंच अवँ परमेसर नी रह्या
पीनऽ करज, कुर्राट कबीरा।

सरपंच बण्यो ढाबा पऽ खाणु,
पयलऽ खाता था घाट कबीरा।

यो नेपो पंचाती क्यों कराँ आस,
हम खुल्ला नी धराँ कपाट कबीरा।

- ब्रजेश बड़ोले

•••

कागज पऽ उभई गई रे

वा तो ओकी फटाफट कई गई रे,
म्हारी तो म्हारा मनमऽज रही गई रे।

पहाड़ जसी काटी मनऽ जिनगी,
ऊ तो सब निसाणीनऽ भी लई गई रे।

ओनऽ तो भुलाड़ी दियो होयगऽ मखऽ,
पण वा तो म्हारा मन सी नी गई रे।

ओका बगैर जिनगी लगी कड़वी जहेर,
बजेस या सई मऽज पेवइ गई रे।

रड़तऽ-रड़तऽ सुणइ अपणी रड़कथा,
धार डोळानऽ की सुखइ गई रे।

ओकी याद मऽ लिखेल पोथीनऽ सारी,
आयो पूर खोदरो सब वई गई रे।

परगाँव को रँगी गयो ओखऽ बजेस,
थारी रंग की पुड़ी खीचा मऽ रही गई रे।

मन मऽ उकळी रही थी वातनऽ ओकी,
जाफ़ा उकळीनऽ कागज पऽ उभइ गई रे।

- ब्रजेश बड़ोले

•••

किरण केशरे
जन्म : 16 अक्टूबर, 1965
शिक्षा : बी.एससी.
विधा : कहानी, कविता, लघुकथा, फुटकर लेख।
पत्र पत्रिकाओं के अलावा शब्दबोध, हिंदी प्रतिलिपि, 'लघुकथा शोध केन्द्र' आदि पटल पर उपस्थिति।
सम्प्रति : गौरीधाम कालोनी, खरगोन (म.प्र.)
मोबा. : 6260870610

लघुकथा

सासरऽ की मूँदी

मुनीम रामपरसाद जी कपड़ा की दुकान सी आईनऽ अभी सुस्ताया भी नी था कि उनकी बयरो बिमला नऽ, उनका हाथ म किराणा का समान की लिस्ट थमई दी। उनकऽ चाय पाणी तक को भी नी पूछ्यो। उनका माथा पऽ गयरी चिंता की रेखानऽ देखाणऽ लगी गई। तीन बाळक नऽ बीमार डोकरी माय का संगात मुनीमगिरि मऽ उनको गुजारो बड़ी मुस्किल सी हुई रयो थो। पिछला महिना किराणा वाळा नऽ उधारी म समान देणऽ सी मना करी दियो थो, कि जवँ तक पयलऽ का पैसा की उधारी नी चुकऽगऽ, तवँ तक ऊ किराणा को समान उनकऽ नी देगऽ। मुनीम जी सोची रया था, हे भगवान्! अवँ फिरी सी उधारी!

अईं बिमला, किराणा की लिस्ट मऽ समान जोड़ती जाई रई थी। रामपरसाद जी नऽ, एक हाथ म थैलीनऽ, उठई, दूसरा म लिस्ट पकड़ी अनऽ घर सी निकळई गया। आज रामपरसाद जी कऽ अपणा हाथ की अँगळई म पेरेल सासरऽ की मूँदी गड़नऽ लगी।

असाड़ी को पाणी

आयो रे आयो असाड़ी को पाणी आयो

वाजी गाजी नऽ आया असाड़ी का वादळा
हवा चली चरई तरफ
दिन म अँधारो छायो
गरज्यो बरस्यो टुटीनऽ झम झम पाणी आयो

किरसाण हरसाया
मन म उठी आस इना वरस खुलगऽ
हमरा सुता भाग
काकड़ी भुट्टा लायो पाणी बाबो आयो
चिरिया की फराक
जग्गू की साइकिल लछमी को कन्दोरो
अनऽ दाजी को चस्मो
माय को लुगड़ो
खेत म मोटर
सोची सोची नऽ, मन म्हारो हरसायो
आयो रे आयो असाड़ी को पाणी आयो

बैल्या जोड़ी लईनऽ चल्या किरसाण करनऽ खेत म वावणी
काँदा-रोटी की पोटळई
बाँधीनऽ साथ म लायो
आयो रे आयो असाड़ी को पाणी आयो।

-किरण केशरे

•••

साँपळई भी मरी गई, अनऽ लाकड़ी भी नी टूटी

'आज घणा दिन बाद आई ओ, सकुंतला बईंण। छोरा का याव का बाद अवँ फुसरत मिली तुमखऽ'! कयति कयति कुसुम साड़ी का पल्लो सी हाथ पोयूचती बायरऽ आईनऽ अँगणा म बठी गई। 'सकुंतला भर्राएल गळा सी बोली, काई बताऊँ ओ बईंण तुखऽ, बेटा का याव को कँव सी रस्तो देखी रई थी, कि रुनझुण करती नानी वउ आवऽगऽ न म्हारा सुख का दिन साथ लावऽगऽ', पण अवँ तुखऽ काई बताऊँ, उ म्हारा सी न बोले, न चाले, ओखऽ तो उना, काई कयज, मरिगा मोबाइल सी नी फुसरत मिलती हईं।' पयलऽ तो मखऽ छोरा कीज रोटी पाणी बणावणु पड़तो थो, पण अवँ दुईनऽ की रोटी थेपणु पड़ज।' कुसुम सब वात समझी गई। वा भी तो भुकतेल थी ई सब। ओकी वउ खऽ भी तो सब काम-धाम आवऽ, पण ऊ मोबाइल ओका हाथी सी नी छुटऽ! सब तरा से उन्न भी कोसिस करी देखी। कुसुम नऽ सकुंतला खऽ राज की वात बताई, 'कि देख बईंण हाऊँ तो रोज सुबे आठ बजे वउ ख मंदिर जाणऽ को कइनऽ घर से चली जाऊँ, कि तुमारी सुख सांति का लेण हाऊँ वरत न पूजापाठ करी रइज। असो कहिनऽ हउँ तो मंदिर म जाईनऽ बठी जाऊँ।' अवँ वउ तो खूब खुसी होए, कि चलो आजादी मिळी। आराम सी सोईनऽ उठऽ, चाय-पाणी पे, अनऽ मोबाइल लई कर पछि बठी जाए। जवँ धणी न छोटा बाळकनऽ खऽ भूक लगऽ तो मन मारीनऽ ओखऽ सबका लेणऽ स्याक-रोटा राँदनुज पड़ऽ, चौका म सी निकळऽ, तो कपड़ा बासण भी देखाय। दोई टेम घर को वसुन्दो भी निकाळनु पड़ऽ। असो करतऽ-करतऽ घर को सारो काम ओका माथऽ आई गयो। अवँ ठाँय फुसरत नी मिलती बापड़ी खऽ, मोबाइल चलावण की। अवँ घर म सुख-सांति छे, साँपळई भी मरी गई, न लाकड़ी भी नी टूटी। कयतऽ-कयतऽ विजयी भाव सी कुसुम सकुंतला खऽ देखण लगी! गउर की वात सुणीनऽ सकुंतला का डोळानऽ म भी चमक आई गई।

-किरण केशरे

विभा भटोरे
जन्म : 12 दिसम्बर, 1967 (सेंधवा)
लेखन विधा : लघुकथा, आलेख (हिंदी/निमाड़ी)
पटल : साझा संकलन, शब्द-समिधा, अथर्व-गीतांजलि
सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन, परस्पर नगर, इन्दौर (म.प्र.)
मोबा. : 9425734263

संक्रमण की आग

लाड़ीबाई नऽ गमला म तुळसी लगाई,
मानो मनी-प्लांट की वाट लगाई,
नाना-भाई की वाल्याँग सवारी आई
माय नऽ मिट्ठी फटकार लगाई -
'जवँ इनका कोट की उधड़ी सिलाई,
तवँ इनखऽ जनवई की सुद आई,
हिंदी की टोपी माथा पर राखजो,
अंग्रेजी की आग म घी मत नाखजो,
सुते बठे को यो रोग बळ्यो,
अंग्रेजी जसो यो तो खूब फळ्यो
कोरोना की तम जरा हेर राखजो,
बिना काम का अईं-वईं मत टापजो,
ई बईणनऽ नऽ काळजी करी,
ते मनऽ एकज वात मन म धरी,
इनी माटी को मान तुम धरजो रे,
इना कोरोना नऽ तो अपणी जात बतई,
पण तुम्हारी अक्कल काँ मारी गई ?
इना सुते-बठे का रोग ख टाळो रे,
संक्रमण की आग ख अक्काड़ी सी बाळो रे' ।

•••

उपाय

वास्तु सास्तर का
जाणकार दादाजी सी
उनको पोत्यो – 'दादाजी
इना नवा घर म खोबज
लड़ई-झगड़ा अनऽ
दरोज की माथापच्ची
चल्या करज । आप म्हारी
समस्या को कईं निवारण
तो बताओ । दादाजी –
बेटा ! एकज उपाय छे,
संका-निवारण ।'

•••

ममता कानूनगो
शिक्षा : एम.ए. विशारद (शास्त्रीय गायन)
विधा : लघुकथा, कहानी, कविता, गीत, गज़ल
प्रकाशन : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, संकलनों में उपस्थिति
सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन, इन्दौर (म.प्र.)
मोबा. : 9111214342

अहिंसा दिवस

मालूम छे बापू कूण आय !
महात्मा क्यों कवाएज !
काई कर्यो थो असो कि हर नोट पऽ छपी जाएज !
जाणोज कि सत अहिंसा काई कवाएज !
अपणा देस मऽ रहेज कि विदेसी माल आय !
स्वतंत्रता का लेणऽ बापू इनखऽ लाया था
अवँ तो बस दिवसनऽ मऽज देखाएज,
बापू हमरा पितरु बणी गयाज।
साल म दुई-तीन दिन पुजाएज
बाकी तो फोटूनऽ म सुवाएज।
सत अहिंसा जीवन म उतारनू होए तो
जुलुम सी लड़नऽ को बीड़ो उठावणू पड़से,
मोहनदास सी बापू बणनू पड़से।

•••

प्रफात फेरी

प्रभात फेरी म झाँझ-मजीरा का साथ भजन गावता हुया माय-दाजी जवँ सौंदारा सी आलाप लेता तो म्हारी नींद खुली जाती। पयलऽ तो लगतो कि काई ई लोग भी सुब्ब सी...! पण फिरि, हऊँ भी कभी-कभार उठीनऽ, थोड़ो ध्यान, योग-प्राणायाम करनऽ लगी। पतोज नी चल्यो कि कवँ, मखऽ भी एकी आदत पड़ी गई।

केत्ती भी बारिस होय, ठंड पड़ऽ, कई भी हुई जाय, पण प्रभात फेरी म माय-दाजीनऽ को नेम कदी नी टूट्यो। उनका संगात हऊँ भी कवँ नेम-धरम म बँधी गई, पतोज नी चल्यो।

एक दिन म्हारी नींद खुली, पण प्रभात फेरी वाळा नी आया मखऽ भोत अचरज हुयो कि असो काई हुयो होयगा! पूरा दिन म्हारा कान म भजन-संगीत, जयकारा गूँजता रह्या। हऊँ सोचणऽ लगी कि पयलऽ तो मखऽ बड़ी-फ़जर की ई आवाजनऽ केत्ती बुरी लगती थी, पण अवँऽ तो जसी एका बिना हऊँ रही नी सकती। पूरा छव दिन बाद टोळी आई, तो हऊँ खुद ख रोकी नी पाई। झट बायर आईनऽ देख्यो, प्रभाती गावणऽ वाळानऽ की फेरी चली आई रही थी। हऊँ भी उनका संगात चलनऽ लगी।

अवँ रोज प्रभात फेरी मऽ जाउँज, ई सोचीनऽ कि हुई सकज, म्हारा जसा अरु भी लोग होयगा जिनखऽ नींद सी जगाड़णऽ की जरवत पड़ऽगा।

- ममता कानूनगो

लाली

'क्यों ओ लाली ! काल क्यों नी आई ?' सीमा ने झपटते हुए, कामवाली बाई से पूछा। 'नईं आवणु थो तो टेम पऽ खबर करती ! मालूम छे ! थारा कारण काल केतरी पची हऊँ।' 'काई बताऊँ मेम साब, काल म्हारो आदमी दिन भरी घरऽज म थो। पीया कर्यो न लड़्या कर्यो। ' 'बस-बस चल, अब काम कर' सीमा बोली।

कुछ देर बाद - 'लाली तूनऽ कईं खायो ! बाळकनऽ ख दियो कि बस धणि सी लड़ीकर न मार खाईकर पेट भरी लियो।' लाली सिसकते हुए, 'मेडमजी ! काई करूँ मरद आय म्हारो, बाप आय बच्चानऽ को। न कईं बणायो, न खायो।' सीमा पीठ पर हाथ फेरते हुए बोली – छोड़ क्यों नहीं देती उसे। लाली ने कहा – अवँऽ क्यों छोडूँ ! ओखज नी मजा चखाऊँ !

रोने वाली लाली, पल्लू के पीछे जोर से हँसने लगी। सीमा सोच रही थी, आसुँओं की ओट में खुशी को छिपाना, कोई इनसे सीखे।

-ममता कानूनगो

लोक-मैत्रेय

पचेली-खंड

रचना-क्रम

1.	**डॉ. कौशल दुबे** पचेल और पचेली	41-42
2.	**विजय बागरी** चिट्ठी जिट्टू भाई की	43
3.	**नारायण प्रसाद तिवारी** दोहे/सावन गीत/छोटे सो किरबा	44-46
4.	**राजकुमार महोबिया** पचेली नव-गीत	47
5.	**बीरेंद्र हल्दकार** पचेली कहानी	48
6.	**प्रमोद दाहिया** जय पचेल जय पचेंली/गोरुआ	49-51
7.	**के.एल. हल्दकार** कोदों नींदैं चोर	52
8.	**अखिलेश खरे 'अखिल'** पचेली गीत	53
9.	**चौधरी आशा निर्मल जैन** लोक की सांस्कृतिक विरासत	54
10.	**प्रियंका मिश्रा** या जीवन अनमोल	55

पचेल और पचेली

- डॉ. कौशल दुबे
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग
श्री जानकीरमण महाविद्यालय, जबलपुर

मध्यप्रदेश के दो महानगरों जबलपुर और कटनी के बीच का क्षेत्र ही पचेल नाम से लोकजीवन में अभीहित होता आया है। यह क्षेत्र विंध्याचल पर्वतमाला की शाखा भितरीगढ़ की पहाड़ियों केरूप में जाना जाता है यहीं पर केंचुआ नाम की पहाड़ियों के बीच भारत का भौगोलिक केन्द्र करौंदी स्थित है जिसके पहचान चिह्न के रूप में चार सिंह चारों दिशाओं को देखते हुए मूर्तिमान हैं। यहीं पर महहिर्ष महेश योगी द्वारा स्थापित वैदिकविश्व विद्यालय भी है। यह परिचय इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि इसी स्थल से पश्चिम दिशा की ओर संकेत करके हम कह सकते हैं कि इस तरफ शौरसेनी अपभ्रंश से उद्भूत पश्चिमी हिंदी की शाखा बुंदेली का क्षेत्र है और पूर्व की ओर इंगित करते हुए कह सकते हैं कि यह अर्द्धमागधी अपभ्रंश की शाखा पूर्वी हिंदी क्षेत्र है। यहीं से दक्षिण दिशा की ओर अर्द्धमागधी की एक और शाखा छत्तीसगढ़ी की उपशाखा गोंडी की ओर इंगित किया जा सकता है। वस्तुत: पचेल के पूर्व में बघेली, पश्चिम में बुंदेली और दक्षिण में गोंडी रियासतों के प्रभाव से यहाँ का लोक स्वर स्थानीय बोलियों और कुछ अरबी फारसी शब्दों के पंचमेल से पँचमेली खिचड़ी जैसे भाषायी स्वाद जैसा है। पंचमेल खिचड़ी के इस परिपाक में जिन तत्त्वों ने योगदान किया उनमें, सामाजिक संबंध, भौगोलिक स्थिति, राजनीतिक प्रभाव और परम्परागत सांस्कृतिक चेतना को प्रमुख माना जा सकता है। पश्चिम दिशा में विवाह संबंध होने से संपर्क बढ़ते रहे और धीरे-धीरे बुंदेली का स्वाद बढ़ता रहा। पूर्व में विवाह संबंध होने और आवागमन बढ़ने से बघेली के भाषायी तत्त्व मिलते गए। छोटी-बड़ी अनेक गोंडी रियासतों जैसे भँड़रा, पचेलगढ़, खँदवारा , खलरी, भनपुरा, दिमापुर आदि के प्रभाव से गोंडी शब्द भी खिचड़ी का हिस्सा बने।

दो सम्पर्क भाषाओं के संक्रमण से ऐसी बोलियाँ हिंदी में और भी हैं पर पचेली का अपना विशेष स्थान है। जैसे, प्रथम - यह भारत के केन्द्र की बोली है और सब जानते हैं, केन्द्र एक ही हो सकता है। द्वितीय - यह बुंदेली, बघेली और गोंडी की

तीन गोल आकृतियों के बीच का और स्पर्श का क्षेत्र है। तृतीय - यह पूर्वी हिंदी और पश्चिमी हिंदी के विभाजक क्षेत्र की मातृभाषा है। चतुर्थ - इससे भौगोलिक दशा और भाषा के विकास का उदाहरण सुस्पष्ट होता है क्योंकि जिस तरह पूर्वी और पश्चिमी हिंदी की दिशाएँ अलग-थलग हैं उसी तरह पचेल में होने वाली बरसात का जल भी निवार, कटकहरी, मौरी, बेलकुंड, सिलपरा, हिरन आदि के माध्यम से पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर तक पहुँचाया जाता है। यह भाषा और भूगोल केतादात्म्य का सुंदर उदाहरण है।

'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इंडिया' नामक पुस्तक में प्रसिद्ध अँग्रेज विद्वान जार्ज ग्रियर्सन ने तीन शब्दों में बुंदेली, पचेली, बघेली का अंतर बताकर कटनी-जबलपुर के बीच की खिचड़ी भाषा का संकेत दिया है।

बुंदेली - चलो गओ
बघेली- चला गा
पचेली- चलो गा
यहां पर पचेली में बुंदेली का
'चलो'
और बघेली का
'गा'
लेकर
'चलो गा' का गठन इंगित है।

जार्ज ग्रियर्सन के बाद देश के भाषाविदों ने पचेली के सीमित क्षेत्र को अनदेखा करते हुए उसे उसके हाल पर जो छोड़ दिया था अब उसकी अस्मिता के स्पष्ट और दृढ़ स्वर गूँज उठे हैं।

जबलपुर (म.प्र.)
मो. 9926445391

विजय बागरी 'विजय'
जन्म: 01 मई, 1956
शिक्षा: स्नातकोत्तर (हिंदी) मुख्य विधा : गीत।
कृतियाँ : मैं दरिया-सा बहता पानी/ प्राची की मुस्कान/मैंने तुमको व्याकुल पाया/ओझल रहे उजाले/रश्मियों के सारथी।
तीन कृतियों का संपादन/32 समवेत संग्रहों में उपस्थिति।
संप्रति: कछार गाँव, कटनी - मोबा. : 9669251319

चिट्ठी जिट्ठू भाई की

मुतके दिन में आई लहुरे,
चिट्ठी जिट्ठू भाई की।
खैर खबर पूछिन हैं बड़कुर,
सबकी राम भलाई की ।।

पुरा परोसी, गाँव-गमइयाँ,
ताल-तलाईं कैसन हैं।
ट्वाला खोरें पौनी परजा,
लोग-लुगाईं कैसन हैं ।।

चिठिया में पूछिन हैं पहुना,
पाही आबाजाई की।
मुतकेदिन में ।।

मंदिर मढ़िया देव दिबाले,
खितबा, हार-पहारन के।
सुरती से पूछिन हैं बड्डे,
हालचाल मौहारन के ।।

बिसरी नहीं उन्हीं लरकन की,
मस्ती छुपी छुपाई की।
मुतकेदिन में ।।

तीजा पामन फाग दिबारी,
राखी और जबारिन की।
नदिया नरबा चौमासन की,
पनघट की पनिहारिन की ।।

ढुरबा ढांगर छीर चरोखर,
और बरेदी भाई की।
मुतकेदिन में ।।

टानक-टउआ, पार-मिड़ोखा,
गाँसो, म्वांघा-पुलिया की।
रचनी-फरका, नकना-छ्यांड़ा,
डीहा, बारी-कुलिया की ।।

खरही-दाँय, उन्हारी-स्यारी,
कूता, बनी-कटाई की।
मुतकेदिन में ।।

नारायण प्रसाद तिवारी
जन्म : 30 मई, 1970
शिक्षा : एम.एससी. एम.ए., बी.एड.
विधा : हिंदी, पचेली, बुंदेली कविता, दोहे, मुक्त छंद, व्यंग्य
सम्प्रति : सिहोरा, जबलपुर (म.प्र.)
मोबा. : 9589157701

दोहे

झुलिया लादे पीठ मा, हो घुल्लन की दौड़।
जो हारे रोवा पड़े, खुरमा, बतिया छोड़॥

बैया तो पढ़बे करै, बब्बू बागे जाय।
बैया बन गई डाक्टर, बब्बू ढोर चराय॥

टुरिया द्याखे बीस ठो, एको इन्हीं न सुहाय।
उमर भरै रडुआ रहें, कभू न ब्याहे जाय॥

सामू तो पूजा करें, पाछे गारी दैय।
ऐसन से बचके रहै, कभू न सग्गे होय॥

हैलमेट गाड़ी धरे, मास्क फँसाए जेब।
समझें ज्ञानी आप खें, खुद से करें फरेब॥

मास्क पहर मुँह नाक में, दो गज दूरी नाप।
बेर, बेर हाथो धुबै, खुदै बचावें आप॥

मंदिर मज्जिद बिसर गए, बिसरे सबरे नात।
घरघुस्सू सब हो गए, बिसरे सबरे ठाठ॥

सावन गीत

बदरा बरसो न जम के हमाए अंगना
भीगबे बैठे है हम तो पिया संग ना।

कोयलिया बहुतई कुहकत है
मोरो जिया भी अब बहकत है।
पहन लए है हमने हरीरे कंगना
बदरा बरसो न जम के हमाए अंगना।

मिदरा तो है टर टर बोले,
झींगुर भी अब कान है फोड़े
रंग जाए पिया भी हमाए रंग ना
बदरा बरसो न जम केहमाए अंगना

घुमड़ घुमड़ के तुम निकरत हों
देख खें हम खें काहे गरजत हो
बूँदें बन के लग जाओ हमाए अंग ना
बदरा बरसों न जम के हमाए अंगना

चल चल के तुम थक गए हुइहो
गिरबे से जनहित कर जइहो
काहे अच्छो लगे तुम्हें ऐसे टंगना
बदरा बरसो न जमके हमाए अंगना।

बोके फसल किसान है बैठे,
रह रह केतुमखें है देखे
आ भी जाओ करो अब हमें तंग ना
बदरा बरसों न जम के हमाए अंगना
भीगबे बैठे है हम तो पिया संग ना

- नारायण प्रसाद तिवारी

●●●

छोटो सो किरबा

एक छोटो सो किरबा,दुनिया खें हिला दैस,
विज्ञान की प्रगति खें, ठेंगा दिखा दैस।
लड़त रही दुनिया चाँद, मंगल के लाने,
बिसरा के सब कछू घर में बिठा दैस
एकछोटो सो किरबा, दुनिया खें हिला दैस।

जो देश होत रहे फूल के कुप्पा,
सबरन के घमंड खें,मिट्टी में मिला दैस
लगे रहे है दिन,रात प्रकृति खें निपोरें में
जल,वायु,ध्वनि परदूषण में रोक लगा दैस
एक छोटो सो किरबा, दुनिया खें हिला दैस

फुरसत न हती जिन्ही काम के मारे
सबरन खें बऊ,दद्दा के निघा बिठा दैस
सबैहार करत रहे, हिन्दू, ईसाई, मुसल्लन का बतखाव
बिसरा के सब कछू, इंसान बना दैस
एक छोटो सो किरबा, दुनिया खें हिला दैस।

पार्टियां जुटी तीं खुरसी की उठापटक खें
मिला के उन्हीं, देशहित में लगा दैस
न्यारे हो हो बैठे ते परदेश में बब्बू
मिनटो में सबरन खें,घर में बुला लैस
एक छोटो सो किरबा, दुनिया खें हिला दैस

जो लिखो नई कभू, चार ठो लाइन
वा 'नारायण' खें कवि बना दैस।
एक छोटो सो किरबा, दुनिया खें हिला दैस।

- नारायण प्रसाद तिवारी

●●●

राजकुमार महोबिया
जन्म : 02 नवंबर, 1972
शिक्षा : स्नातकोत्तर (हिंदी, अंग्रेजी साहित्य) बी.एड.
विधा : गीत-नवगीत, दोहे, बाल नाटक
सम्प्रति : उच्च श्रेणी शिक्षक, विकटगंज, उमरिया, (म. प्र.)
मोबा. : 7974851844

पचेली नवगीत

रचे ओंठ मुस्कानी लाली,
अम्मा नाचै छम्म।
दुइ-दुइ ठे बजबैया बैठे,
बाजे ठुमुक नगरिया।
नाचे उँगली सूत बँधी जस,
अम्मा कठ पुतरिया।
दाँत दबाए उँगली द्याखें
मंसेरुआ सब गम्म....

घर मा ब्याह रचो छोटका का ,
नाचे ताल मिलाबै।
उलटी-पुलटी चकरी घूमै,
रहि-रहि हाथ उठाबै।
कौनो धुन मा बजै नगरिया
उही ता एकै दम्म.....

दए महाउर फटही एड़ी,
गोदना पाँव गुदे।
राई तेल चहरा चहभोके
करिया कुट्ट दिखे।
घूँघट काढ़ी झाँकै जैसे
नाग बिला से बम्म....

छोटका लड़का के दैजा का,
सगले गाँव बताय।
सुनै कोउ न, स्वाचै मन मा,
कैसन देय सुनाय।
कोउ से इ्वाँकै खूब, कोउ से,
मन मा खाय गम्म ....

कछनीदार छीट की धुतिया,
पहिने सान बघारै।
घुसो पेट, गूदी के नीचे,
दट्ठे गाँठी मारै।
काज सुफल हो, सब देउतन के,
गिरै व ग्वाड़न धम्म.....

पहुना-पही भरे घर मा पै,
ओसे कोउ न ब्वालै।
मन की ताकत बँधी गठरिया,
कौले, कैसन ख्वालै ॥
रहिके सब के बीच सकी ना
रही अभागन रम्म....
रचे ओंठ मुस्कानी लाली,
अम्मा नाचै छम्म। ...

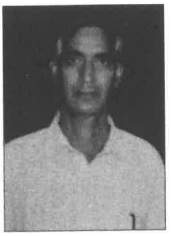

बीरेन्द्र हल्दकार
जन्म : 14 अक्टूबर, 1960
सम्प्रति : सहायक शिक्षक, ग्राम अतर सूमा सिलौंड़ी
जिला कटनी (म.प्र.)
मोबा. : 9753090097

पचेली कहानी

एक स्यान आदमी रहै, उखा नाम सुक्खू रहै। उखा रम्मू नाम का नाती रहै।

एक दिन..... नाती दादा से कहै, किस्सा देवो सुनाय ।
कहा न मांनू आपका, सीधे दैंव बताय॥

दादाजी सोच में पर गये, कि किसा नहीं सुनाता तो नाती मेरा कहना नहीं मानेगा, सोचिन..... दादा की नाती सुनै, और सुनै न कोय।
सोच समझ कहने लगे, किसा सुनाऊँ तोय॥

एक किसान रहै, उखा नाम रहै भरोसे । बिचारो सीधो-साधो बहुत मिहिनती। गर्मी के मौसम में वा फूट-कलींदर (तरबूज-खरबूज) अपने खेत में लगाए तै। कुछ दिन बाद फूट-कलींदर फरे,ता नाश हुय जाय एक लिड़ैया लहट गओ। वा फूट-कलींदर का बहुत म्याहन करे तै। बिचारा भरोसे एक उपाय सोचिस...

जहाँ से लिड़ैया खितबा में घुसै,कचर-कचर खाय औ जब अफर जाय, तब बड़ी शान से ऐंढ़त- मुर्रत छ्यांडा से निकर के भग जाय। दूसर दिन उतई पै भरोसे एक तरफ एक अच्छा सो डंडा बगल में रख के मरे अस का बहाना बनाय के लेट गा। सोचिस जैसय लिड़ैया घुसैं खैं अई,वैसय डंडा की मार मारिहों।

तनक देर में लिड़ैया आओ, भरोसे खैं मरो-डरो देख के खुश हो गओ। जीभ में पानी आ गओ कि आज तो ताजो मांस खाँय खैं मिली और फिर फूट-कलींदर की मजै मजा। लेकिन जानवरन में लिड़ैया सबसे चतुर-चालाक हो थै। वा बदमाश लिड़ैया आसपास देखिस,गाँव की आहट लैस और कहा थै.....

दंत निपोरन सुख मरण, नगर न रोबै कोय।
डेढ़ हाथ का या डंडा, मोर मूंड़ में होय॥
हुआ हुआ हुआ.....हुआत भाग।

बिचारा भरोसे उदास हो के उठो और खेत में काम करैं चलो गा। किसा गई बढ़ाय।

प्रमोद दाहिया
जम्म : 22 जून, 1969
शिक्षा : एम ए., बी.टी.आई.
विधा : हिंदी/पचेली/बुंदेली में कविता, गीत
संप्रति : शिक्षक, प्रतापपुर,सिहोरा, जबलपुर (म.प्र.)
मोबा. : 7509535092

गोरुआ

गोरुअन कै हाल अब कहे नहीं जावैं,
गली गली ठाढ़े भूखे रंभावैं,

मनखे गैया भैंसी बैला भी पालें,
इक दुई नहीं वे तो दस नग सम्हालें,
हरिरी अमावस खें खिरका बधावैं ,
गली गली ठाढ़े भूखे रंभावैं ।।

पहिले फसल की करें हाँथ से कटाई,
दांव चले कई दिना होत जब गहाई,
भूसा मिल जाए उड़ावनी करावें,
गली गली ठाढ़े भूखे रंभावैं ।।

फसल की कटैया मशीन जब से आई,
मुरकई मुरका काटै डरी नरबाई,
नहीं मिले भूसा गोरू का खावें,
गली गली ठाढ़े भूखे रंभावैं ।।

मनखे अब गोरुन खें जंगल में छवाड़े,
कल्लू धौरी औ मैनी से मुंह म्वाड़े,
घर के टुरबा अब दूध खें ललावैं,
गली गली ठाढ़े भूखे रंभावैं ।।

घर घर में पूज रहे आपन गउ मैया,
गैयन का चरवैया यशुदा का छैया,
'प्रमोद' गउ मैया भौ पार लगावैं,
गली गली ठाढ़े भूखे रंभावैं ।।

जय पचेली जय पचेल

बब्बू बैया मिलके गाबा, गाथा या पचमेल की,
मध्यप्रदेश मा नीक लागै, बातें करी पचेल की,,
जय पचेली जय पचेल, जय पचेली जय पचेल।

सूध साध रहऊ थीं मनखे, मिल तिउहार मनाउ थीं,
इक दूसर से भेद नहीं कछु, सुखदुख मा सब जाउ थीं,,
फाग दिबारी राही भगतें, मिलजुल के सब गाउ थीं ,
महुआ मलगा बाँस लकड़ियाँ, जंगल से लै आउ थीं,
भटबा खोद बना लए खितबा, याद न बँगरा डेल की।
मध्यप्रदेश मा नीक लागै, बातें करी पचेल की ॥
जय पचेली जय पचेल, जय पचेली जय पचेल...

कुण्डम के तलबा से निकरी, हिरन नदी की धार है ,
बेलकुण्ड और दतला दतली, पानी रेत बहार है,
छोटे छोटे नरबा मिलके, भए जीवन आधार हैं,
शुद्ध हवा देऊथीं विरबा, पिरकति का उपहार है,,
दाहिने तट नहर से आईं , माँ नर्मदा के मेल की।
मध्यप्रदेश मा नीक लागै, बातें करी पचेल की ॥
जय पचेली जय पचेल, जय पचेली जय पचेल...

गोसलपुर और सैलबारा, भरभरा पावन नाम है,
लोढ़ा पहाड़ तपोभूमि है, इतै पै सिद्धन धाम है,,
महदेइ माँ दशरमन बारी, तुमहीं करत प्रनाम है,
ईश्वर अल्ला एक इतै पै, सीता राम सलाम है,,
बीरासन में नाचें भौहा, और पंडन के खेल की।
मध्यप्रदेश मा नीक लागै, बातें करी पचेल की ॥
जय पचेली जय पचेल, जय पचेली जय पचेल...

प्रतापपुर, घुघरी, दुबयारा, आयरन की खदान है,
सरमन सागर ग्राम सरौली, मझगवाँ कि पहिचान है,,
पान उमरिया, ढीमरखेड़ा, ग्राम करौंदी शान है ,
खलरी महगवां बाँध तिलमन, सिहोरा तो सम्मान है,,
सिहोरा, डुंडी स्लिमनाबाद से, मिलै सवारी रेल की।
मध्यप्रदेश मा नीक लागै, बातें करी पचेल की॥
जय पचेली जय पचेल, जय पचेली जय पचेल...

खिचरहाइ मा सतधारा खें, मेला देखन आउ थीं ,
दूर दूर से बैपारी आ, उतै दुकान लगाउ थीं,
पगला कुत्ता जिही भी चाबै, मनखे नुंजी जाउ थीं,
ठाकुर साहिब की बखरी मा, आ कुत्ता झरबाउ थीं,,
साँचू बतखाव 'प्रमोद' करें, न समझा अर्रापेल की।
मध्यप्रदेश मा नीक लागे, बातें करी पचेल की॥
जय पचेली जय पचेल, जय पचेली जय पचेल...

-प्रमोद दाहिया

●●●

डॉ. के.एल. हल्दकार
जन्म : 15 अगस्त, 1955
शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी.
संप्रति : छपरा, स्लीमनाबाद कटनी (म. प्र.)
मोबा.: 9752455069

किसमत मारै जोर, कोदों नींदैं चोर

एक गरीब किसान हतो। बरसात मां काढ़-ब्येढ़ के कुदवा बै लैस। बरखा अच्छी भई। कुदवा गगननाय के तय्यार भओ। उमें चारा भी रहै। अब एखी निंदाई कस के होय ?

किसान मड़ैया मां बैठे-बैठे सोच रओ तै कि तबई तीन-चार झनी दौरत-भगत आए औ बैठ के कुदवा नींदैं लगे।

किसान कछु समझ पातै कि दो सिपाही छ्यांड़ा खोल के मड़ैया ढिंग पहुँच गय। कहिन-'दादा इतै कौनो चोर-ओर तो नईं आये आयँ ?'

किसान का दिमाक झट्टै काम करिस; कहिस कि – 'नईं हजूर, नईं आय आयँ। सुनके सिपाही लौटैं लगे। ता किसान कहिस – 'अरो हुजुर तनुक बैठ ल्या। चिलम-तमाखू पी ल्या।'

सिपाही सोचिन या ठीकै आ कहै थै। बैठ के सुस्तायँ लगे। इतै चौरन की जान पै बन पर आई। मन मां स्वाचौं लगे – 'या बुढ़वा बिना निंदाई कराये ना मानी। ता झट्टै-झट्टै नींदैं लगे। जब कुदवा फिरी मां निंद गए, ता किसान कहिस – 'जा तुम्हारी छुट्टी !' येई आ कहा थीं।

'किसमत मारै जोर, कोदों नींदैं चोर'

अखिलेश खरे 'अखिल'
जन्म : 30 जून 1971
शिक्षा : स्नातकोत्तर
संप्रति : कछारगांव बड़ा, ढीमरखेड़ा कटनी (म.प्र.)
मोबा. : 09752863369

पचेली गीत

जलर-बलर चौमासे छानी छवाई
मंगरो चुचुआबै भाई ।।

छाइन खपरा देशी बारे ।
कौनो लाले कौनो कारे
घरियाँ औंधा खूब सँघारे ।

छूलन क जुनहन से ठाठ की बँधाई
मंगरो चुचुआबै भाई ।

मलगा ,बँसबा छिन्ना- भिन्ना
रातै भींज गए सब हुन्ना ।
गीले हुइगे खेट सुथन्ना ।

टपकन के मार रात निंदिया न आई
मंगरो चुचुआबै भाई ।

कच्ची भितिया पिलरी जाबै ।
नदिया पिछवाड़े अर्राबै ।
हप्तन सूरज नजर न आबै ।

खितबन म धानन की लगी है निंदाई ।
मंगरो चुचुआबै भाई ।

●●●

चौधरी आशा निर्मल जैन
शिक्षा : बी.ए.
विधा : कहानी, कविता, आलेख, संस्मरण तीन साझा संकलनों में उपस्थिति
चेयरपर्सन, अ. भा. दि. जैन महिला परिषद् (म.प्र.)
संप्रति : सिहोरा (म.प्र.)
मोबा. : 9754979899

लोक की सांस्कृतिक विरासत

लोकभाषाओं और लोक संस्कृति की विविधताओं से भरोपूरो हमाओ भारत देश, सदियन से ग्यानियन, जिज्ञासियन और घूमे फिरै वालेन का आकर्षित करत आओ है। देश के हृदय स्थल में बसो एक छोटा सो गाँव करौंदी जोन देश-विदेशन को परसिद्ध पर्यटन स्थल भी है।

स्वनाम-धन्य मध्य-परदेश के कटनी जिले में करौंदी गाँव, जोन विंध्याचल परवत के केंचुआ पहड़ियन की ढलान में बसो है।

या गाँव भौगोलिक दृष्टि से, भारत का केन्द्र बिन्दु स्थल कटनी मुख्यालय से 40 किलोमीटर की दूर बसो है। विश्व के अठारह और भारत के आठ राज्यों से गुजरन वाली कर्क रेखा येई करौंदी गाँव जा थी। येई क्षेत्र में, महरषि महेश योगी द्वारा स्थापित अंतर्राष्ट्रीय वैदिक विश्वविद्यालय एवं भावातीत ध्यान केन्द्र है जोन कि देश के अलावा लगभग 133 देशन से आएं वाले विद्यार्थियन और जिज्ञासुयन के लाने वेद विज्ञान दर्शन का केंद्र है।

जबलपुर संभाग के येई कटनी जिले की बोहरी बंद तहसील में बसो है प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धारमिक रूप से सजो भओ 'रूपनाथ धाम'। इतै ई. पू. तीसरी शताब्दी के ऐतिहासिक गोलाश्म शिलालेख, जोन कि पाली भाषा में उकेरे गए ते।

एसेइ और भी अशोक के अमिट शिलालेखन में या बात कि गवाही है कि भारतीय वैदिक दर्शन के प्रभाव से पाषाण केकरेजे में भी, प्रियदरशी कोमल मानव संवेदनाएँ जाग सका थीं। कलिंग युद्ध की विभीषिका के बाद, मौर्य राजवंश के महान सम्राट अशोक का बौद्ध धरम अपनाब य बात को ज्वलंत उदाहरण भओ है।

प्रियंका मिश्रा
जन्म : 9 मार्च, 1995
शिक्षा : एम.एससी. (गणित)
विधा : दोहा, मुक्तक, गज़ल,
पत्रिकाओं, संकलनों, काव्य मंचों पर उपस्थिति
संप्रति : विजयराघवगढ़, कटनी (म.प्र.)

या जीवन अनमोल

बादर पानी आपदा, खर्रा कभूं तुसार।
छलनी हृदय किसान का, किससे करे गुहार॥

देख फसल की दुर्दशा, टपके अँसुआ नीर।
चिंता, मचली, दीनता, धाव करै गंभीर॥

फसल भई बरबाद जब, छोंडो सबने साथ।
भओ अन्नदाता बिबश, बबुआ भए अनाथ॥

मुँह ताकत खितबा खड़े, अब लड़कन की राह।
चकाचौंध अब गाँव में, लेने लगी पनाह॥

राजा हो या रंकहो, सब माटी के मोल।
आखिर में सोचैं सबै, या जीवन अनमोल॥

बोलियों से भाषा की ओर...

अपने युग का दस्तावेजी करण साहित्य की मूलभूत भावनाओं में से एक है। साहित्य का रूप चाहे कोई भी हो किंतु मनुष्य की रागात्मक वृत्ति उसके सृजन का हेतु बनती है। समाज की लोक सापेक्ष विभिन्न मनोदशाओं का चित्रण, कागज के पन्नों पर लोकोन्मुखी साहित्य के रूप में अवतरित हो जाता है । लोक-मैत्रेय विभिन्न रचनाकारों के समकालीन संवेदनात्मक अनुभूतियों का दस्तावेज है, जिसमें रचनाकारों ने गद्य एवं पद्य की विधाओं में अपनी संवेदनाओ की अनुभूतियों को सहेजा है। लोक- मैत्रेय की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि, इसमें बोलियों का साहित्य उभरकर सामने आया है। दुनिया की कोई भी भाषा अपनी बोलियों के बिना अधूरी ही रह जाती है। हिंदी की विभिन्न बोलियों की रचनाओं के माध्यम से हिदी की सेवा का यह प्रयास कितना सफल हो सका है, इसका मूल्यांकन सुधी पाठकों और आलोचकों द्वारा किया जा सकेगा।

सुषमा सिंह कर्चुली
अध्यक्ष
स्व सेवा संयोजन समिति सिहोरा, जबलपुरर (म.प्र.)

लोक-मैत्रेय

बघेली-खंड

रचना-क्रम

1.	**डॉ. रामगरीब पाण्डेय 'विकल'**	
	बघेली बोली के आँचलिक रूप	59-60
2.	**डॉ. अरुणा पाठक 'आभा'**	
	प्राकृतिक सौंदर्य केर	61-62
3.	**डॉ. आरती तिवारी**	
	बघेली गज़ल/एक साथ संदेश/निभाय डरी	63-65
4.	**सुषमा सिंह कर्चुली**	
	सुक्ख-दुक्ख/पीतर देउ	66-67
5.	**किरण सिंह 'शिल्पी'**	
	तलाबन औ मंदिरन के	68-69
6.	**विनीता सिंह**	
	कजरी	70
7.	**शिवपाल तिवारी**	
	बघेली गज़ल	71
8.	**डॉ. रजनीश कुमार पांडेय 'ओजस्वी'**	
	आपन-आपन सुबिधा	72
9.	**सरोज सिंह 'सूरज'**	
	लगा चउमास हबै	73
10.	**राजकुमार शर्मा 'राज'**	
	सोन के चिरैया	74
11.	**रामसखा नामदेव**	
	गज़ल	75
12.	**अजीत प्रताप सिंह**	
	कइसन जियै किसान	76
13.	**भूपधर द्विवेदी 'अलबेला'**	
	दोहे	77
14.	**रामलखन सिंह बाघेल 'महगना'**	
	विंध्य की पहचान	78

बघेली बोली के आँचलिक रूप

- डॉ. रामगरीब पाण्डेय 'विकल'
वरिष्ठ साहित्यकार

अर्धमागधी से निकली तीनों बोलियाँ अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी एक ही कुल की होने के कारण ही भाषा विदों ने बघेली को स्वतंत्र बोली न मानते हुए इसे दक्षिणी अवधी का ही एक रूप माना। कालान्तर में बघेली के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार भी किया। इसके कारणों पर विचार करने पर हम पाते हैं कि बघेली अंचल की बोली 'गोंडी' थी। तेरहवीं शताब्दी के बाद बघेल शासन के विस्तार के क्रम में राजकीय कामकाज के निष्पादन हेतु पड़ोसी अवधी क्षेत्र से विभिन्न वर्गों के शिक्षित लोगों को बुलाकर यहाँ बसाया गया। उनके साथ अवधी बोली और संस्कृति भी आयी। इस अंचल में आने पर अवधी पर गोंडी के प्रभाव से बोली का जो नया स्वरूप तैयार हुआ वह बघेली कहलाया। अलग-अलग अंचलों में इस संक्रमण के प्रभाव के अनुपात में ही बघेली के अनेक रूपों का उद्घाटन होता है, जिन्हें हम इस प्रकार समझ सकते हैं।

1. **केंद्रीय बघेली** – रीवा जिले के उत्तरी छोर पर कटरा तक इसका क्षेत्र है। पूर्व में मऊगंज, सीधी जिले के कुबरी तक, दक्षिण में मड़वास-मझौली तक तथा पश्चिमी में टमस नदी के पूर्व का क्षेत्र केंद्रीय बघेली का क्षेत्र माना जा सकता है।

2. **तिरहारी** – बाँदा, हमीरपुर और फतेहपुर के इलाके में यमुना नदी के दक्षिण किनारे-किनारे या तीर की बोली तिरहारी है।

3. **जूड़र** – बाँदा जिले में केन और बागैं नदियों के बीच जूड़र क्षेत्र में 'जूड़र/जुड़ार' बोली जाती है। जिसके खटोला, कुण्ड्रा, बगरावल जैसे स्थानीय रूप भी हैं।

4. **गहोरा** – इसके अन्तर्गत समूचा चित्रकूट जिला शामिल है। 'पाठा/पठही' और 'अँतरपाठा' इसके दो स्थानीय रूपों का उल्लेख भी पाया जाता है।

5. **सतना जिले की बघेली** – रामपुर बघेलान से ही बघेली का एक दूसरा स्वरूप मिलने लगता है। यहाँ रीवा की केंद्रीय बघेली के ऊपर 'गहोरा' का प्रभाव दिखने लगता है।

6. **पचेली** – बघेली का यह 'पचेली' रूप मुख्यतः बघेली, बुंदेली और गोंडी का सम्मिश्रण है। क्षेत्र परिवर्तन के साथ-साथ इन तीनों बोलियों के घनत्व में परिवर्तन देखने को मिलता है। 'भाषा की दृष्टि से जबलपुर एक भाषा-भाषी जिला है। यहाँ नब्बे प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते हैं, पूर्वी हिन्दी की अवधि तथा बघेली संपूर्ण भूखंड में बोली जाती है।

7. **गोंडानी या गोंडी बघेली** – गोंडानी या गोंडी बघेली का भौगोलिक क्षेत्र दक्षिण में बालाघाट और छिंदवाड़ा जिले के साथ मण्डला और डिंडौरी जिले को कहा जा सकता है। बालाघाट और छिंदवाड़ा की गोंडी बघेली पर मराठी का प्रभाव भी देखने को मिलता है, जबकि मण्डला और डिंडौरी की बोली गोंडी युक्त बघेली है। अपने विशेष उच्चारण स्वभाव के कारण ही इसे मण्डलाही नाम से भी भाषा वैज्ञानिकों ने उल्लेखित किया है।

8. **शहडोल जिले की बघेली** – प्राचीन शहडोल जिला (शहडोल, अनुपपूर और उमरिया) में, अनुपपूर जिले में दक्षिण की ओर गोंडी का प्रभाव अधिक है। शहडोल जिले में ब्योहारी और उसके पूर्व का क्षेत्र गोंडी और केंद्रीय बघेली का संधि स्थल कहा जा सकता है। उमरिया की गोंडी मिश्रित बघेली के पश्चिमी छोर पर पचेली का प्रभाव भी देखने को मिलता है।

9. **पूर्वी या पुरबही बघेली** – रीवा जिले की हनुमना तहसील, सीधी जिले में बहरी, सिहावल और सिंगरौली जिले के समूचे क्षेत्र में बघेली बोली का यह स्वरूप मिलता है। सीमावर्ती उत्तर प्रदेश के सोनभद्र एवं मिर्जापुर के दक्षिणी-पश्चिमी क्षेत्र में बघेली का यह स्वरूप देखा जा सकता है। पुरबही बघेली पर अवधी और भोजपुरी दोनों का न्यूनाधिक प्रभाव देखने को मिलता है।

10. **अवधी प्रभावित बघेली** – रीवा जिले में कटरा के बाद सोहानी, चाक, त्योंथर, जबा, कसौटा आदि स्थानों में जैसे-जैसे उत्तर दिशा की ओर बढ़ते हैं, बघेली पर अवधी का उतना ही अधिक प्रभाव देखने को मिलता है।

इस प्रकार रूप परिवर्तन के साथ बघेली का क्षेत्र यमुना तट से दक्षिण तट से दक्षिण बालाघाट तक और मिर्जापुर से पन्ना जिले तक व्याप्त है। यह हमारे लिए यह गर्व का विषय है।

नैढ़िया, सीधी (म.प्र.)
मो. 9479825152

डॉ. अरुणा पाठक 'आभा'
जन्म : 10 जून, (जबलपुर)
शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), MSW, LLB, Ph.D.
साझा : 'कलम के संग कोरोना से जग'
संप्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर, रीवा (म.प्र.)

प्राकृतिक सौंदर्य केर धरती

प्रकृति केर गोद म विंध्य परबत औ रेवा के अंचल म बसा मध्य भारत केर भू-भाग बघेलखण्ड पुरातन काल से सघन बन-पहारन के खातिर परसिद्ध रहा है। पुरानन म वरणित दंडक वन केर उत्तरी हिस्सा बघेल राजि के आधीन भये के कारन बघेलखण्ड कहाबा। इहाँ के पहार एक कइत कठिन जन-जीवन के गवाही देता हैं त नदी, झरना, कूँड़ा-जलप्रपात इहाँ जनजीवन केर सहजता औ सरलता के झाँकी देखाबत हैं। इहै प्राकृतिक सम्पदा हमरे बघेलखण्ड केर विसेसता औ अनमोल धरोहर है।

इस्कंधपुरान म रेवा नदी केर तट पर फइला इया क्षेत्र रेवाखण्ड के नाम से परसिद्ध रहा। कालांतर म इहै रीमा फेर रीवा कहाबा। उत्तर म प्रयागराज त दक्षिण म महाकौशल अउर छत्तीसगढ़ केर सीमा तक एकर विसतार है त पूरब म उत्तर परदेस अउर पच्छिम म बुंदेलखण्ड के पन्ना केर सीमा है। एके भौगौलिक छेत्र म पहिचान के खातिर विंध्य परबत के कैमोर अउर केहेंजुआ केर परबत श्रेणी औ सतपुड़ा केर मैकल परबत माला आपन अलग महत्तु राखत हैं । भारतीय सभ्यता के प्राचीनतम चित्रकारी, सिलालेखन के अवसेस अजुऔ इहाँ के घाटिन औ गुफा म मिलता हैं।

बघेलखण्ड के धरती म खनिजन केर भंडार, बिसाल वनसम्पदा राजस्व के बड़े स्रोत हैं।

एक कइत सेंगरउली जिला केर कोयला खदान अउर सफेद बाघ के खातिर मुकुंदपुर टाइगर सफारी दुनिया भर म परसिद्ध है, त दूसरे कइत पांडव गुफा, धारकूंड़ी, चित्रकूट , रामबन, जइसी जगह केर अपने आप म विसेस महत्तु हैं।

बघेलखण्ड केर जीवनरेखा सोन नदी अमरकंटक से निकरि के पूरे बघेलखण्ड के जीबन रेखा बनी उत्तर परदेस से होत बिहार म गंगा से जाइ मिलति है। इहै सोन नदी पर बने बहुउद्देश्यीय बाँणसागर बाँध से उत्तर परदेश औ बिहार केर सिचाईं व्यवस्था औ जल विद्युत परियोजनन म मध्य परदेश के आत्म निरभरता म बड़ी भूमिका निभाय रहा है। अमरकंटक से नरमदा नदी के उद्गम है, जउने पर कपिलधारा म 31 मीटर, दूधधारा म 15 मीटर ऊँचाई के मनोरम जलप्रपात हैं। एके अलावा बीहर नदी म चचाई जलप्रपात 130 मीटर, महाना नदी पर 130 मीटर क्योंटी फाल, औ टमस नदी पर पुरवा फाल केर ऊँचाई 67 मीटर है। टमस केर सहायक नदी सेलर म बहुती जलप्रपात के ऊँचाई 198 मीटर है।

सबै बन ,परबत, नदी अऔ ओंह पर बनै बाले जलप्रपात बघेलखण्ड केर प्राकृतिक सौंदर्य का सजाबत सम्हारत हैं। एहिन प्राकृतिक सौन्दर्य से हमरे बघेल खण्ड केर अलग पहिचान बनति है, जेंह पर हमका गर्व है।

डॉ. आरती तिवारी
जन्म : 05 फरवरी, 1980
शिक्षा : M Sc, Ph D., B Ed, BJM
विधा : काव्य (हिंदी, बघेली)
उद्घोषिका/गायिका/समाचार वाचिका, आकाशवाणी।
संप्रति : सहा. प्राध्या., मॉडल साइंस कॉलेज, रीवा (म.प्र.)

बघेली ग़ज़ल

बिसरि गएन हम दाना पानी, बोली बानी बिसरि गएन
जब ते ऊँ आँखिन मा आएँ, चूनर धानी बिसरि गएन

सुधि आबै ना कामचिन्त कुछु, मूडे पर है घाम चढ़ा
ठाड़ हमै सब.. गइया बछिया, भूसा सानी बिसरि गएन

चउमासे मा टपटप अँसुआ, आँखिन ते बहितै रहिगें
को देखै अब घर के चुअना, छप्पर छानी बिसरि गएन

पहिले सब से मिलत रहेन हम, सबसे दुआ सलाम रहा
जब ते उनसे भेंट होइ गई, दादी नानी बिसरि गएन

प्रीति रही दुखदाई हमका, चित्त कहौ न थिरान रहै
चुल्हबा ठंडा, छूछ कँसहड़ी दूध मथानी बिसरि गएन

•••

एक साथ संदेश

विंध्य धरा की पावन माटी, महके सारा देश रे
शांति अहिंसा और क्रांति का एकसाथ संदेश रे.

उत्तर में यमुना की लहरें, पूरब में संगम का धाम.
दक्षिण में हैं मातु नर्मदा, सारा भारत करे प्रणाम.
खजुराहो है पश्चिम में.. चंदेल काल अवशेष रे..
शांति अहिंसा और क्रांति.....

इसी धरा पर तानसेन की तान सदा परवान चढ़ी
बाणभट्ट की तप:स्थली उस युग की अनमोल कड़ी
अकबर के युग से जिंदा हैं.. रहे बीरबल शेष रे.
शांति अहिंसा और क्रांति.....

ठा. रणमत और पदमधर की अलबेली शान है.
शम्भूनाथ शुकुल में बसती विन्ध्यदेश की आन रे..
जिसने जन जन को दे डाले.. शिक्षा के उपदेश रे..
शांति अहिंसा और क्रांति.....

श्वेत शेर की इस धरती पर रनमत जैसा वीर है
इस धरती के हर चप्पे में बैठा संत बबीर है.
गुढ़ की विद्युत उर्जा से अब जगमग होगा देश रे...
शांति अहिंसा और क्रांति.....

- डॉ. आरती तिवारी

•••

निभाय डारी

या कोरोना के फइली महामारी
सखि दूरदूर रहि के निभाय डारी

जबभर कोरोना के हउआ है बगरा
घर म रहा कोउ बईबे न निकरा
अपने घरहिन से कामधाम कइ डारी
सखि दूरदूर रहि के निभाय डारी...

डाक्टर फँसिगें पुलिस वाले फँसिगें
अफसर हाकिम समाजसेवी फँसिगें
अरे आबय कहौ न हमार बारी
सखि दूरदूर रहि के निभाय डारी...

कोऊ कहै तबौ नियरे न आबा
भीड़भाड़ देखा त दूरी क धाबा
ई कोरोना हबै अतिया चारी
सखि दूरदूर रहि के निभाय डारी...

साबुन से हाथ बारबार सखि धोबा
फँसि जो जाए तो आपा न खोबा
हेल्पलाईन मा फोनबा घुमाय डारी
सखि दूरदूर रहि के निभाय डारी...

- डॉ. आरती तिवारी

•••

सुषमा सिंह कर्चुली
जन्म : 02 जनवरी 1969
शिक्षा : एम ए (हिंदी साहित्य/अर्थशास्त्र),, बी. एड.
रुचि : साहित्य एवं समाज सेवा
अध्यक्ष, स्व सेवा संयोजन समिति
सम्प्रति: सिहोरा, जबलपुर (म. प्र.)
मोबा. : 8889254695

सुक्ख-दुक्ख

जीबन केर पचासि बसंत देखि चुकी केतकी सबकेरि सुभकामना अपने आँचर म समेटि राति के सोवयं खातिर बिस्तरा म पहुड़ त गईं पइ आँखिन से नींद नदारद।एँह पचासि बरिस म का खोएन का पाएन इहय सोचत-सोचत राति बीत गइ। कुछ सुक्ख त कुछु दुक्ख। अबय तकसासु-ससुर,ननद-देबर-देउरानी अउर ओनहिन के लड़िका बिटियन केर तोरा तहाई अपने दूनउ लड़िकन केनाई किहिन। जे जउन चाहिन सबका पुजाइन पइ केहू का संतोस नहीं भ। एहीं सब बातन केर सुधि अउतय केतकी केर करेजा म हूकि अस उचि आई पइ दूसरेन छन सुक्ख के सुधि अउतइ दुःख कपूर केनाइ उड़िगा।

सनीमा केर गीत केतकी के मानस म गूँजि उचा.....

सुख-दुःख जीवन में आते और जाते हैं,
दुःख पहले आए तो घबराना कैसा....

करवट बदलत-बदलत भिनसार होय लाग पूरुब कइत कुहिरा के छंटतय सुरुज नारायण भगवान आकाश म आपन लालिमा बिखेरत उदित होय लागें। केतकी बिसतरा छाँड़ि उचि बइठीं। दूनउ हाथन से आँचर पसारि परनाम कइ अपने रोज्जि के काम चिंत म लगि गईं।

पीतर देउ

पाँचि बरिस केर सिवा बड़ी देर से दुआरे म खड़ा परोसे के मिश्राइन काकी का डेहरी म माटी डारत देख के पूँछि बइठा- काकी अपना ऐंठे माटी काहे डारित हंय। काल से पीतर देउता अइहीं ओनका एहिनठे बैठाउब, काकी बताइन। सिवा आपन बालबुद्धि लगाय फेरि पूँछिन - काहे काकी पीतर देउता मंदिरे मा न बइठहिं। काकी सिवा केरी बाति सुनिके हंसि दीहिन।

अरे नहीं बइकलउ मंदिरे के देउता अउर पीतर देउता म फरक होत है , जे मरि जात हं ऊ पीतर देवता कहावत हं। ऊ एहीं पितर पख म 15 दिनेन खातिर धरती पर आवत हैं। सबका खूब आसीरबाद दइके चले जात हं। ओनका मंदिरे म नहीं बइठावा जात आय। एहीं से माटी डारित हयन।

सिवा पूछइयाँ त भ -का हमरउ मम्मा-दाऊ अइहिं ? पइ तब तक काकी अपने घरे कइत चली गइ, अउर सिवा अँजुरिन- अँजुरिन माटी अपने दुआरे के डेहरी म डारय लाग। ओके समझ म इहय बति आई कि हमरउ मम्मा दाऊ अइहीं त कहाँ बइठिहीं।

ओसरिया म बइठे परताप बब्बा काकी अउर सिवा केर बर-बतकहांव सुनत रहें ओनकर तरइना भरि आबा। दउड़ि के सिवा क करेजा से छुपकाइ लिहिन।

दुनउ हाँथ ऊपरि उठाये दइउ से विनती करय लागें।

हे ! परभु इया महामारी म हमार सिवा बिना बाप- महतारी के होइगा। ओका इया दुःख से उबारि लिहा।

-सुषमा सिंह कर्चुली

किरण सिंह 'शिल्पी'
जन्म : 19 अगस्त, 1965
शिक्षा : स्नातक, संगीत प्रभाकर
विधा : गद्य, पद्य, संगीत
कृतियाँ : एक किरण मुस्काई/सोन मछरी/तीन साझा संकलन
सम्प्रति: पांडव नगर, जिला-शहडोल (म. प्र.)

तलाबन औ मंदिरन के जिला : शहडोल

मध्यप्रदेस के बीचौबीच जंगल अउर प्राकृतिक सुंदरता समेटे सहडोल जिला बसा है। विंध्य प्रदेस के मध्य प्रदेस म मिले के बाद रीमा संभाग बनाबा ग रहा, जउने म रीमा, सहडोल, सतना, सीधी चारि जिला रहें । बाद म सहडोल, उमरिया अउर अनूपपुर तीन जिलन क मिलाय के सहडोल संभाग बनाय दीन ग । तीनों जिलन म जंगली इलाका है। इहाँ सबै जातिन के लोग बसे हैं, पै आदिवासिन के अ ाबादी जादा है । आदिबासिन के रहन-सहन, रीति-रिबाज औ संसकृति के झलक सगले संभाग म देखाय जाति है।

सुनै क मिलत है के सहडोल के नाम, कउनौ अहिर के नाम पर रखा ग रहा। त इहौ पसिद्ध है के इया पाण्डवन के समय के नगरी आय। एहिन से एही बिराट नगरी के नाम मिला है। इया बाति के पीछे इतिहास और पुरानन म जेतना लिखा है, ओखे अलावा यहाँ मंदिर औ तालाव एखर कहानी खुदै कहत हैं। एक तरह से देखा जाय त, सहडोल क जंगल प्रकृति से मिले हैं, त इहन के तलाव औ मंदिर एखर पहिचान बनि चुके हैं ।

पुरनिहन से सुनै क मिलत है के इहाँ तीन सौ पैसठि तलाव रहै। अब उनकर गिनती तीन सौ पैसठि रही के नहीं , पै आजौ के समय म इहाँ जघा जघा तलाव मौजूद हैं। बहुतेरे तलाव त अब नामै क रहि गै हैं। इया माना जाय सकत है के बहुतेरे तलाव बिकास के धारा म पटि गें होइ हैं औ अब उहाँ बस्ती बसि चुकीं हैं।

मंदिरन के बाति कीन जाय त सबसे पहिले अमरकंटक के नर्मदा मंदिर के गिनती होय चाही। संभाग बने के पहिले इया सहडोल जिला के हिस्सा रहा। सगले देस म अमरकंट के मान औ प्रतिस्ठा नर्मदा उद्गम, नर्मदा मंदिर और 'हिल इस्टेसन'

के कारन आजौ है। खास सहडोल म दसमी-गेरहमीं सताब्दी (कल्चुरी काल) म बना बिराट मंदिर सहडोल के पहिचान बना है। खजुराहो के मंदिरन के मेर के सुन्दर नक्कासीदार पथरन से बने एहँ मंदिर के लम्बाई 46 फुट चौड़ाई 34 फुट अउर ऊँचाई 77 फुट है, जउने के भितरे सिवलिंग थापना है। माना जात है के एहँ मंदिर के सिवलिंग म 'द्वादस ज्योतिर्लिंग' के तेज है। विराट मंदिर अब पुरातत्व विभाग के देखरेख म है।

बिराट मंदिर के नियरेन बाण-गंगा कुंड है, जहाँ माघ महीना म चद्दा जनवरी से अठारा जनवरी तक पाँच रोज के खिचरिहा मेला सालैं लागत है। लोगन के अ इसन मानिता है के अर्जुन बाण मारि के भुइयाँ से पानी के धारि निकारे रहै, अब बाणगगा के नाव से परसिद्ध है। एखर पानी कबौ सुखात नहीं आय। बाणगंगा कुण्ड के बगलै म राम मंदिर बना है।

सहडोल सहर के बाहेर दस किलोमीटर दूरी पर कंकाली मंदिर के इहाँ बड़ी मानिता है। एहँ मंदिर म माता कंकाली रूप म विराजमान हई। काले पाथर के बड़ी मूरति औ प्राकृतिक वातावरन कोहू के मन मोहि सकत है। पाली के विरासिनी मंदिर जउन पहले सहडोल जिला म रहा और अब उमरिया जिला म है, पूरे इलाका म बड़ा परसिद्ध है। जैतपुर के सिंघवाहिनी मंदिर और सिंघपुर के पचमठा मंदिर एहिन सूची म सामिल हैं। बुढ़ार के लो अरझुला गाँव से लगे पहारा म एक लाख गुफा होय के बाति कीन जाति है। पुरातत्व विभाग एखर पुस्टि कै चुका है। अनेकन गुफा अवहिनौ मौजूद हई। एहिन कारन इन्हीं लखबरिया गुफा कहा जात है।

इहै मेर के मंदिरन औ तलाबन के खातिर सहडोल जिला मध्य भारत के नक्सा म आपन अलग पहिचान बनाय चुका है। सहडोल क इतिहास औ प्रकृति केर जउन वरदान मिले है, उनके चलते हमहीं एहँ पर गर्व है।

विनीता सिंह परिहार
कार्य : शिक्षिका
विशेष : लोकगीत, गीत, कविता, गज़ल
सम्प्रति: सतना (म. प्र.)

कजरी

हरे रामा सावन है मनभावन
बदरिया छाई रे हारी
हरे रामा रिमझिम बरसे मेघ
चुनरिया भींगे रे हारी। हरे रामा ...

हरे रामा बाग सजी हरियाली रामा
हरे रामा बोलै कोयल काली रामा
हरे रामा बन में नाचै मोर
बदरिया छाई रे हारी
हरे रामा रिमझिम बरसे मेघ
चुनरिया भींगे रे हारी। हरे रामा ..

हरे रामा नदी ताल बौराए रामा
हरे रामा झींगुर गीत सुनाए रामा
हरे रामा दादुर कर रहा शोर
बदरिया छाई रे हारी
हरे रामा रिमझिम बरसे मेघ
चुनरिया भींगे रे हारी। हरे रामा ...

हरे रामा डाल में पड़ गए झूले रामा
हरे रामा कजरी सखियां खेलैं रामा
हरे रामा सावन गीत बाहर
बदरिया छाई रे हारी
हरे रामा रिमझिम बरसे मेघ
चुनरिया भींगे रे हारी।

शिवपाल तिवारी
जन्म : 27 जुलाई, 1977
शिक्षा : एम.एससी.
विधा : बघेली गीत, गज़ल, मुक्तक तथा कहानियाँ
सम्प्रति: शिक्षक

बघेली गज़ल

तुहिन हया सरदार बताबा कइसे मानी।
तोहरेन मथरे भार बताबा कइसे मानी ?

जब-जब गाढ़ परा हमहीं तुम पीठ देखाया।
हया बहुत चंहड़ार बताबा कइसे मानी

आज नहीं तौ काल्हि जरूरत तोंहरिउ बाढ़ी।
तब हमहूँ होब उदार बताबा कइसे मानी?

मूँदय तोपय खातिर तोंहरय मुँह झांकेन त।
बोया सबतर हार बताबा कइसे मानी ?

कोऊ जो आगे आबा कि हमिन करी अब।
त फोर्या तुहिन कपार बताबा कइसे मानी ?

भितरे कुछ अउ बहिरे कुछ जो कहि पाएन त ।
हमहिन झूठ लबार बताबा कइसे मानी ?

तोंहरे कस बस तुहिन नहीं केतनेउ बागत हंय।
तहिन दिखे करतार बताबा कइसे मानी ?

●●●

डॉ. रजनीश कुमार पाण्डेय 'ओजस्वी'
जन्म : 28 जून, 1981
शिक्षा : एम.एससी., पीएच.डी., डीसीजीसी
विधा : कविता, व्यंग्य व समसामयिक लेख
NCERT एवं मनोदर्पण परामर्शदाता
सम्प्रति: शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, रीवा (म.प्र.)
मोबा. : 9479647278

व्यंग्य

आपन-आपन सुबिधा

सबका चाही अपने मन के,
हँसतै एक खेलउना ,
एही खातिर मचा रहत है,
इहाँ-उहाँ ई रोना ।।
केहू लूटै-बेढ़ै चाहै,
खोलि खोलि इस्कूलि,
केहू दाम बढ़ै के कारन,
गें हाँ सगला भूलि ।
सबके आपन-आपन दुविधा,
सबके आपन सुविधा,
सबके आपन आपन करनी,
सबके है बइतरनी ।
सबकेउ अपने-अपने मन से,
लागें देस चलाबै,
कुरसी बइठि सिरे म सबके,
दुसरेव का भरमाबै,
अपने घर अउर अगल -बगल,
जे नहीं सुधारे पामैं,
पै मन म लउलितिया,
ओइन सगला देस चलामैं ।

दिल्ली म बइठै सब चाहैं,
आपन धउँस जमावैं,
देस के कउन हाल कइ डारिन,
कबौ समझि न पामैं ।
सबका चाही हीरा-मोती,
सबका चाही सोना,
ऊँच नीच और जाति-पाँति के,
मचा रहय ई रोना ।
सबका चाही अपने मन के,
हँसतै एक खेलउना ।
एही खातिर मचा रहत है,
इहाँ-उहाँ ई रोना ।।

सरोज सिंह 'सूरज'
शिक्षा : एम.ए. (हिंदगी साहित्य), एम.एड.
विधा : संगीत प्रभाकर
सम्प्रति: प्राचार्य, महाराणा प्रताप हाईस्कूल, नागौदा

लगा चउमास हबै

छाई है अजब बहार, लगा चउमास हबै।
दइउ बना चहँड़ार, लगा चउमास हबै।

उमड़ि-घुमड़ि बदरी घिरि आबै।
गरजि गरजि के ढोल बजाबै।
तड़कत बिजुरी जिउ डेरबाबै।
सुरुज के दरसन होइ न पाबै।
कबहूं करै अँधियार, लगा चउमास हबै।

आइ असाढ़ झमाझम बरसै।
देखि किसान के जियरा हरसै।
भुइयाँ के टठिया म परसै।
पपिहा बाउर अबहूं तरसै।
नदिया के बूड़ कछार, लगा चउमास हबै।

सामन भादौं साँझि सकारे।
लइ आयें तेउहार दुआरे।
झुंझि बगरि गै खेत बगारे।
काई हरिअर पंख पसारे।
छटिलि रहें गभुआर, लगा चउमास हबै।

राजकुमार शर्मा 'राज'
जन्म : 01 अप्रैल, 1964
शिक्षा : एम.एससी. एम.ए., आयुर्वेद रत्न
कृतियाँ : भिनसार, महतारी केरी ममता, अर्पण
सम्प्रति: धवैया, जिला रीवा (म.प्र.)

सोन के चिरैया पुनि देश मां बसाड़ दे

भेद भाव सब अपने मन से मिटाइ दे,
सोन के चिरैया, पुनि देश मां बसाइ दे।
नहीं कोऊ छोट बड़ा, सब भाई-भाई हइं,
नहीं कोऊ हिंदू मूस्लिम सिख अऊ इसाई हइं,
हम सब हइं भारतीय, सबका बताइ दे।
सोन के चिरैया, पुनि देश मां बसाइ दे।

देश के आजादी मां, लड़े सबइ साथ मां,
खून बहाइन सब जन, हांथ दिहिनि हांथ मां,
हर मेर के फूलन से, देश का सजाइ दे।
सोन के चिरैया, पुनि देश मां बसाइ दे।

जे नहीं आहीं पढ़ी लिखे, उनंखा पढ़ाइ दे,
हक्क गरीबन के, उनखा देवाइ दे,
गिरे हइं जे हांथ जकड़ि, उनखा उठाइ ले।
सोन के चिरैया, पुनि देश मां बसाइ दे।

जातिवाद, पूंजीवाद, उग्रवाद मिटाइ दे,
खून न बहावा तूं, सबका जिअइ खाइ दे,
शांति केर दुश्मन का, जड़ि से मिटाइ दे।
सोन के चिरैया, पुनि देश मां बसाइ दे।

जाति, धर्म भाषा रही, खान पान भेष रही,
हम सब जन तवइ रहव, जब हमार देश रही,
देशइ का ना अपने, बांटि-बांटि खाइ ले।
सोन के चिरैया, पुनि देश मां बसाइ दे।

●●●

रामसखा नामदेव
जन्म : 15 अगस्त, 1944
शिक्षा : एम.ए. (अर्थशास्त्र), बी.एड.
विधा : हिंदी एवं बघेली में लेखन
कृतियाँ : सूख नदी के पानी काहे (गजल संग्रह),
केसे कही (काव्य संग्रह)
सम्प्रति: आशीर्वाद कालोनी, शहडोल (म.प्र.)
मोबा : 9406736012

गज़ल

जीबन अउर मरन हय पानी।
हम सब केहीं मन हय पानी॥

कुछ नहीं आय बिना पानी के।
धरती केजीबन हय पानी॥

धरती केअंचरा म फइला।
हरियर जंगल बन हय पानी॥

कूदि परय जब चट्टानन से।
उज्जर रुई के कन हय पानी॥

टहटी केउपर चढि के इया।
लागत हय कंचन इया पानी॥

दुख के बदरी उमडि परय ता।
आँखी के सामन हय पानी॥

मेहनति म फिरि जाय त लागय।
जेठय केर तपन हय पानी॥

पानी पी पी जे गरियाबय।
ओखा ता अदहन है पानी॥

जिनखर पानी उतरि चुका हय।
बिन परान के तन हय पानी॥

नाक के ऊपर जब होय ता।
लागत हय गरहन इया पानी॥

बेसरमन का बूडय खातिर।
चुरुअव भर पोरसन हय पानी॥

●●●

अजीत प्रताप सिंह परिहार 'कुँवर'
जन्म : 10 जुलाई, 1960
शिक्षा : एम.एससी., बी.एड.
विधा : गीत, गज़ल, दोहा, मुक्तक
कृतियाँ : हमारा वतन (गीत संग्रह) / भाव कुसुम (दोहा संग्रह)
सम्प्रति: व्याख्याता, नागौदा सतना (म.प्र.)
मोबा : 8770140239

पाला पाथर बूड़ा झूरा, से किसान उबियान।
अइसन माहीं तुहिन बताबा, कइसन जियै किसान।

गिनि के रुपिया नगदलिहिन जे, खेती केर जमीन,
करजा लइके ख्यात जोताइन ,बोइन सोयाबीन।
सूखैं सोयाबीन मूँग अउ, सूखैं उरदा धान,
अइसन माहीं तुहिन बताबा, कइसन जियै किसान।

बहुत महंग हैं खाद बीज , भाड़ा अउ तेल मजूरी,
ठासा मा जे लिहिन ख्यात त, बोउब रहा जरूरी।
जिनकर परी उधारी कीन्हें , बइपारी उद्यान,
अइसन माहीं तुहिन बताबा, कइसन जियै किसान।

ब्याहैं का हँय लड़िका बिटियाँ, तार कहाँ से लागै,
द्याखै फसल किसान झूर जब, पानी दइव से मागै।
कइसन के करजा पट पाई , सांसत मा हैं प्रान,
अइसन माहीं तुहिन बताबा, कइसन जियै किसान।

नाउँ करैं का सासन कीन्हे, बीमा मिलइ न धेला,
उनहिन काहीं लाभ मिलत हय, जे साहब के चेला।
जब तक पेंसिन देई न सासन , होई ना कल्यान।
अइसन माहीं तुहिन बताबा, कइसन जियै किसान।

●●●

भूपधर द्विवेदी 'अलबेला'
जन्म : बसंत पंचमी, 1992
शिक्षा : बी.एससी., एम.ए. (हिंदी)
सम्प्रति: शिक्षक, जमुई कला, त्योंथर रीवा (म.प्र.)
मोबा : 7389127274

दोहे

घूर कताहुर बीनि के, डारा कूड़ादान।
साफ जबय तन मन रही, होई देश महान॥

कनइल के बारी लगय, फूलय निकहा फूल।
पय फर बिसहा होत हय, खाय न बबहूँ भूल॥

गरमी मा कंडा बिनै, दाई धरै उकाँव।
चउमासे तब चैन से, रोटी पोबय छाँव॥

कना खरी सब भँइसि का, रजऊ देंय खबाय।
पियरा झूर चबाय के, बरदा खरिका जाय॥

झारि पोंछि केबैल का, दिहिन कनेबा डार।
कोल्हू मा घानी परय, बहय तेल केधार॥

सुधि अबहूँ आबत हबय, उआ कनेमन तेल।
रोटी का चउपर्ति के, खात भगी मुड़पेल॥

ललिता, कनिगा, लोनगी, नहीं मिलँय अब धान।
सोनखर्ची तक के मिटा, निकबर इहाँ निशान॥

केतनी पापी होत हय, देखा भैया पेट।
कनिहा लाला का लिहे, काटय अम्मा खेत॥

अनसोहत सबका लगय, बेमतलब के राय।
कनकटिया के कान मा, झुमका नहीं सुहाय॥

•••

रामलखन सिंह बाघेल 'महगना'
जन्म : 14 जनवरी, 1967
मंचीय कवि
विधा : बघेली में हास्य
सम्प्रति: महगना, रीवा (म.प्र.)
मोबा : 9575766641

विन्ध्य की पहचान

बघेल खण्ड की सबसे निकही सुन्दर शुद्ध बघेली हय,
अपना पन्चे सबकेउ चीखी गुरतुल गुड़ कस भेली हय,
उत्तर अवधी ब्रज कइ बोली पच्छिम कइत बुंदेली हय,
छत्तीसगढ़ी दखिन कइ बोली बीच मा शुद्ध बघेली हय,
सफेद शेर कइ भुँइयाँ आपन दुनिया मा मसहूर हबय,
बन परबत अउ नदी तलइया फसलन से भरपूर हबय,
शोन नर्बदा जी के उदगम विन्ध्य धरय के माटी मा,
हबइ गजब कइ शीन देखि लेई चढि के छुहिया घाटी मा,
रीमा मा हँइ महामृत्युंजय सीधी कइत बढउरा नाथ,
बिरसिंहपुर मा गैबीनाथ जी गुढ माँ हँमइ कष्टहर नाथ,
सहडोल बिराट के नगरी माँ पांडव अज्ञात बिताइन तय,
अर्जुन पुत्र अभिमन्यु से उत्तरा के काज कराइन तय,
बिराटेश्वरी मन्दिर मा सबकेऊ पूजा करत हमाँ,
अमलईम कागज बनबथाँ धनपुरी माँ कोइला खनत हमा
बान्धवगढ परसिद्ध किला हय जहाँ जनाउर पालें हाँ,
हइ देखय खातिर जहाँ बिदेशी आपन डेरा डाले हाँ,
रीवा राजि बघेलन केहीं बघेलखंड सरनाम रहा,
हइ जहाँ बघेली बोली बानी के सुन्दर स्थान रहा,
बाँणभट्ट अउ तानसेन जी बीरउबल जहँ करिन बोकइयाँ,
इहय बघेली माटिम जन्में गमकि रही हय आजुअउ भुइयाँ,
थोडेन माहीं बिन्धय के परिचय सबकाहीं करबाइ दिहेन,
महगना रामलखन सिंह काहीं सुनि केसब आनंद लिहेन।

●●●

लोक-मैत्रेय

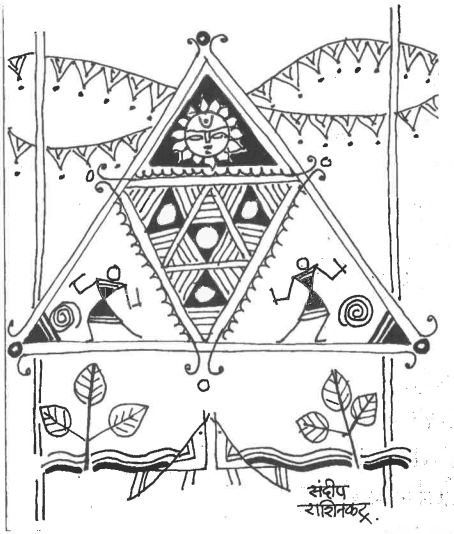

बुंदेली-खंड

रचना-क्रम

1.	**सुरेन्द्र सिंह पंवार**	
	बुंदेली बोली का परिचय	81
2.	**आचार्य भगवत दुबे**	
	जेबर हैं बुंदेल के	82
3.	**डॉ. सरोज गुप्ता**	
	राधा की छवि/लोक-देवता/सूर्या-सावित्री	83-85
4.	**प्रभा विश्वकर्मा 'शील'**	
	सौतनियाँ और सैंया	86
5.	**भगत दुबे 'दीप'**	
	अब डेंगू से जान बचाव	87
6.	**कुंजीलाल चक्रवर्ती 'निर्झर'**	
	प्रभाती गीत	88
7.	**वृंदावन राय 'सरल'**	
	तीन गज़लें	89-91
8.	**डॉ. सलमा जमाल**	
	अपने गाँव/नाचो मोर/बरसो मेघा	92-94
9.	**राजेन्द्र मिश्रा**	
	फूल बाग की मैना	95
10.	**मनोज कुमार शुक्ल 'मनोज'**	
	दूजे की खेंचत परदनियाँ	96
11.	**डॉ. गणेश राय**	
	कैसे-कैसे हो रहे/तुम गाड़ी कहाँ धर गए	97
12.	**ज्योत्सना गर्ग 'शर्मा'**	
	समझ नै आए	98
13.	**मिथिलेश नायक 'कमल'**	
	नदियाँ सूखीं जो डरीं / बिजना डुलाउत हैरै जबसै	99-101
14.	**निर्मला डोंगरे**	
	प्रेम/चरणों में उनके स्वर्ग बसो/तुमई जन्मदात्री हो	102-104
15.	**संतोष नेमा 'संतोष'**	
	बुंदेली गज़ल	105

बुंदेली बोली का परिचय

– सुरेन्द्र सिंह पंवार
संपादक, 'साहित्य संस्कार' त्रैमासिक

'बुंदेली मध्यदेशीय शौरसेनी अपभ्रंश हिन्दी का एक रूप है। 'उत यमुना, इत नर्मदा, उत चंबल इत टोंस' से आवर्त जमीन का हिस्सा जो 'हिंदुस्तान का हृदय' है, बुंदेलखण्ड कहलाता है और यहाँ की बोली को बुन्देली कहते हैं। बुंदेली के लगभग 25 स्वरूप मिलते हैं, सगरयाऊ, नरसिंहपुर, घटियाखाले की, दतिया की, राठ-महोबा की, झांसी की, महोबा की आदि। ध्वनि और अर्थ परिवर्तन के बावजूद उक्त विभिन्न रूपों में रस और माधुर्य की एकरूपता है, बुन्देली बानी नौनी है, गुरीरी (मधुर) है, अमिय रसबोरी है। क्षेत्रफल की दृष्टि से देंखे तो उत्तरप्रदेश के 5 और मध्य प्रदेश 22 जिले बुंदेली के प्रभाव क्षेत्र में हैं। सागर को बुंदेली का केन्द्र माना जा सकता है। जबलपुर के आसपास बोली जा रही बुन्देली, गोंडी-भाषा के सम्पर्क में आकर कदाचित कठोरता ग्रहण कर लेती है। भौगोलिक दृष्टि और जमीनी किस्म के आधार पर यहाँ की बुंदेली को 'काँठर-हवेली' संज्ञापित किया जाता है।

बुंदेली का शब्द भण्डार समृद्ध और व्याकरण से सम्पन्न है। बुन्देली में 10 स्वर और 27 व्यंजन कुल 37 ध्वनियाँ हैं। 'व' के स्थान पर 'ब' और 'त्र' के स्थान तर 'तिर' का प्रयोग होता है। संस्कृत जैसी संधियाँ इसमें नहीं होती, सभी अक्षर स्वर और व्यंजन दोनों एक-दूसरे के पीछे स्वतंत्रता से आते हैं। पास-पास होने पर उनके उच्चारण में कोई फर्क नहीं पड़ता, जैसे आउत, कईअक। बुन्देली में लगभग 166 एकाक्षरी शब्द-सम्पदा प्रचलन में हैं जो मानव मन की सूक्ष्मतम अभिव्यक्तियों को एक मात्र एक शब्द में व्यक्त करने हेतु पर्याप्त हैं। 'सत और पत' पर न्यौछावर होने वाले 'आल्हा उदल बड़े लड़ैया उनकी बात कही नै जाय' (जगनिक का आल्हा-खंड) और 'रजऊ' के दैहिक सौंदर्य के बारास्ता अध्यात्म की चौकड़ियाँ फागें गाते ईसरी, पद्माकर के उत्कृष्ट साहित्य से इतर किस्सा-गाथाओं, आने-अटका, कहावतों-बुझौवल, लोकगीत-पँवारा में बुंदेली का प्रचुर साहित्य उपलब्ध है। बुंदेली को हिन्दी की 'लुहरी-बिन्ना' (छोटी बहिन) माना जाता है।

जबलपुर (म.प्र.)
मो. 9300104296

आचार्य भागवत दुबे
जन्म : 18 अगस्त, 1943
वरिष्ठ साहित्यकार, बहुचर्चित, 'दधीचि महाकाव्य' सहित 50 पुस्तकें प्रकाशित।
साहित्यिक संस्था, 'कादम्बरी' के अध्यक्ष
सम्प्रति : जबलपुर में , स्वतंत्र लेखन
मोबा. 9691784464

जेबर हैं बुन्देल के

जेबर हैं बुन्देल के, भड़कीले औ ठोस।
देखन बारे खें करैं, ललनाएँ मदहोश ॥

सोने-चाँदी को बढ़ै, सुन्दर तन पै मौल।
फूल झरैं नथनी हिलै, जब हँस बोलैं बोल ॥

नौ गज की धुतिया गसैं, लगै ओई की काँछ।
खींसा बारो पोलका, धरैं नोट दस-पाँच ॥

कद काठी जिनकी गसी, हों गजगामिनि नार।
पहरैं चौंड़े कमर पै, कड्डोरा लरदार ॥

पहरैं टोड़र पैजना, बुँहटा गुंज हमेल।
हार बिचौली तबिजियाँ, नथ ज्यौं कसी नकेल ॥

मुतियन जड़ी बिचौलियाँ, सुतिया औ 'भुजबंद'।
लाखें चुरियों की खनक, बिखराउत आनन्द ॥

खुटिया नोंनी नाक में, बैंदी धरैं लिलार।
कुण्डल सोहें कान में, झुमके लटकनदार ॥

डॉ. सरोज गुप्ता
शिक्षा : एम.ए.,बी.एड., पीएच.डी.
रचना : 11 पुस्तकों का प्रकाशन, दर्जनों पुस्तकों और पत्रिकाओं का संपादन, अनेक शोध-ग्रंथों का निर्देशन आदि।
संप्रति : अध्यक्ष (हिंदी विभाग), पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)
मोबा. : 9425693570

राधा की छवि

राधा की नेंक छवि तौ निहारो---
तारों भरी पूनम की रात में,
कान्हा केसंग साथ ,
प्रेममयी दृष्टि लयें,
सूरज सी चमक लयें,
इतराती इठलाती सी ,
किरनन कौ सबरयें छूट रओ फब्बारौ।
राधा की नेंक छवि तौ निहारो----

चेहरा चिलक रओ चिनगारी जैसौ,
लाल-लाल गालन की ललामी लयें ऐसौ
सूरज सें टपकी फलन की डगारन जैसौ,
स्वाती नक्षत्रन में ओस भरी सीपियन सों,
सागर की लहरन सों राग मल्हार सुना रओ।
राधा की नेंक छवि तौ निहारो----

दमक रये मों पै अनौखी अदायें,
सुफेती लयें उड़नियाँ जैसें घिरी हों घटाएँ,
घुँघरारे कारे बार, नागिन से बल खा रये,
बाँसुरिया की धुन सुनकें गीत गायें हवायें
दीवानी बन कान्हा की रासरचौ सुहानौ
राधा की नेंक छवि तौ निहारो----

लोक-देवता

भुंसारे सें लौलइया नों,
पूजे जात हमाय इतै लोकदेवता।

भूत परेत आँधी अंधड़ खों,भगा देत जे घटौइया बब्बा।
गाँव की देवी खैरमाई खों,चढत नारियल और बतासा।
ठाकुरदेव, घमसेन नारायन, पौरिया बाबा, खैरासिद्ध बब्बा।
सबकी सुनतई, खूब देत असीसें,दुःखहरत हमाए देई देवता।
भुंसारे सें लौलइया नों,
पूजे जात हमाय इतै लोकदेवता।

मैकासुर बब्बा खों पूजती सुहागिनें, हुर्रइया दशारानी संकटा।
गाऊन मेंढन पै गुरैया मसान देव,कारसदेव ग्वाल गौड़बब्बा।
सबई जनन के सुख-दुख में असीसत,गनपति गुसाई बब्बा।
भये ब्याव में लाज सबकी रखतई, ओरछे के हरदौल लाला।
भुंसारे सें लौलइया नों,
पूजे जात हमाय इतै लोकदेवता।

बेटन खों मिलें बउएँ, बेटीं कुलबंती,फलें-फूलैं सबई संतानें ,
रक्कसबाबा, बीजासेनमैया, प्रानन बाँसुरी हरे असफलता।
धरा धाम पै भैया बैनें खुश रयें, रक्षा करें सगरे देई देवता।
राम-रमैया, कृष्ण-कन्हैया, षष्ठीदेवी,बेइया मातृका हरें संकटा।
भुंसारे सें लौलइया नों,
पूजे जात हमाय इतै लोकदेवता।

- डॉ. सरोज गुप्ता

•••

सूर्या-सावित्री

हमाए इतै आ गयीं सूर्यासावित्री

खूब शृंगार करें सबेरे की धूप सी,
तेज खों ओढ़ें, सूरज की शक्ति सीं।
नेंक-नेंक पै टोका-टाकी के बीच,
अंधेरे में जुगनू सी चमचमाती।
माथे पै बैंदा सी दिपदिपाती।
हमाए इतै आ गयीं सूर्यासावित्री--
गृहस्थ धरम कौ पालन करतीं,
यमराज सें जूझतीं,लड़तीं।
गुलमोहर सी खिलखिलातीं,
सौभाग्य मंगलसूत्र पै इतरातीं।
नदिया में आती बाढ़ सी उमड़ती,
हमाए इतै आ गयीं सूर्यासावित्री--
प्रेम की उमंग-तरंग सी हिलकतीं,
फूलन सीं झरतीं, खिलखिलातीं।
सोती सीं, जगती सीं,उनमादिनी,
धरती मैया खों अपने करमन सें,
उजयारी सें आपूरित करती सीं।
हमाए इतै आ गयीं सूर्यासावित्री--
अपने पति के जीवन खों बचातीं,
कल-कल नदिया सीं,घर में बहती।
अनेकन सूरज खों अपने में समेटें,
खरी धूप में तांबे की मूरत सी,
तेज लिए चिलकती दिपदिपाती।
हमाए इतै आ गयीं सूर्यासावित्री--

- डॉ. सरोज गुप्ता

प्रभा विश्वकर्मा 'शील'
जन्म : 5 जुलाई, 1968
शिक्षा : एम.ए.(तीन विषयों में),एम.एड.
कृति : बूंदाबारी (बुंदेली काव्य संग्रह)
संप्रति : नारायण नगर कालोनी, जबलपुर (म.प्र.)
मोबा. : 9926356390

सौतनियाँ और सैंया

जब सैं आई मोरे घर सौतन, बदल गये हैं सैंया,
मोरे बिन छई नै दाबत्ते, अब हेरें लौ नैंया।

दाँह नहीं है जा गल्ले में, दाह सी मोरे जी मैं,
सौतनियाँ की हेरन ऐंसी, चलै छुरी मोरे जी मैं,
मैं तौ मानूँ बिहनी ओखों, बा मानैं बैरनियाँ।
जब सैं आई मोरे घर सौतन, बदल गये हैं सैंया।

जब सै लाये 'लौहरी' मोहे, बना दई पनिहारन,
काँच की चुरिया लौखें ललचूँ, लौटा दई मनिहारन,
भैराभूत बुखार है तौ सुई, हाँकूँ बैला गैयाँ।
जब सैं आई मोरे घर सौतन, बदल गये हैं सैंया।

पैलऊँ तौ मोरे जेबर जाँते, पेटी में नैं अमाबै,
दसईं उँगरियाँ, दसईं मुंदरियाँ, मेंहदी पोर सजावैं,
अब तौ नाक-कान लौ बूँची, बनी फिरौं दोजनियाँ।
जब सैं आई मोरे घर सौतन, बदल गये हैं सैंया।

भुन्सारे सैं हुकम चलाबै, परी-परी खटिया मैं,
बनाखैं दासी राखै मोहे, खान नैं दे टठिया मैं,
कहत है घर सै रहौ बाहरी, दूरई बना टपरिया।
जब सैं आई मोरे घर सौतन, बदल गये हैं सैंया।

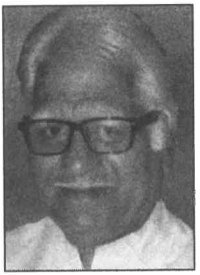

भगत दुबे 'दीप'
जन्म : 30 मार्च, 1947
लेखन : गीत, गज़ल, लोकरंग के गद्य, पद्य
कृतियाँ : जंगल हमारे भगवान/जंगलवाले/बाबाजी/
जागृति/ पंचरंगी चूनर/बहुरंगी धारा/जिगर के पार
सम्प्रति : शास्त्रीनगर, जबलपुर मो. 9009856260

अब डेंगू से जान बचाव

कोरोना से जान बची तो, ये डेंगू ने कहर मचा दओ।
अबे एक से उबर ने पाओ, ये डेंगू ने कहर मचा दओ।
मच्छर फिर संवाहक है, जो हथयार बड़ो घातक है।
घर-घर में खटिया बिछवा गओ, ये डेंगू ने कहर मचा दओ।
पानी व्यर्थ भरो ने होवे, मच्छर ई में पैदा होवे।
डेंगू को लार्वा पना रओ, ये डेंगू ने कहर मचा दओ।
मच्छर काटे चढ़ी बुखार, डेंगू ने लये पंख पसार।
चार दिनामें प्लेट्स घटा रओ। ये डेंगू ने कहर मचा दओ।
कई दिन पानी भरो ने रखियो, ई में मच्छर बढ़न ने दइयो।
हाथ जोड़ के मैं समझा रओ, ये डेंगू ने कहर मचा दओ।
डेंगू के रोगी खों काटे, मच्छर सबरे घर खों बाटे।
जो शासन की नींद उड़ा रओ, ये डेंगू ने कहर मचा दओ।
मच्छर दानी लेव लगाय, सबसे अच्छो जोई उपाय।
नई तो कोई अब बच नई पा रओ, ये डेंगू ने कहर मचा दओ।
ये डेंगू ने कितने खाए, कितने घर के दीप बुझाए।
कौन-कौन किस्मत पे रो रओ, ये डेंगू ने कहर मचा दओ।

•••

कुंजीलाल चतुर्वेदी 'निर्झर'
जन्म : 01 जुलाई, 1968
बुन्देली और हिन्दी में लेखनर एवं गायन
व्यवसाय : फोटोग्राफी
सम्प्रति : भेड़ाघाट, जबलपुर
मोबा. : 7067776187

प्रभाती गीत

उठो बहू झारो उसारो, ससुर कहें हो गओ मुनसारो,
डूब गई हैं चांद तरैया, बारी के पेड़ों पै बोले चिरैया,
रम्हा रही हैं सार में गईयां
डार देओ उन्हें बेटा चारो।। ससुर...
उठतैई से कद्दू जो रोबै सबेरे, पापा घसीटा उठत अबेरे,
लड़का बच्चों तरफ न हेरे।
तुमई बहू ईको सम्हारो।। ससुर...
नहा धो के रामायन पढ़न लगी नानी,
तुमरी जेठानी को भर गओ है पानी।
हल्की बाई डार आई बैलों खै सानी।
धूप चढ़ी कछू तो बिचारो।। ससुर....
बिन्दो फुआ के चांवर छर गये,
खुलरी बारी काकी के फुदवां दर गये।
कक्का जुनरी पिसाबे खो धर गये।
बाजरा खो कह गये धो डारो।। ससुर...
मंदिर में आरति की बजन लगी घन्टी,
बगिया से फूल तोड़ लाओं है बंटी,
पूजा करन चल दई पनागर की अन्टी।
कैसे करूं निर्झर इसारो।। ससुर....

वृन्दावन राय 'सरल'
जन्म : 03 जून, 1951 शिक्षा : बी.ई. सिविल
गीत, गज़ल, दोहा, समीक्षा
कृतियाँ : को का कैराओ/धूप ही धूप/आज की कविता/
मैं कभी बच्चा था/दोहावली
सम्प्रति : शिवजी यार्ड, सागर
मोबा. : 7869218525

गज़ल

कैसे बढ़िया आय जमाने देखो तो,
आज लुटेरे हो गय थाने देखौ तो।

भुनसारे सें लोटत फिररय नाली में,
बूढ़े बारे सबई नसाने देखौ तो।

पाँच साल से आँखें तरसीं दर्शन खों,
भइया अपने कहाँ हिराने देखौ तो।

सरपंची की कुर्सी पावे दद्दा ने,
अपनी बाखर रखदई गानें देखौ तो।

पूजा कररय तिलक लगारय जो हर दिन,
उनखों भी अब हड्डा खाने देखौ तो।

•••

गज़ल

बीच गैल में उनको कब्जा, को का कैरओ।
मंत्री जी के बे हैं चमचा, को का कैरओ।।

हड़प लई हरपा की धरती, धोंस बताकें।
एलएलए, के बे हैं कक्का, को का कैरओ।।

साठ साल की बुढ़िया जी ने कुचरकें धर दई।
बो है थानेदार को लरका, को का कैरओ।।

कोतवाल तक हाँत मिलाबे जी सें तरसें।
दिल्ली तक है उनका भपका, को का कैरओ।।

गाँव भरे में अत्त मूतरय ठाँडे ठाँडे।
पेहर खें लंबो खादी कुरता, को का कैरओ।।

- वृन्दावन राय 'सरल'

गज़ल

खादी पैरे गर्रा रय हो।
लिपटस जैसे सर्रा रय हो।।

धरती की तो छोड़ो बातें।
आसमान में फर्रा रय हो।।

का कैरय मैंगाई घट है।
तुम का दिन में बर्रा रय हो।।

हमखों लूटो हमखों कूटों।
ऊपै तुम भी गुर्रा रय हो।।

बिरथाँ सबखो गारी मत दो।
काये खुद खों अर्रा रय हो।।

हमने का भैंसे छोरीं है।
हमसे काये भुर्रा रय हो।।

- वृन्दावन राय 'सरल'

डॉ. सलमा जमाल
जन्म : कुलपहाड़ (महोबा)
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी, इतिहास, समाजशास्त्र) बी.एड.
कृतियाँ : दस पुस्तकें प्रकाशित
सम्प्रति : जबलपुर (म.प्र.)

अपने गाँव

बलम मोए ले चल तैं अपने गाँव।
नौनी लगत ना मायके की छाँव॥
धरती ने ओढ़ी हरीरी चुनरिया,
मोंगरा गमकत हैं रोजई साँवरिया,
मंगरे पे कौवा करत काँव-काँव।
बलम.....
बरसा में नदियाँ उफला गईं हैं,
सुध बालापन की बिसरा दई हैं,
ज्वानी में चले ना कागद की नाव।
बलम.....
मिंदरा, झिंगुरा, पपीहा बोलत,
बदरा गरजत मोरो जियरा डोलत,
मोरनी के थिरकत हैं बेजा पाँव
बलम.....
सोने घाँई मोरो सिंदूरी तन,
छिटकी जुंदैया कब हूँ है मिलन,
नौना लड़े तोसें, नई दूजो ठाँव।
बलम.....
देवी-देवता पूज गैल निहारूँ,
सखियाँ तिनगावें कै धीर धारूँ
भौजी करत 'सलमा' टेढ़ो बतकाव।
बलम.....

नाचो मोर

अँधियारौ छाओ चहुँ ओर।
बन में खुश हो कें नाचो मोर।।

रंग-बिरंगे, पंखा जिनमें,
टकीं तरैंयाँ भीतर उनमें,
लरकन बच्चन को चितचोर।
बन में.....

करिया-करिया बदरा आए,
मोरन ने पंखा फैलाए,
मींयूँ-मींयूँ कौ हो रऔ सोर,
बन में.....

मोर-मोरनी बन में नाचत,
जबईं ढोल बदरा के बाजत,
हौन लगी सतरंगी भोर।
बन में.....

मुकुट-कान्ह के पंख बिराजै,
भौत हमाऐ मन कौं साजे,
कलगी मांथे सिर मोर।
बन में.....

साँची-साँची आज तैं बोल,
का लैहै पंखन कौ मोल,
जंगल बनौ 'सलमा' ठौर।
बन में.....

- डॉ. सलमा जमाल

●●●

बरसो मेघा

बरसा आई बाँध कैं घुंघरु,
छिटक कैं नाची छम-छम-छम।
बदरा, बिजुरी ताल देत हैं,
बजत नगारे ढम-ढम-ढम।।

बनी दुलैया, धरती रानी,
धानी चुनर औढ़ें डोलत,
पत्तन की झांझें बजती हैं,
मिंदरा, झींगुरा, मोरई, बोलत,
पपीहा अपनी राग अलापत,
बरसौ मेघा झम-झम-झम।
बरसौ मेघा...
बऊ-बब्बा अब भये सयाने,
ठंडी ताप उनै हो जैहै,
लकरी कंडा भींज गए तो,
भौजी कैसें रोटी पैहै,
कच्चे घर की चिंता खैहै,
अब बरस तैं कम-कम-कम।
बरसा आई...
ओरा निरहें, फसल चपट है,
ऐसो तांडव करियो ना,
ढोर-बछेरू बह ना जावें,
बाढ़ को संगे लइयो ना,
सलाम अरज करत कर जोरे,
बरसियो तन्नक थम-थम-थम
बरसा आई...

- डॉ. सलमा जमाल

राजेन्द्र मिश्रा
जन्म : 01 नवम्बर, 1951
शिक्षा : एम.ए., एम.कॉम.
विधा : बुन्देली एवं हिन्दी काव्य
कृतियाँ : कर्णिका काव्य संग्रह
सम्प्रति : यादव कॉलोनी, जबलपुर (म.प्र.)
मोबा. 7697530566

फूल बाग की मैना

भुन्सारे सें आ गई दोरें
फूल बाग की मैना,
बा तो जगत जोत जरवा दईं भैया,
फूल बाग की मैना....

बा ड्योढ़ी पै सोर मचावें
मगरे पै चढ़ जावें,
पांखों खें खुजलाखैं भैया
मुतको सोर मचावें।
मोहे अंगना नाच नचा दई भैया,
फूल बाग की मैना....

टिपकी मुंदरी लगा लगा खैं
नैना कजरा डारें,
हातों में भर-भर खैं मेंहदी
ईंगुर माथ लगावें।
बा तो सतगजरा पहरा गई,
मोखों, फूल बाग की मैना....

ठुमक ठुमक खैं मैं नाचूँगी
पेहर पांव पैजनियाँ।
नैन मटक्का करखैं बा नें,
पकरी मोरी बहियाँ।
मोहे झूला सो झुलवा गई,
भैया, फूल बाग की मैना....

अमवा की डारी पै कोयल
खूबई सोर मचावें,
जा मैना खों देख देख कैं
व्याकुल सी हो जावें ।
सौतन डाह लगा दई भैया,
फूल बाग की मैना....

तुलसी के बिरवा के ढींगे
हांत जोर मुस्काई,
आरत की टाठी से लै खैं
चंदन चाँउर चढ़ा दई।
बा तो जगत जोत जरवा दई,
भैया, फूल बाग की मैना....

मनोजकुमार शुक्ल 'मनोज'
जन्म : 16 अगस्त, 1951
शिक्षा : एम.कॉम.
कृतियाँ : दो कहानी संग्रह, तीन काव्य संग्रह, दो पुस्तकों का संपादन
सम्प्रति : मिलौनीगंज, जबलपुर (म.प्र.)
मोबा. : 9425862550

दूजे की खेंचत परदनियाँ

कई पड़ोसी के घर घुसकें, हड़प जात ओरों की भुइयाँ।
घर की चादर ओढ़त नइयाँ, दूजे की खेंचत परदनियाँ॥

तिब्बत खें तो पूरइ सुटको, हांगकांग खें एँसई गुटको।
इंडोनेशिया ताइवान खें, कबसें मार रहो सटकइयाँ॥

सन छप्पन में हाथ हिलाए, चाउ अन लाइ भारत आए।
हिंदी चीनी भाई कै कें, पाँछे वार करो छुटकैयाँ ॥

बुद्ध देव की पूजा करै, खुदइ गैल वे उल्टी चलै।
डैगन वालो ध्वज फैरा रै, नाक कटा घूमें भिनकइयाँ॥

शांति प्रेम को बनो है दुश्मन, जीव जन्तु की काटें गरदन।
कोरोना जग में बगरा कें, जा बैठो जमदूत के कइयाँ ॥

पाक रहो पूरो भिखमंगो, फैला झोली हो गओ नंगो।
नेपाली भी इनके संगे, नाच रहे ले कैं मटकैयाँ ॥

काबुल में अब पैर जमा रओ, खनिज लूटवै लार बहा रओ।
तालिबान से हाथ मिला रओ, पाकिस्तान की पकड़े बईंयाँ॥

सारे जग सें लई बुराई, अपनी ई नें हँसी उड़ाई।
हिन्दुस्ताँ सें पंगा लेकें, सेना नें दे दइ पटकनियाँ॥

●●●

गणेश राय
जन्म : 16 अगस्त, 1972
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), बी.एच.एम.एस.
बुन्देली, समसामयिक हिन्दी कविता, व्यंग्य लेखन
कृति : बेढ़ियां कब-तक
सम्प्रति : 'सलैया' इमलाई, दमोह (म.प्र.)
मोबा. : 9098532051

कैसे-कैसे हो रहे

आप तो अमन चौन सें छीर सागर में सो रये
हादसा दुनिया में देखो तो ! कैसे -कैसे हो रये।
बिरवाई खेत खों खान लगी
झूठ सत्य खों भींजे उन्ना से निचो रये
हादसा दुनिया में देखो तो कैसे-कैसे हो रये।

•••

तुम गाड़ी कहाँ धर गए

सपने टूट गए जैसें भुंजे भय पापड़
जिन्दगी चप्पल के तल्ले सी घिस गई
गेहूँ के संगें घुंन जैसी पिस गई
महँगाई ने सुरसा जैसे मुँह बाये
डीजल-पेट्रोल ने हमें जे दिन दिखाये।
कये दद्दा तुम गाड़ी कहाँ धर आये
जुम्मन परेशान है अलगू हैरान है
कौनऊँ कें सात-सात कौनऊँ कें आठ-आठ
कौनऊँ कें नौं-नौं, दस-दस संतान हैं
दुःखों के कारणों के पता नईं लगाये
इच्छाओं के पिटारों में गुनाहों के अजगर पाले
चद्दरा के बायरें गोड़े कढ़ आये
कये दद्दा तुम गाड़ी कहाँ धर आये।

•••

श्रीमती ज्योत्सना गर्ग 'शर्मा'
जन्म : 2 अगस्त, 1976
शिक्षा : बी.एस.सी.,एम.ए., बी.एड.
प्रकाशन : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख एवं कविताएँ
सम्प्रति : 264, गोपाल बाग, मिलोनीगंज, जबलपुर
मोबा. : 8319905260

समझ नै आए

समझ नै आए करौं कैसे , ई बानी से उनको बरनन।
जिनको है आशीष सदा हम पै, उन मात पिता खों करें नमन।।

पिता छांयरो आसमान को, रात दिना जे में पल रये।
धरती घांई सहनशील मां, सब सुख दुख अंचरा भर लये।।

भुनसारे को उजियारे से, पिता उन्नति को हैं प्रतीक।
संझा की दिया बत्ती सी मां, सरल मीठी सो गीत।।

पिता पेढ़, पीपरा को, करै मनो हिया सें हितकारी।
अंगना की कौंरी तुलसी, हर मरज को मरहम महतारी।।

घामो, जाड़ो, बसकारो सह पिता नै, कर दई बखरी है थांड़ी।
मुतकीं अल्सेंटे सह खें बी, मां की ममता नै हारी।।

मनो कहें का अब के मौड़ा-मौड़ी, निर्दई और अत्याचारी।
करो का तुमने हमाए लाने, मारे ताना देंए गारी।।

पकर उंगरिया चढ़ गए सिढ़ियां, जस, पैसा खुबई जोर लओ।
बिसर गए सब समझो बोझो वृद्धा आसरम में छोर दओ।।

नै मांगे वे हीरा मोती, नै मांगे कोई पकवान।
चाहे दोई जून सूखी रोटी देओ पर खूब करो उनको सम्मान।।

●●●

श्रीमती मिथिलेश नायक 'कमल'
जन्म : 19 अक्टूबर, 1952
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी/समाजशास्त्र)
कृतियाँ : बुन्देली लोकगीत भाग1-2, नदियाँ सूखी जो डरीं
सम्प्रति : द्वारका नगर, जबलपुर
मोबा.: 9300077289

नदियाँ सूखीं जो डरीं

नदियाँ सूखी जो डरीं, कुइयाँ सूखीं जो परीं
गुइयाँ कितैं हेरिये पनिया, दुनियाँ आगी सी तपी
दुनियाँ साँची जौ कही - 2

खेत, आंगन और गाँव घर मोरे
फटी धरा की छतियाँ - 2
मौड़ा-मौड़ी लै मटका दौरे
खोंसे कम्मर धुतिया-नदियाँ सूखीं....

बिरछा रो रयै, फसलें रो रई
जंगल रो रयै आज - 2
सहमें-झाड़ पेड़ सब कै रये
मोय ने काटों आज 2 नदियाँ सूखीं....

जैर धुँआ सौं भरौ हवा में,
जीवौं हैं दुसवार - 2
अपनौं जीवन नौनों करवे - 2
जंगल दये है उजार - 2 नदियाँ सूखीं....

अपने मानुष तन के लाने
प्रकृति रूप नै समझो - 2
विषय विलास-विभव हित अपने
काट करेजो उसखो - 2 नदियाँ सूखीं...

अगली पीढ़ी खौं का दइये
तप रई धरती मइया-2
अब तौं बचो है थोरौ पानी-2
छोटी सौन चिरइया - नदियाँ सूखीं....

आस की डोर बंधी मोरी गुइयाँ
जंगल जीव बचा लो-2
वन के प्राणी, धरती माता
जल में 'कमल' खिला लो-2 नदियाँ सूखीं जो डरीं
कुइयाँ सूखी जो परीं गुइयाँ कितै हेरिये पनियाँ
दुनिया आगी सी तपी, दुनियाँ सांची जौ कही-2

•••

बिजना डुलाउत हेरै
जबसै - बारामासी

मिल-जुल खैं कैतीं सब सखियाँ
मोहन दूर भये हमसैं, एकऊ नै खबर करैं तब सैं-2

चैत तपो, बैसाख जो आ गओ,
गरम-गरम लू ने झुलसा दओ,
जेठ तवा सौं तपत जरा रओ।-2
बिजना डुलाउत हेरे जबसैं, एकऊ नैं ख्याल करैं तबसै-2

गर्जत है अषढ़ा घनघोर,
साहुन बरस रऔ चऊँ ओर,
बिजुरी चमकत हिया हिलोर। - 2
भादौं जो आ गये निहारौं कबसैं, एकऊ नै ख्याल करैं तबसै-2

क्वार, दसेंरा, कातक आ गये,
दिया, तिवारी लौ नै भा रये,
अगहन मैं भी श्याम नै आ रये।
पूस लगो सखियाँ तरसै, एकऊ नै ख्याल करै तबसै-2

माघ मास लौ नइयाँ ठिकानौं
फागुन में भी श्याम हिरानौं,
रंग खेलता वो, नई दिखानौं।
किलपत, 'कमल' कात सबसैं- एकऊँ नै ख्याल करैं तबसै-2

मिल-जुल खैं कैंतीं सब सखियाँ
मोहन दूर भये हमसैं, एकऊ नै ख्याल करैं तबसैं।

- श्रीमती मिथिलेश नायक 'कमल'

●●●

श्रीमती निर्मला डोंगरे
जन्म : 05 जुलाई, 1953
शिक्षा : एम.ए., बी.एड.
लेखन में रुचि : कहानी/कविता/लेख
सम्प्रति : सिहोरा (म.प्र.)
मोबा. 6260092190

प्रेम

प्रेम समर्पण जानत है,
बदले में कछु ने माँगत है।
अपने प्रिय को दुखी ने देखे,
सब को भलो वो चाहत है।
निश्छल निर्मल होत प्रेम है,
प्रेम आस की राहत है।
प्रेमई सो अपनों बंधन बंध गओ,
प्रेम हृदय को भावत है।
मात-पिता को प्रेम है निर्मल,
उनको आशीष दिखाउत है।
मीरा को है प्रेम अलग सों,
सबके मन को भावत है ।
कृष्ण और राधा के प्रेम सो,
सारे जग खों लागत है।
प्रेम सदा निश्चल मन से होबे,
तो संसार सुहावत है।

•••

चरणों में उनके स्वर्ग बसो

जन्म दे दयो है मात-पिता ने
पाल पोस खें बड़ों करो
सेवा उनकी कर लो
चरणों में उनके स्वर्ग बसो।

नदियों के निर्मल जल सो
जो जीवन धन्य बनो
मन को शांत करो जीवन में
जीवन खों रंगीन करो।

सुमन सुगंधित संस्कार से
जीवन नोनो खूब बने
पुलकित हो जाए मन बगिया
मन, गो चिंतन खूब घनो।

खूबसूरत है सजल सुमन
प्रभु चरणों की सुध लेहो
अपने अच्छे करमन से
अपना जीवन सफल कर हों।

स्वर्ग इतई पे आ जाहे
हम मन से खुश हो जैहें
सबरे हिलमिल खुशी मने हैं
हम भी खुशियाँ भर लेहैं।

- श्रीमती निर्मला डोंगरे

तुमई जन्मदात्री हो

तुमई जन्मदात्री हो,
हरियाली भरती धरती।
मन मयूर जो मगन होत हैं,
मोहक सो मन को करती।
इतैई स्वर्ग है सबरो,
मन को इतैई रमा जाओ।

मैया मोरी तुमने गए इतने गुन,
उनसे जीवन भलो भायो।
तुमई जन्मदात्री हो अपनी,
तुमसे नैया पार लगी।
अच्छे-अच्छे संस्कार दें तुमने,
हमरो जीवन पालो।
हम हैं किस्मत वाले जो तुमरी,
कोंख से जन्म लये।
तुम पर है विश्वास अटल,
तुम ही हो मोरी मैया।
निःस्वार्थ भाव से करत रहत हो,
मइया मोरी चिंता मैया।

- श्रीमती निर्मला डोंगरे

●●●

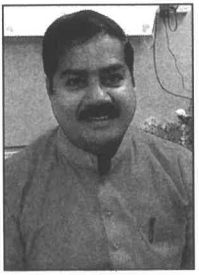

सन्तोष नेमा 'संतोष'
जन्म : 15 जुलाई, 1961
शिक्षा : बी.कॉम., एल. एल. बी.
विधा : दोहे/मुक्तक/गीत/गज़ल/लघुकथा
प्रकाशन : साझा-संग्रह (सपनों के गाँव में/देवी नमन)
सम्प्रति : आलोक नगर, जबलपुर (म.प्र.)
मोबा. : 9300101799

बुंदेली गज़ल

छूट गए एब महल अटरिया

कोरोना में लगे लुघरिया
जैसे काटत होवे करिया

पैसा-धेला काम ने आ रओ
छूट गए सब महल अटरिया

घूम घूम खें फूली साँसे
कहूँ मिलो ने रेमडिसवरिया

तकत आपदा में बे मौका
लूट मची है बीच बजरिया

अस्पताल सब भरे पड़े हैं
घूम रए सब नगर-नगरिया

अपनो भी बेगानो हो गओ
कोउ ने लेबे सुनो खबरिया

आगे-पीछू कोउ बचो ने
कैसे कट है राम उमरिया

हम खों तो 'संतोष' ने आबे
सूझत नइयां कहूँ डगरिया।

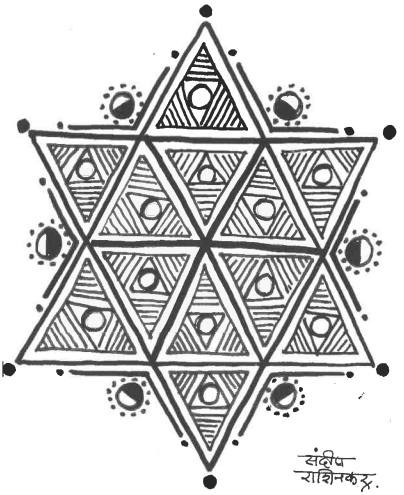
संदीप
राशिनकर.

लोक-मैत्रेय

ब्रजभाषा-खंड

रचना-क्रम

1. **पं. राधा बिहारी गोस्वामी भागवताचार्य**
   ब्रजभाषा- सामान्य परिचय 109

2. **सत्येंद्र सिंह**
   पद (कान्हा अब सुन/कान्हा मोहि सखा/कान्हा सबद) 110-112

3. **पं. गजेंद्रनाथ चतुर्वेदी**
   भजे नंद नंदन/रूप-सुधा... 113

4. **रानी सरोज गौरहरी**
   ब्रजभाषा मीठी/बरसाने में 114

5. **डॉ अपर्णा चतुर्वेदी**
   अद्‌भुत लीला/निहारति है 115

6. **डॉ गया प्रसाद 'सनेही'**
   कश्मीर सुषमा/राधा-सौंदर्य 116

7. **राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'**
   ब्रजवास 117

ब्रजभाषा : सामान्य परिचय

- पं. राधा बिहारी गोस्वामी
भागवताचार्य,

भक्ति काल में ब्रजभाषा, मध्यदेश की मुख्य साहित्यिक भाषा थी । शौरसेनी अपभ्रंश के पश्चिमी हिंदी समूह की यह समृद्ध ब्रजभाषा, मुख्यतः पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड सहित हरियाणा, राजस्थान और मध्यप्रदेश के कुछ जनपदों में बोली जाती है।

भक्तिकाल के महाकवि सूरदास से लेकर आधुनिक काल के विख्यात कवि श्री वियोगी हरि तक ब्रजभाषा में, प्रबंध तथा मुक्तक काव्य रचे जाते रहे हैं। ब्रज क्षेत्र के जनमानस में प्रचलित है कि –

धन्य ब्रजभाषा तोसी दूसरी ना भाषा कोई।
तैने वाणी के विधाता कूँ बोलिबो सिखायो ऐ।।

ब्रजभाषा, सुंदर सलोनी और मिठलौनी भाषा है, जिसे बोलने वाले देश के कोने-कोने में बसे हुए हैं यह ब्रज क्षेत्र में हरियाणा के होडल तक और उधर बटेश्वर से अलीगढ़ जनपद के गाँव हरिदासपुर तक इस भाषा का प्रचार और प्रसार है। कहा जाता है कि मथुरा शहर के चतुर्वेदी समाज द्वारा बोली जाने वाली बृज भाषा के शब्द कुछ अलग ही है जैसे नाँय को- वे नायँ ने सकोरा को सरोका और मोहनथार को दिलखुश हार कहकर संबोधित करते हैं। साहित्यकारों की भाषा संस्कृत शब्दों से ओतप्रोत है। साहित्य आकाश के सूर्य सूरदास की भाषा साहित्यिक होते हुए भी आसानी से बोली और समझी जा सकती है, क्योंकि उसमें ब्रज के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया गया है। ब्रज के लोक कवि मेघ श्याम ने अपनी रचनाओं में गाँव की ठेट भाषा का प्रयोग किया है। जैसे गाँव के छोटे से रास्ते को दगरा कहा जाता है।

ब्रज के अनेक प्रसिद्ध कवियों ने अपनी रचनाओं से बृज की इस भाषा को समृद्ध किया है। बृज भाषा के शब्द कोष तैयार करने के लिए डॉक्टर राजेंद्र रंजन का प्रयास अनुकरणीय रहेगा, शब्दकोष अभी अप्रकाशित है। ब्रजभाषा की रूपगत प्रकृति औकारांत है। जनपदीय जीवन के प्रभाव से इसके कई रूप है। ब्रज भाषा में कई फिल्मों का निर्माण भी किया जा चुका है।

गऊघाट मथुरा (उ. प्र.)
मो. 9412492717

सत्येंद्र सिंह
जन्म : 01 जून, 1949 (मथुरा)
शिक्षा : एम.ए. साहित्य सुधाकर
सेवानिवृत्त वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
लेखन : सभी विधाओं में साहित्य सृजन
दो कविता संग्रह प्रकाशित
संप्रति : आंबेगाँव खुर्द, पुणे (महाराष्ट्र)
मोबा. : 9922993647

पद

कान्हा अब सुन लेउ

कान्हा अब सुन लेउ टेर हमारी।
भागि-भागि मनुवाँ होत दुखारी॥

कबहुँ भागै सँग क्रोध के, कबहु मत्सर मित्र बनाबै।
छाँडि तिहारे चरन कमल, भटकै औरु भटकावै।

सबके दोष निकारै हर पल, बनिकैं नीति नियंता।
लोभ मोह अहंकार कौ मारौ, समुझै स्वयं बलवंता॥

सत्य ग्यान कछु न जाने, समझै स्वयं को ज्ञानी।
मानुस जनम गँवावै ऐसिहिं, लाजन नाँहि बखानी॥

राधे स्याम करहु किरपा, जाहि चरनन शरन लगावौ।
जा भगतु कौ माधव, मानुस जनमु सफल बनावौ॥

•••

पद

कान्हा मोहि सखा

कान्हा मोहि सखा स्वीकारौ।
पाप पुण्य कछु न जानूं, बस इक नाम तिहारौ॥

योग-याग, धरम-करम, अब तुम ही कान्ह विचारौ।
जैसौ हूँ वैसो ही आयौ, कृपा करो अरु स्वीकारौ॥

जग प्रसिद्ध मिताई तुम्हरी, कह कह सुदामा हारौ।
औरु सुबाहु सुबल भद्र सुभद्र उद्धव श्रीदामा बेचारौ॥

मधुमंगल मणिभद्र भोज शारद हू हुतौ सखा तिहारौ।
बस मेरो नाम और जोड़ लेउ तो हो जाऊँ मित्र तिहारौ॥

होय जनम सफल मेरो श्याम अरु नाम होय तिहारौ।
तीन ताप अरु कोविद रिपु, कहा बिगार लेय हमारौ॥

- सत्येंद्र सिंह

कान्हा सबद की मार

कान्हा सबद की मार घनेरी,
धँसे शूल सम ज्यों प्राण हर लेही।

बिना अस्त्र शस्त्र के, हिय शरीर को काटे डारै,
रेचक पूरक मिल जाहें, डोर साँस की छूटी जाबै।

आस जियन की टूटै, बिन अर्थ के जीवन लागै,
निगाहें भटकें श्याम, प्रिय अप्रिय कोई न भाबै।

सबद मारि अलग परत हैं, ज्यों घट्यो कछु नाँही,
घायल कछु बोल न पावै, है जो पीर हृदय माँही।

श्याम सखा बन जाओ मेरे और हाथ गहि लीजै,
बंशी धुन सुनाय-सुनाय, मरहम मरम पै दीजै।

- सत्येंद्र सिंह

पं. श्री गजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी
जन्म : 28 अगस्त, 1922 (मेरठ (उ.प्र.)
लखनऊ के वरेण्य श्री ब्रजभाषा कवि रहे।
निर्वाण : 8 जून, 2000 ई.

---

(1)

भेजे नन्द नन्दन के उद्धव स्यंदन के,
चारु अभिनन्दन कौ कोऊ दरसावै ना.
बन्द-बन्द द्वार मन्द थकित बयार
बैन बन्दना के सारिका सुरीर सरसावैं ना.
बिरह-बिथा के फरफन्द छर-छन्द छ्ये
बन्द ज्ञान-ध्यान के सुप्रीम परसावैं ना,
आनंद के कन्द ब्रजचन्द के बिलोके बिना
नैन नलिनी के रसबुन्द बरसावै ना.

(2)

रूप-सुधा-अम्बुधि में सतत् विलीन
मंजु मीनन कौं कैसे ज्ञान-गोपद सुहाइहैं.
चन्द चाँदनी की चारु चाहक चकोरी
तिन्हैं कोरी जोति-रासि तौ कबौं ना रास आइहैं.

माधव के रंगीन रँगी हैं ये कुरंगिनी सो
मरु की मरीचकानि कैसे पतिआइहैं
आइहैं न गोबिंद-गुलाल रस-ख्याल डूबी
तौ लौं कहाँ कोऊ ब्रजबाल उठि धाइहैं.

•••

रानी सरोज गौरहरि
जन्म : 04 नवम्बर, 1929
विधा : सुप्रतिष्ठित कवियित्री (ब्रजभाषा)
दो कविता संग्रह प्रकाशित
संप्रति : कमला नगर, आगरा
मोबा. : 9319380708

ब्रजभाषा

ब्रजभाषा मीठी लगै, मन माँहि भरे उमंग,
जन जन में रस रचि रह्यौ, ज्यौं मेहँदी कौ रंग।

ज्यौं मेहँदी कौ रंग, हथेली पै चढ़ि जावै,
नित नित नूतन लगै, चतुर चित चाव चढ़ावै।

कह 'सरोज' हम सबनि के मनमाँ जेइ अभिलास,
रसेई रंग सुगंध सदा जे रची रहे ब्रजभाष।

•••

बरसाने में

पायौ नहिं मैंने जान,
कौन विधि बसै आन,
खोल लये उर के द्वार,
मोरे अनजाने में।
हती हौं तो भोरी भारी,
भारी छलिया मुरारी,
मोसौं करौ छल भारी,
वानै मन माने में॥

अब आबै न रहाई,
कहाँ कैसी करूँ माई,
हरि हाथ बिक आई,
बिन पहचाने में।
छूटि गयौ साथ संग,
ऐसौ चढ़्यौ स्याम रंग,
बाबरी फिरत आज,
सिगरे बरसाने में ॥

•••

डॉ. अपर्णा चतुर्वेदी प्रीता
जन्म : 26 अप्रैल, 1947 (अलीगढ़)
शिक्षा : एम.ए., पी.एचडी.
लेखन : 9 कहानी संग्रह/एक गीत-संग्रह,
बाल-कहानियाँ/संपादित पुस्तकें।
संप्रति : स्वतंत्र लेखन, सिद्धार्थ नगर, जयपुर (राज.)
मोबा. : 9571054765

अद्‌भुत लीला

इतै केस कारे फहराए
उत बदरा मन को भरमाए,
इत पग पैंजनि रूप बढ़ाए
उत चपला नर्तित लवलाए।
इतै गान चहुँ ओरनि छाए
उत पंछी उर मौन समाए,
चित्रित चित्र जगत मन भाए
अद्‌भुत लीला कौन कराए॥

•••

निहारति है

पल औ छिन आनन को निरखै
दिन अंत मैं रूप संवारति है।
बितवै पुनि पाख हुलसि भरी,
तब चन्द्रिका चारू दुलारति है।
गयो मास तौ आस निरास भरी
नित घूँघट के पट टारति है।
नव वर्ष लग्यो तबै देखन को
अटकी बट छाँह निहारति है॥

•••

डॉ. गया प्रसाद 'सनेही'
जन्म : 02 मार्च, 1957 (फतेहपुर)
शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), पी.एचडी.
लेखन : शोध-लेख, समीक्षाएँ, कविताएँ
संपादन : पाठ्य पुस्तकें, शालेय पत्र-पत्रिकाएँ
संप्रति : प्राचार्य, SRMY कॉलेज, फतेहपुर (उ.प्र.)
मोबा. : 9140878166

कश्मीर सुषमा

जागे भाग वसुधा के एक बार फेरि जब,
पावस की बूँद आँख मूँद आई धरनी।
इत से प्रसन्न द्रुम साल औ पलासन के,
उत से सँजोगी बिनु व्याकुल बिहरिनी।
गावत बयार गीत सा रे गा मा प ध नी के,
भाँगड़ा के नृत्य में प्रमत्त है डोगरिनी।
श्वेत-श्याम रतनार फूल खिले कचनार,
मानो कश्मीर की कुवाँरी भई बरनी।

•••

राधा- सौंदर्य

रजनीश-मुखी जहँ राधा टिकी, घर केचहुँ पास सदा उजियारो।
रवि-चंद्र में भेद लखात् नहीं, चकइन सो या भ्रम कौन निबारो॥
नीलाम भई रजनी दिन में, जब ते पुर में पूनम धारो।
व्रत टूट गए पुरवासिन के, पन्ना के बिन तिथि कौन विचारो॥

एक दिवस तिथि पूनम को, गृह से निकसी वृषभानु दुलारी
कान्ह को नागरि दस्तक दै, चढ़ि गई अपुनो अभिसार अटारी।
कान्ह बढ़े अनुवाक् कि राधा, पै राधा बढ़ि लखि देह बिहारी।
बिललाई गई राधा पूनम में, थकि हारे पै हेरि न पायो मुरारी॥

•••

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'
संगीत चिकित्सक एवं प्रशिक्षक, लेखक, रंगकर्मी
कृतियाँ : रजकनामा सहित अनेक पुस्तकें
संपादन : ब्रज के पर्वोत्सव, ब्रज स्वरांजली
संप्रति : मथुरा (उ.प्र.)
मोबा. : 9897247880

ब्रजवास

कबहुँ न छूटै ब्रजवास हमारौ।

या ब्रज कौ कन-कन अति प्यारौ,
लागत ब्रज-रज कन-कन प्यारौ,
या बिनु नहिं निस्तारौ।
'रजक' फिरै मारौ-मारौ॥

जेते रिस्ते-नाते वारे,
देखे सबहिं कुटुम्बी सारे।
स्वारथ बखत दिखत अति प्यारे,
भीतर-भीतर काजर कारे॥
इननैं सदा पछारौ।
इनैं न कोऊ प्यारौ॥

दुक्ख परे पै काम न आमें,
कारज बिनु आमतें सतामें।
सब सबके हैं निन्दक सारे,
भरमावत हैं सब बजमारे॥
'रजक' न दिखै सहारौ।
रज कन दिखै सहारौ॥

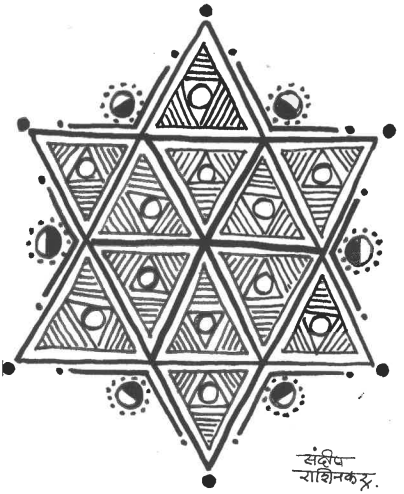
संदीप
राशिनकर.

लोक-मैत्रेय

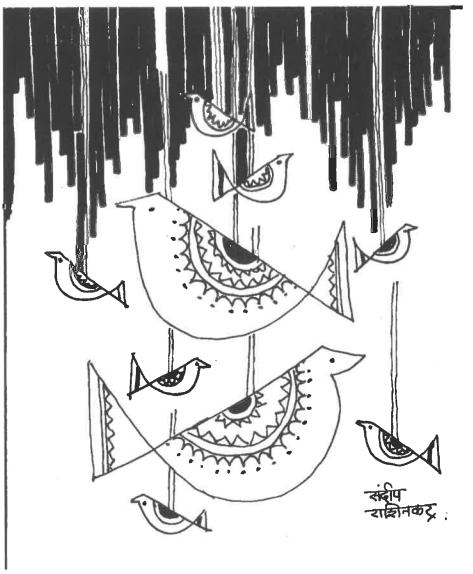

भोजपुरी/मगही-खंड

रचना-क्रम

1.	**डॉ. आरती पाठक** भोजपुरी/मगही भाषा- सामान्य परिचय	121
2.	**हरिलाल राजभर** तब जवानी डाँड़ बा	122
3.	**रेखा सिंह** घिर आये बदरवा/दहिया खा गईले हो/किसान	123-125
4.	**डॉ. उषा पाण्डेय** आज एगो प्रण/गंगा मइया	126-128
5.	**डॉ. स्वेता सिंह** पर्यावरण हरित करी	129
6.	**ऋचा प्रियदर्शिनी** पेड़ में अब न काट लोगन	130
7.	**श्रीमती सुधा पांडेय** विश्रांत के बजत बिगुल	131

भोजपुरी भाषा : सामान्य परिचय

- डॉ. आरती पाठक
अतिथि प्राध्यापक- साहित्य एवं भाषा
पं. रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर

उज्जैन से आकर बिहार में, राजा भोज के वंशजों के द्वारा बसाई गई राजधानी, भोजपुर के आधार पर यहाँ की भाषा का नाम भोजपुरी पड़ा। हिन्द-यूरोपीय भाषा परिवार की परंपरा में, मागधी अपभ्रंश से विकसित बिहारी भाषा समूह के अंतर्गत भोजपुरी आती है। यह हिंदी प्रदेशों में बोली जाने वाली, हिंदी की एक प्रमुख उपभाषा है।

इसके बोलने वाले बिहार, उत्तरप्रदेश, झारखंड, सहित देश के अनेक भागों में बसे हुए हैं। साथ ही भोजपुरी जानने-समझने वालों का विस्तार विश्व के सभी महाद्वीपों पर है जिसका कारण ब्रिटिश राज के दौरान उत्तरभारत से अंग्रेजों द्वारा ले जाए गए मजदूर थे, जिनके वंशज वहीं बस गये। इनमें सूरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, फिजी आदि देश प्रमुख है। भारत के जनगणना (2001) आंकड़ों के अनुसार भारत में लगभग 3.3 करोड़ लोग भोजपुरी बोलते हैं। पूरे विश्व में भोजपुरी जानने वालों की संख्या लगभग 4 करोड़ है। भोजपुरी प्राचीन समय मे कैथी लिपि में लिखी जाती थी। अब देवनागरी में लिखी जाती है। यह भोजपुरी बहुत ही सुंदर, सरस तथा मधुर भाषा है।

भोजपुरी भाषा में प्राचीन निबद्ध साहित्य यद्यपि अभी प्रचुर परिमाण में नहीं है, परंतु इसमें लोक मुखरित ग्रामगीत समृद्ध एवं प्रचुर मात्रा में हैं और वर्तमानकाल में अनेक सरस कवि और अधिकारी लेखक इसके भंडार को भरने में संलग्न हैं।

भोजपुरी में पूर्वी हिन्दी के कई भाषा-रूप पाए जाते हैं। इसमें करता कारक के परसर्ग, 'ने' का प्रयोग नहीं होता। प्रथम पुरुष सर्वनाम, 'मैं' केस्थान पर 'हम' का ही प्रयोग किया जाता है। भाषाशास्त्रीय दृष्टि से यह बांग्ला से संबंधित है, जबकि सांस्कृतिक रूप से हिंदी के साथ इसकी पहचान होती है।

भोजपुरी साहित्य में भिखारी ठाकुर का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उन्हें भोजपुरी का शेक्सपीयर भी कहा जाता है। इनके अलावा रघुवीरनाथ, महेंद्र मिश्रा, बाबू रघुवीर नारायण, मनोरंजन सिन्हा आदि का योगदान भी भोजपुरी के विकास में महत्वपूर्ण है।

हरिलाल राजभर
जन्म : 1 जुलाई, 1980
शिक्षा : 10वीं
विधा : गीत, ग़ज़ल, गीतिका, दोहा, कुंडलिया, सवैया चामर/पश्चचामर छंद
संप्रति : ग्राम-कुचहरा, पोस्ट-बिजपुरा, जिला मऊ (उ.प्र.)
मोबा. : 9452810049

ग़ज़ल

तब जवानी डाँड़ बा

प्यार नइखे गर जिया में, जिंदगानी डाँड़ बा,
रौब झाड़े चढ़ उतानी, तब जवानी डाँड़ बा ।।

लाज अउरी शान बाटे, आदमी में आब ही,
बे-हायाई में मिलावल, यार पानी डाँड़ बा ।।

दाग इज्जत में बिया, जिनके तनिक उनके बदे,
लाल पीला या गुलाबी, रंग धानी डाँड़ बा ।।

बाप आ भाई क पगिया, बोर दे जे चाल से,
घर अँटारी में पलल, बिटिया सयानी डाँड़ बा ।।

बाँट अँगना घर दुआरी, दुश्मनी भाई करें,
आज बड़ की गोतिनी, या देवरानी डाँड़ बा ।।

शोर जवना घर मचे ना, कंगना पाजेब से,
ओ घरे में भोर आ, संझा सुहानी डाँड़ बा ।।

बात नैना नैन में होवे न पावे प्यार से,
दिल लगावल आ सुनावल सब कहानी डाँड़ बा ।।

दूध नीयन स्वाद देले भोजपुरिया गीतिका,
'राजभर' अश्लीलता में गीत बानी डाँड़ बा ।।

रेखा सिंह
जन्म : बोकारो (झारखंड)
शिक्षा : बी.ए. (ऑनर्स)
लेखन : हिंदी/भोजपुर/मगही में
कविता, कहानी, रूपक, आलेख लेखन
कृतियाँ : मैं सिमट रह्यी हूँ /अनेक साझा काव्य संग्रह
संप्रति : खराड़ी, पुणे (महाराष्ट्र)
मोबा. : 9923637837

कजरी (भोजपुरी)

घिर आये बदरवा

रिमझिम बरसे बहार हो
सवनवाँ में घिर आये बदरा
घिर आये बदरा ऽ हो घिर आये बदरा
रिमझिम बरसे बहार
सवनवाँ में घिर आये बदरा
चंपा-चमेली खिले मोरी बगिया
अंगना गिरे रसधार हो
सवनवाँ में घिर आये बदरा ऽ
बनवा में नाचेलीं छम-छम मोरनी
पपीहा करेला गुहार हो
सवनवाँ में घिर आये बदरा ऽ
मेंहदी लगी मोरी गोरी कइर्लयाँ
झूला लगे डार-डार हो
सवनवाँ में घिर आये बदरा ऽ
झालर मोतिया शोभे मोर अंचरा
लहंगा पहनूँ मैं लहरदार हो
सवनवाँ में घिर आये बदरा ऽ
रिमझिम बरसे बहारे
सवनवाँ में घिर आये बदरा ऽ

●●●

दहिया खा गईले हो

चितचोर मोर दहिया खा गईले हो
चितचोर मोर दहिया।

मीरा के प्यारे, अजामिल को तारे
गणिका उबारे और गज को बचाये
अहिल्या के काया छुड़ाय दिहले
चितचोर मोर दहिया खा गईले हो।

मुरली के धुन पर गइया चरावे
सुदामा के तंडुल रुचि-रुचि खाये
अंगुरी पर पर्वत उठाय दिहले
चितचोर मोर दहिया खा गईले हो।

राधा संग रास रचे यमुना के तीरे
गोपियन के चीर, हरे धीरे-धीरे
सिक्कर से माखन चुराय लिहले
चितचोर मोर दहिया खा गईले हो।

- रेखा सिंह

•••

किसान

मेरा सैंया रे किसनवा जोतेला खेतवा

हल और कुदाल ले ले मुट्ठी में अनजशा
तपे दुपहरिया मे सैन्य के फरनवा
जोतेला खेतवा। मोर सैंया.....

धन -धन देशवा के पियर रंग माटी
धन तोहरी भाग गोरी सांवर रंग साथी
जोतेला खेतवा। मोर सैंया.....

बूँद-बूँद गिरेगा तन से पसीनवा
चैत्र चाहे जेठ हो अगहन महीनवा
जोतेला खेतवा। मोर सैंया.....

गरबे उतार चले गोरी के पैजनिया
सेवा करे माई के पुकारे मोहे धनिया
जोतेला खेतवा। मोर सैंया.....

कोयल कूहूक उठे भोर के बेरशा
बैल घंटी बाजे झूमे मोहा मनवा
जोतेला खेतवा। मोर....
मेरा सैंया रे किसनवा जोतेला खेतवा....

- रेखा सिंह

डॉ. उषा पाण्डेय
जन्म : 30 सितम्बर, 1955
शिक्षा : पी.एचडी. (मनोविज्ञान)
विधा : लघुकथा, कविता, दोहा, सोरठा, कुण्डलिया, चौपाई आदि
विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उपस्थिति
संप्रति : न्यू टाउन, कोलकाता

आज एगो प्रण

आज एगो प्रण लीही ले
अन्याय कबो ना सहब हम
चाहे कतनो बाधा आवे
तबो उपकार करब हम

दीन दुखी के सेवा करब
बड़ के कहल मानब हम
काम में कतनो देरी होवे
रिश्वत कबो ना देहब हम

आज से हम थैला राखब
प्लास्टिक कबो ना राखब हम
जेतना हो सकी, घर-बाहर
सफाई पर ध्यान देहब हम

पर्यावरण पर ध्यान देहब
पेड़ कबो ना काटब हम
गंगा नदी के साफ राखब
गंदगी कभी ना डालब हम

आज के पीढ़ी के
व्यसन के दुष्प्रभाव बताईब हम
व्यसन भारत से हटा के
व्यसन मुक्त भारत बनाईब हम

●●●

गंगा मइया

गंगा मइया, राउर जल पवितर
निरमल राउर धार
गंगा मइया, राउर के हम
गोड़ लागी बार बार

निकलीले राउर गंगोत्री से
भागीरथी कहाइ ले
अपना भक्त के मइया
सुख शांति दीही ले
अपना भक्त पर मइया
कल्याण हमेशा करी ले
उ माटी उपजाऊ हो जाला
जहाँ से राउर गुजरी ले
मोक्ष दीहीले रउआ
करीले पापी के उद्धार
गंगा मइया, रउआ के हम
गोड़ लागी बार बार

पवित्र राउर पानी मइया
रउआ हरदम बहत रही ले
शिवजी के जटा में गंगा मइया
रउआ निवास करीले
एह धरती पर आ के माँ
सबके दुख मिटाइ ले
जाह्नवी, मंदाकिनी आदि
कई नाम से जानल जाइ ले
राउर पूजा करी ले मइया
हम सपरिवार

गंगा मइया, रउरा के हम
गोड़ लागी बार बार

राउर महिमा के वर्णन
हम शब्द में कर सकत नइखी
राउर गुण के बखान
हम कर सकत नइखी
हमनी के कारण मइया
रउआ प्रदूषित होत बानी
हमनी के गलती से मइया
रउआ गंदा होत बानी
अपना गलती के हमनी के
माने के बानी तैयार
गंगा मइया, रउआ केहम
गोड़ लागी बार बार

मइया, माफ करी हमनी के
हमनी के बचन देत बानी
अब कभी गंगा में गंदा ना डालब
हमनी के प्रण लेत बानी
राउर सौन्दर्यीकरण पर
अब हमलोग देब ध्यान
रउआ के अब साफ राखब
राखब राउर मान
आपन कृपा बनवले राखब मैया
दी सबके खुशियाँ अपार
गंगा मैया, राउर के हम
गोड़ लागी बार बार

- डॉ. उषा पाण्डेय

डॉ. श्वेता सिन्हा
जन्म : सीतामढ़ी, बिहारी
शिक्षा : डॉक्टरेट (पर्यावरण) आई.आई.टी. धनबाद
सृजनी ग्लोबल की सह-संस्थापिका
संप्रति : आयोवा, अमेरिका

पर्यावरण हरित करी

आउ मिल कॅ वैश्विक अर्थव्यवस्था के हम-सब हरित करी,
एई बेरंग होइत पर्यावरण में फेर सॅ नूतन रंग भरी।

ग्लोबल वार्मिंग जे हो रहल भूमंडलनाशक ऐछ,
पेड़ के काटल जैला सॅ, स्थिति बन गेल नाज़ुक ऐछ।
तॅ आईं , मिल कर कौनो उपाय हम-सब त्वरित करी,
एई बेरंग होइत पर्यावरण में फेर सॅ नूतन रंग भरी।
विष-व्याप्त धुँआ आर अतिरेक ध्वनि प्रदूषण करैत ऐछ,
ठोस-अवशिष्ट, पॉलीथीन, धरा के दूषित करैत ऐछ।
तॅ आउ, बंजर होइत अपन धरती माँ कै फेर सॅ हरित करी,
एई बेरंग होइत पर्यावरण में फेर सॅ नूतन रंग भरी।
कल-कारखाना कॅ अवशिष्ट नदी के प्रदूषित करैत ऐछ,
नदी, पोखैर, झरना-ईनार के स्वाद अब बेस्वाद हो गेल ऐछ।
तॅ आउ, सुखाईत-दूषित नदी सब में स्वच्छ-शीतल जल भरी।
एई बेरंग होइत पर्यावरण में फेर सॅ नूतन रंग भरी।
तॅ चलु, पवन-चक्की, सौर-ऊर्जा, जैव-ईंधन के बुनियाद राखी,
जलविद्युत शक्ति, भू-ताप शक्ति से भविष्य निर्माण करी।
तॅ आउ, एहि नवीकरणीय शक्ति से एक नया युग निर्मित करी,
एई बेरंग होइत पर्यावरण में फेर सॅ नूतन रंग भरी।

●●●

ऋचा प्रियदर्शिनी
जन्म : 10 अक्टूबर (पटना)
शिक्षा : एम.एससी., एम.बी.ए.
कृतियाँ : नव सृजन/यादों के सिलसिले, काव्य धारा तथा कई साझा संकलन
संप्रति : भिलाई, दुर्ग (छ.ग.)
मोबा. : 9425242336

पेड़ के अब न काट लोगन

बेरहमी से कुल्ह पेड़ कटत बा
पर्यावरन संतुलन खो रहल बा
हवा भइल बा अब जहरीला
विषइल गैस से भर गइल दुनिया
धरती आप न गरम होत बा
हिमालय के बरफ पिघलत बा

पेड़ केअब न काट लोगन
जिंदगी अब बचाव लोगन
बिना पेड़ के होई अकाल
जन-जीवन होइहें बेहाल
वृक्ष रही त होई खूब बरसात
किसान खातिर बनी सौगात

भूमि-क्षरण के रोकेला पेड़
कटाव माटी के बचावे पेड़
ऊपरी परत बाची धरती के
बंजर होए न दी माटी के
खूब बढ़ी फसल-पैदावार
फैली तब समृद्धि अपार

पेड़ पर पक्षी बनावे नीड़
छाँव में मनुज भुलावे पीड़
पेड़ देवेला फूल और फल
मसाला,जरावन और रबर
बहुत उपयोगी होला पेड़
सच्चा साथी होला पेड़

एहीसे लगाव लोगन वृक्ष
खूब आशीष देइहें वृक्ष
बनाव इनका अपन साथी
सुख से रहब धरती वासी
अगर चाहल सुख समृद्धि
वृक्ष संख्या में कर बृद्धि।

●●●

सुधा पाण्डे
जन्म : 21 अप्रैल, 1961
शिक्षा : एम.ए. (हिंदी, शिक्षा-शास्त्र)
संप्रति : रक्षा अपार्टमेंट, एस.पी. रोड़, पटना
मोबा. : 9576424836

विश्रांत के बजत बिगुल

विश्रांत के बजत बिगुल ,
सबहिं छोड़ि के शांत रहल।
दरद रहले मन में असहनीय
शरीर से सहल न जाय।
अँखिया देखि के बेहाल
मन हमर हो गइल अशांत
आज दुनिया में देखनी ह इहै हाल
बदनवा अउ मनवा रखल रहे जोड़।

हथवा से धरनी हँ रास के
तभियो न मन रुकल ह अवरोध
दिशा हो गइल भ्रमित
कहाँ करबा विश्राम।
जनम-करम के लिखल मेल
दुःख-दर्द के सहला झेल।
मनहु न मानत रहल खेल
छुक-छुक चलत रहल रेल
जीवनवां म न पयनी आराम
चला रे इही काम
ज़मीन अ जीवन के इहे नाम,
अंत घड़ी तक मिली न आराम
करत रहा,चलत रहा
अंत घड़ी मिली विश्राम।

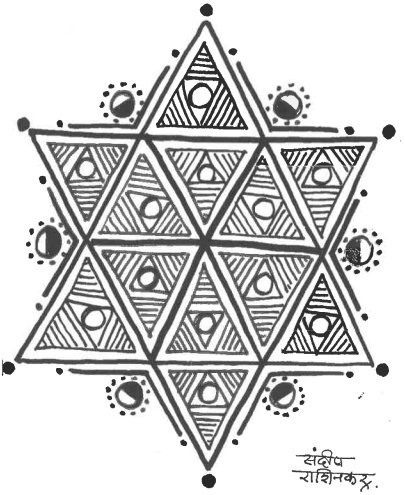
संदीप
राशिनकर.

लोक-मैत्रेय

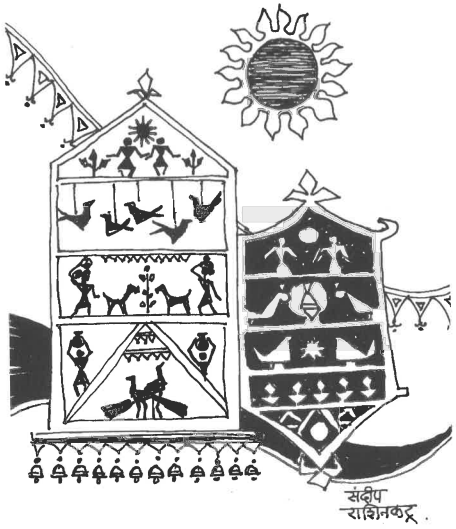

मालवी-खंड

रचना-क्रम

1.	**प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा** मालवी भाषा- सामान्य परिचय	135-136
2.	**नरहरि पटेल** कई गुमान करे/आज खेलो होरी/पूरब में सूरज उग्यो	137-139
3.	**सिद्धेश्वर सेन** यो हे म्हारो देस मालवो	140
4.	**डॉ. शशि निगम** जराक ऊने नी सोच्यो	141
5.	**श्रीमती ज्योति जैन** नयो भारत/निरात/न्हार कि मनक	142-144
6.	**सुषमा दुबे** एक कप चा	145
7.	**डॉ. ज्योति बैस** मालवा में कनागतों में संजा पर्व	146
8.	**श्रीमती निधि प्रीतेश जैन** ग़ज़ल बणी के	147

मालवी भाषा : उद्‌गम, स्वरूप और विशेषताएँ

- प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग/कला संकाय
कुलानुशासक, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

मालवा भारत का हृदय अंचल है, जिसने एक तरह से समूची भारतीय संस्कृति को 'गागर में सागर' की तरह समाया हुआ है। मालवा की परम्पराएँ समूचे भारत से प्रभावित हुई हैं और पूरे भारत को मालवा की संस्कृति ने किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है। 'मालवा' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'माल' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है ऊँची भूमि या उन्नत भू-भाग'।

मालवा क्षेत्र मध्यप्रदेश और राजस्थान की लगभग बाईस जिलों में विस्तार लिए हुए है। इन क्षेत्रों के दो करोड़ से अधिक निवासी मालवी और उसकी विविध उपबोलियों का व्यवहार करते हैं। वर्तमान में मालवी भाषा का प्रयोग मध्यप्रदेश के उज्जैन संभाग के नीमच, मन्दसौर, रतलाम, उज्जैन, देवास एवं शाजापुर जिलों, इंदौर संभाग के धार, झाबुआ, अलीराजपुर, हरदा और इन्दौर जिलों, भोपाल संभाग के सीहोर, राजगढ़, भोपाल, रायसेन और विदिशा जिलों, ग्वालियर संभाग के गुना जिले, राजस्थान के झालावाड़, प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़ जिलों के सीमावर्ती क्षेत्रों में होता है। मालवी की सहोदरा निमाड़ी भाषा का प्रयोग बड़वानी, खरगोन, खंडवा, हरदा और बुरहानपुर जिलों में होता है। मध्यप्रदेश के कुछ जिलों में मालवी तथा अन्य निटटवर्ती बोलियों जैसे निमाड़ी, बुंदेली आदि के मिश्रित रूप प्रचलित हैं।

लिखित साहित्य के पर्याप्त प्रमाणों केअभाव में किसी भी लोकभाषा के उद्‌भव और विकास क्रम को निर्धारित करना बेहद चुनौतीपूर्ण होता है। मालवी के पूर्व की भाषाओं- संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश में उपलब्ध साहित्य की गहरी छानबीन के उपरांत ही इसके उद्‌भव के संबंध में स्पष्ट मान्यताएँ बनी हैं। वर्तमान मालवी का उद्‌भव क्रमशः आवंती एवं पैशाची प्राकृत तथा आवंती एवं पैशाची अपभ्रंश के मिश्रित रूप से हुआ है। उज्जयिनी वृत्त, जहाँ वर्तमान में आदर्श मालवी बोली जाती है, की मालवी आवंती से जन्मी है तो उज्जयिनी वृत्त से बाहर की मालवी पैशाची से संभव है मालवी 700 ई. के आसपास अपभ्रंश केआवरण में विकसित होने लगी होगी।

मालवी का केन्द्र उज्जैन, इंदौर और उसके आसपास का क्षेत्र है। इसी मध्यवर्ती मालवी को आदर्श या केन्द्रीय मालवी कहा जाता है, जो अन्य निकटवर्ती बोलियों के प्रभाव से प्रायः अछूती है। केन्द्रीय या आदर्श मालवी के अलावा मालवी के कई उपभेद या उपबोलियाँ भी अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। यथा - 1. केन्द्रीय या आदर्श मालवी 2. सोंधवाड़ी 3. रजवाड़ी 4. दशोरी या दशपुरी 5. उमठवाड़ी 6. भीली। केन्द्रीय मालवी को मानक मालवी कहा जा सकता है। इसकी कुछ विशेषताएँ - इसमें हिंदी की पारंपरिक ध्वनियाँ – ऋ, ॠ, ऌ, क्ष, त्र, ज्ञ, औ, ऐ, ङ, ञ, अः अप्राप्य हैं।

मालवी की स्थानापन्न ध्वनियों में - रि, री, ल्ह, लर, च्छ, क्छ, तर, ग्य, ओ, ऐ, अम्, गं, यं, अह, ख गिनाई जा सकती है।

इसमें 'ओ' कार बहुल प्रवृत्ति पाई जाती है। सामान्यतः 'आ' कारान्त शब्दों को 'ओ' कारांत उच्चरित करते हैं। यह एक वचन का द्योतक होता है। यदि 'आ' कारांत शब्द का प्रयोग होगा तो वह बहुवचन का सूचक होता है। उदा.- 'गड्ढे' का मालवी एकवचन 'खाड़ो' तथा बहुवचन 'खाड़ा' या 'खाड़ाना' होता है। कुछ अन्य उदाहरण हैं- घोड़ो, रामो, लाड़ो, घड़ो आदि।

मालवी लोक-साहित्य की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। मालवा का लोकमानस शताब्दी-दर-शताब्दी कथा-वार्ता, गाथा, गीत, नाट्य, पहेली, लोकोक्ति आदि के माध्यम से अभिव्यक्ति पाता आ रहा है।

मालवी में लोक के साथ अभिजात साहित्य का भी पर्याप्त विकास हुआ है। उसमें मालवा की लोक-संस्कृति की सहज और निश्छल अभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं। यह साहित्य सदियों से मालवा के लोकमानस को प्रतिबिम्बित करता आ रहा है।

केन्द्रीय मालवी, रजवाड़ी और सोधवाड़ी सहित मालवा के छह प्रधान बोली रूप अपना विलक्षण स्थान रखते हैं। केन्द्रीय मालवी में जहाँ आधुनिक रचनाधर्मिता का उन्मेष दिखाई देता है, वहीं सोंधवाड़ी, रजवाड़ी आदि उपबोलियों का लोक-साहित्य अत्यंत विपुल है। इन उपबोलियों में अनेक रचनाकार भी सक्रिय हैं। सुदूर अतीत से आती हुई परम्पराओं और जातीय स्मृतियों को इन सभी का लोक-साहित्य सदियों से सुरक्षित रखे हुए है।

साईंनाथ कालोनी, उज्जैन (म.प्र.)
मोबाइल - 98260 47765

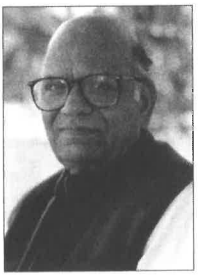

नरहरि पटेल
जन्म : 2 जनवरी, 1934
मालवा के गीतकार, लोक संस्कृति मनीषी, समीक्षक, वरिष्ठ रंगकर्मी एवं कवि
कृतियाँ : थोड़ी घणी/सिपरा के किनारे/गुलमोरी धरती आदि
संप्रति : मालव मंगलम, 30 साकेत, इन्दौर (म.प्र.)
मोबा. : 9926560881

आज खेलो होरी

सब हिल मिल आज खेलो होरी
सब हिल मिल

अद्‌बूड़ा ने बूढ़ा आड़ा
बणग्या हे छोरा छोरी

गेंद गुलाबी रूप लजीली
मान करे क्यूं ये गोरी

फागण तो रंगरेज हठीलो
रंग दिया अंगो ने चोली

बिरहण ऊबी पीहर कॅवरे
मन में भरम भर्यो भोरी

रंग की मटकी सीस धरी जद्‌
कान्हा ये झटपट फोरी

तन तो होरी चोड़े खेले
मन खेले चोरी चोरी

मन गेर्या ने जो बाँधी दे
बाँधो प्रीत की वा डोरी

●●●

पूरब में सूरज उग्यो

पूरब में सूरज उग्यो रे
अबे वेगा वेगा चालो

आलस की उठो अबे नींद भगइदो
हिम्मत की उठो अब नींव भरइदो
गई रात गइ, रात तारो डूब्यो रे
अबे वेगा वेगा चालो
पूरब में सूरज उग्यो रे
अबे वेगा वेगा चालो

पीपल का पान सी आई परबाती
कमलणी का ब्याव सारु जाग्या रे बराती
विंध्या का माथा पे चंदन उग्यो रे
अबे वेगा वेगा चालो
पूरब में सूरज उग्यो रे
अबे वेगा वेगा चालो

धूम मची बैल गाय घंटी टंकार की
झिंझिमिझण झिंझिमिझण झांझर झणकार की
धूल उड़ी धूप में के कंकू उड़्यो रे
अबे वेगा वेगा चालो
पूरब में सूरज उग्यो रे
अबे वेगा वेगा चालो

गाम गाम गूँजी हे कान्हा की बाँसुरी
लकुटी लो हाथा में काँधा पे कामरी
धरती की छाती को धीरज डग्यो रे
अबे वेगा वेगा चालो
पूरब में सूरज उग्यो रे
अबे वेगा वेगा चालो

- नरहरि पटेल

●●●

कई गुमान करे

कई,गुमान करे हे तू,
एकदन माटी में मिल जायगा

खोटा करम की कलम से पापी
लेख लिख्या हे कारा
रंगमेहल ने माल खजाना
मिट जायेगा थारा
जुलम करी ने बाग लगाया
जेहर का फल पावेगा
माता की बस हाय से
जल बल सब गल जायेगा

चौखम्बा की नींव सुलाई
क्यूँ कन्या की काया
जनम जनम तू सोई नी सकेगा
सुण पापी हत्यारा

जनता तो माता है राजा
करुणा की हे धारा
माता अब चामुण्डा बणगी
सुण बैरी हत्यारा

- नरहरि पटेल

माच गुरु सिद्धेश्वर सेन
जन्म : 1922, रंगवासा, इंदौर

गुरु-ग्रंथों से प्रेरणा पाकर, पंद्रह वर्ष की आयु में, 'राजारिसालु' नामक माच की रचना की और जीवन में 31 माच रचे और 'मालवा लोकनाट्य माच-मंडल की स्थापना की। देशभर में माच का परचम लहराने वाले, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित, माच-गुरु सिद्धेश्वर सेन के जीवन की यवनिका का पतन 16 जनवरी 2002 को हुआ।

यो हे म्हारो देस मालवो

यो हे म्हारो देस मालवो, मइमा याँ की मोटी

जंगल जंगल में मंगल, पग पग पे पाणी रोटी
मन का भोला-लोग बसे हे, बात करे नी खोटी
भील भीलाला बन का वासी पेरे एक लंगोटी
मक्का का टापू खइ खइने, छाच पिवे दो लोटी

कंचन जेसी घरती देखे, फड़के बोटी बोटी

चली गाम की गोरी देखो, गुँथी हे लंबी चोटी
मच्छी जोड़ो कमर कंदोरो दोई कान में टोटी
पनघट नीर भरे पनीयारी, कोई मोटी कोई छोटी

'सिद्धेश्वर' मालव की ममता मेनत भरी कसोटी

●●●

डॉ. शशि निगम
जन्म : 14 जुलाई, 1957
शिक्षा : एम.ए. (हिंदी, इतिहास, समाजशास्त्र), बी.एच.एससी., पीएचडी.
कृतियाँ : दो शोध ग्रंथ/लघु कथाओं का मालवी अनुवाद
संप्रति : एरोड्रम रोड़, इन्दौर (म.प्र.)
मोबा. : 7879745048

नी सोच्यो

झाड़ का अने मनक होण को,
नातो हे जूनो-पुराणों।
ऊका महात्तम के फेर क्यों,
अबे तलकनी पेचाण्यो।
ऊकसेज भोजन,
ऊकसेज पाणी,
हम साँस लई रिया,
ऊकीज मेरबानी।
देवता सई, जीवन दाता पे,
कर्या घात पे घात।
एसा खोटा करम करी के ऊने,
कर्यो अपणो जीवन बरबाद।
अपणा पग पे उने मारी एसी कुराड़ी,
के पीढ़ी दर पीढ़ी ऊकेज,
चुकाणी पड़ेंगी कीमत भारी।

धन-दोलत का मद में ऊ,
अपणा होंस खोई बेठ्यो।
जीनी डाल पे बेठ्यो,
ऊनी के डाल के काट्यो।
अपणी शान अने शौकत में ऊने,
जंगल-माल होण काट्या।
नी सोच्यो ऊका बदले,
नरा-नरा झाड़ लगई दाँ।
अपणा बेटा के कोई,
निरदयता ती काटे।
कँई बीतेगी हिरदा पे ऊके,
जराक ऊने नी सोच्यो ?

•••

श्रीमती ज्योति जैन
जन्म : 21 अगस्त, 1964
शिक्षा : स्नातक
विधा : कहानी, कविता, लघुकथा, उपन्यास, आलेख
कृतियाँ : 12 पुस्तकें प्रकाशित/पाँच अनुवादित / पाठ्यक्रमों में रचनाएँ।
संप्रति : नंदानगर, इन्दौर (म.प्र.)
मोबा. : 9300318182

नयो भारत

मजदूराँ के मिले मेनत को धन ।
सुखी होवे सगला किरसाण जन।
अपढ़ कोई नी रेवा पावे।
असीज कसम हम सगला खावाँ।
असोज नयो भारत बनावाँ।

जाति भाव छोड़ी ने आवो।
प्रांत भाव छोड़ी ने आवो।
सगला मलि जुली ने रेवाँ
आवो आगे यो देश बढ़ावाँ।
असो नयो भारत बनावाँ।

फेल्यो भ्रष्टाचार,ने खोटा करम।
रोई रिया ईमानदार हिंद जन।
देश पर छई रिया संकट का धन।
आवो सगला साथ मलि ने,
यो संकट सब आज मिटावाँ,
असो नयो भारत बनावाँ।

•••

निरात

कई बाई ! तू भी नी, घणा सवाल पूछे म्हने, ने कल्याणी ने कतरी बार तो बतायो.. एक दाण ठीक ती सब समझ ले। सतरा सो-साठ बार तो पूछ लियो.. रामी भुवा के छोरा को ब्याव को कार्यक्रम। टेम-टेम पे ले चलाँगा थारे। जरा निरात तो रख।

भुनभुनातो बेटो बोले जई रियो थो। हाल म्हारे दफ्तर का वास्ते देर हुई री। कल्याणी ! उने लुगाई के कियो... 'बाई के सगलो कार्यक्रम जरा एक दाण और बता दे।'

ने अब बार-बार मत पूछजो बाई। केतो-केतो बेटो बाहर निकली ग्यो।

बाई की आँख्याँ भर गी। आजकल कई याद नी रे... सब भूलती जईरी। पण कना कतरा बरस पुरानी बाताँ याद रे गी...। योज मुन्नो दनभर सो-सो बार पूछतो थो... 'बाई... बताए नी म्हारे ! तितली को रंग हाथ में क्यों लग ग्यो ! वा पीला रंग ती होली खेले कई ! बाई.. हम मंदिर जाएँ तो भगवान बोले काय नी ! ने भगवान सुने कई ! ने भाटा का भगवान खाए किस्तर !'

दन भर सवाल चलता..ने वा लाड़ लड़ाती...हँस हँस के माथा पे हाथ फेरती, सगला को जवाब देती।

बाई की आँख्याँ सब याद करी ने गीली हुईगी..। ने आँख्याँ के आगे आता धुँआ मे भी सब सवाल दिखी रिया था..। ने अब वा निरात ती लेटी गी..।

- श्रीमती ज्योति जैन

न्हार कि मनक

वणी बंद किवाड़ का पीछे ती सुबकवा की आवाज सुणी तो कमला जीजी जरा शंका मे पड़ी गी। जराक धीरप ती वा आवाज आती कमरा का माय जावा लागी।

नरा दन ती बंद पड़यो कोठार जसो कमरो लाग रियो थो, ने बत्ती बी कोनी थी।

सूरज दादा को चन्योक सो उजास कमरा का माय अई रियो थो।

भीत्तर झाँक्यो तो एक छोरी हाबली-गाबली हुई ने गोड़ा मा माथो दई ने रोई री थी।

'कूण हे छोरी ! कई हो ग्यो ! काए वास्ते रोई री!' जीजी ने सगड़ाई सवाल एक साथे पूछ्या।

पण छोरी ने जिस्तर ई मुँडो उपर कर्यो जीजी तो चौंकी गी अरे! तू ...! तू तो वा कांति हे ! जिने दँराता ती उ मोटा न्हार के मारि न्हाक्यो थो। थारे तो काले अपणी राष्ट्रपति जी ती इनाम मिलवा वालो हे नी! याँ कई करि री ! ने किने थारी या हालत....ओ म्हारा देव !

सगली बात समझी ने उनका मुँडा ती चीख निकल गी...ओ म्हारा देव ! बापड़ी का साथे यो कई वे ग्यो

वे कई केती उका पेलेज बुक्को फाड़ी ने रोती कांति, जीजी की छाती ती लिपटी गी - 'हौ मेडम जी ऊ मोटा न्हार के तो म्हने मारि न्हाक्यो। पण मनक ती नी बच सकी। ऊतो न्हार ती बी बड़ो नरभक्षी निकल्यो।'

-श्रीमती ज्योति जैन

सुषमा दुबे

संप्रति : विजय नगर, इन्दौर (म.प्र.)
मोबा. : 8982372410

लघुकथा

एक कप चा

काका जी तम जगदिसिया सारू छोरी देखने गया था कसी लगी छोरी ?
नाना छोरी तो घणी अच्छी है, पण..
पण कई काकाजी ! लंबई में कम है कई, अपना लंबा पूरा जगदिशिया से !
नी रे नाना अच्छी लांबी पूरी, दुबली पातली छोरी है। पण..
पण कई काका जी, भणी लिखी नी है कई !
नी रे नाना आखी 15 किलास भणी है।
तो दान दहेज में आनाकानी करी रिया कई !
नी रे नाना 5 भई का बीच में एकज बेन है। घणों मालदार परिवार है मकान, खेत जमीन, ढोर-डांगर, जीप-टेक्टर सब लमसम है। दहेजतोघणो देगा। पण...
तो काका जी परिवार में कोई ऐब-चेब है कई !
कई एब मिले ने चेब.. पण
तो तमारी आवभगत में कई कोर कसर राखी !
ऐसी बात नहीं है रे ! उनने तो म्हारे दाल बाटी, लाडू, पनीर की सब्जी, लस्सन की चटनी, कड़ीचार तरे का पापड़ अचार सब जिमाया वी भी मनवार करी करी ने, पण ..यार नाना हूँ वाँ की जगे आखा चार घंटा रुखियो पण... भया जी का विनने म्हारा से एक कप चा को भी नी पुछियो। अबे तू बता ऐसी जगह छोरा के कसे परानई दाँ।

डॉ. श्रीमती ज्योति बैस
जन्म : 07 मई, इन्दौर
शिक्षा : एम.ए. (हिंदी/राजनीतिशास्त्र), पीएच.डी.
विधा : कहानी, कविता, लघुकथा, फुटकर लेख।
संप्रति : उज्जैन (म.प्र.) मोबा. 8770098231

मालवा में कनागतों में संजा पर्व

हमारा मालवा में एक केवात हे, 'सात वार ने नौ तेवार', यानि जितरा दन उकसे ज्यादा तीज-तेवार हम मनई लाँ, उत्सव प्रिय जो ठेरिया। ऐसोज एक पर्व कनागतों में मालवा ने आसपास का क्षेत्रों में मनायो जाय, संजा यानि 'संध्या' पूजन। कुँवार कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से लई ने अमावस लग घर की दीवार पे गाय का गोबर से लीपि के रोज अलग-अलग आकृतियों से संजा बनाय ने फूल-पत्ती से सजाय। साँझ ढले उकी आरती ने पूजन करिके कुँवारी छोरी हुन संजा से भोत अच्छी जगे ब्याव की कामना करें।

संजा को ऐतिहासिक पक्ष प्रमाण की कमी से लोकगीत पे आधारित है, जिमे उकी छवि एक सीधी-सादी, मासूम सी छोरी की दिखे जिमे जिंदगी का नरा रंग शामिल है। संजा गीत अटपटे शब्द ने आवाज वाला बाल-गीत है, जो हमारो ध्यान अपनी तरप खींच ही ले हे। रोज आरती का बाद सबसे मजेदार भाग होय, परसाद बाँटनो, जिकमे सरलता से उपलब्ध भुट्टे केदाने, जामफल से लई ने चना-चिरोंजी तक होय, जिके बाँटवा का पेला परीक्षा होय नाक की सूँघवा की शक्ति की, कान की आवाज का माध्यम से पेचानने की, ने आँख की परखने की शक्ति की, कि कौन सो खट्टा, मीठा या चरका परसाद बंटेगो।

हमारा तीज-तेवार जीवन मे आनन्द लाय, संजा भी सोलह दन तक आनन्द बिखेरी के विदा हुई जाय। मीठी मालवी बोली को प्यारो सो संजा गीत:-

संजा तो माँगे हरो हरो गोबर। काँ से लाऊँ भई हरो हरो गोबर॥
किसान घरे जाउँ, वाँ से लाऊँ। ले भई संजा हरो हरो गोबर॥
संजा तो माँगे लाल-पीला फुलड़ा। काँ से लाऊँ भई हरा-पीला फुलड़ा॥
माली घरे जऊ, वाँ से लाऊँ। ले भई संजा हरा-पीला फुलड़ा॥

श्रीमती निधि प्रितेश जैन
जन्म : 24 फरवरी, 1974
शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), प्राकृत भाषा में डिप्लोमा
विधा : कविता, लघुकथा, समीक्षा, रेडियो एवं फ़ीचर लेखन
कृतियाँ : यादों के दस्तावेज, हौसले का हुनर,
रेवा में बहते मयूर पंख
संप्रति : बैंकुंठ धाम कालोनी, इन्दौर (म.प्र.)

गज़ल बणी के

वक्त से पेला हादसा से लड्यो हूँ
जमाना से नी म्हे म्हारी उम्र से बँध्यो हूँ

कुण जाने किस तर जुटाती थी वा
म्हे जी से दूध रोटी सारू लड्यो हूँ

नी वणी ने फिकर नी म्हने गरज हे
ऊअपणी पे म्हे अपणी बात पे अड्यो हूँ

नी कदी अई वा घड़ी मुलाकात की
कदी चाँदनी के कदी रात के रोकी खड्यो हूँ

गिरूँगा नी कदी, चोटी पे पोच केज दम लूँगा
पग से नी, मन का हौसला से मगरी पे चढ्यो हूँ

ठोकर नी लगी जाय सरकई दीजो म्हने
कदी भी रस्ता को भाटो बणी पड्यो हूँ

अक्षर-निधि बणी के कागद पे छपी जाऊँगा
ग़ज़ल बणी के दिल में गेरो गड्यो हूँ।

•••

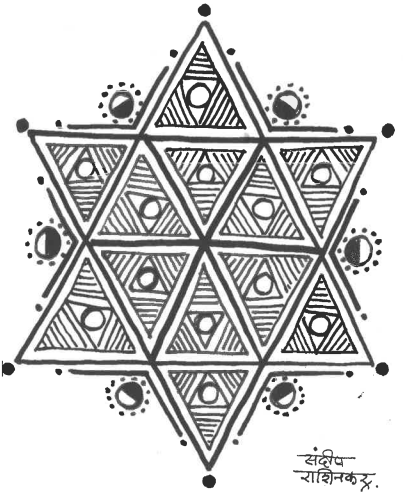
संदीप
राशिनकर.

लोक-मैत्रेय

राजस्थानी-खंड

रचना-क्रम

1. **डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'**
   राजस्थानी भाषा- सामान्य परिचय — 151-155
   जंग ओ जीत्यां सरसी रे/
   इतरा मत इतराओ/ जगत में

2. **पवन पहाड़िया**
   लघुकथाएँ (आँत/दानी/छाप) — 156-158

3. **शिवचरण सेन 'शिवा'**
   भाईला/म्हारा गाँव में/मन कै भीतर — 159-161

4. **प्रहलाद सिंह झोरड़ा**
   म्हारा भारत रै / बचाओ पाणी रे/ — 162-164
   मन री बांता

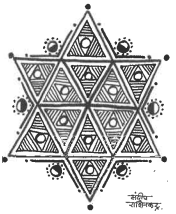

राजस्थानी भाषा : एक परिचय

- डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'
सह-आचार्य (हिंदी विभाग)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुजानगढ़

राजस्थान भारतवर्ष का एक विशिष्ट, विख्यात और विशाल प्रांत है। यहाँ का साहित्य और संस्कृति अत्यंत प्राचीन, प्रशस्त एवं पुष्कल है। इस विशाल मरुप्रदेश की एक ही भाषा थी - राजस्थानी, जो प्राचीन युग में मरुभाषा और बाद में डिंगल नाम से प्रसिद्ध हुई। मरुभाषा का उद्भव विक्रम की नवीं शताब्दी से सिद्ध होता है। राजस्थानी आर्यभाषा परिवार की एक प्रमुख भाषा है। इसका खुद का अपना परिवार है। इसमें राजस्थानी आर्य परिवार की 70 से अधिक बोलियाँ सम्मिलित हैं, जिनमें मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूंढ़ाड़ी, हाड़ौती, मेवाती, वागड़ी, शेखावटी, बागड़ी, भीली, पहाड़ी एवं खानाबदोसी प्रमुख हैं। जहाँ तक राजस्थानी भाषा परिवार के भौगोलिक क्षेत्र की बात करें तो आज का सम्पूर्ण राजस्थान, दक्षिण में सतपुड़ा एवं ताप्ती नदी तक का क्षेत्र, पूर्व में केतकी नदी के ऊपरी क्षेत्र से पश्चिम में ऊमरकोट सहित सिंधु नदी तक का पाकिस्तानी क्षेत्र समाहित है।

राजस्थानी भाषा की सभी बोलियों की मूल प्रकृति संरचनात्मक स्तर पर एक समान है। राजस्थानी ओकारान्त प्रधान भाषा है। हिंदी में 'घोड़ा' शब्द एकवचन होता है पर राजस्थानी में 'घोड़ा' बहुवचन होता है तथा 'घोड़ों' एकवचन होता है। राजस्थानी की सभी बोलियों में वर्तमानकालिक निश्चयार्थक सहायक क्रिया के लिए ढूंढ़ाड़ी (जयपुरी) तथा हाड़ौती में 'छै' एवं अन्य सभी बोलियों में 'हे' का प्रयोग होता है पर विभक्ति-प्रत्ययों में कोई भेद नहीं है। संयुक्त काल की क्रिया संरचना में भी राजस्थानी की सभी बोलियाँ एक सूत्र में बंधी हुई हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी में वर्तमान अपूर्ण निश्चयार्थक काल की मुख्य क्रिया लिंग-वचन से प्रभावित होती है वहीं राजस्थानी की सभी बोलियों में प्रस्तुत काल की मुख्य क्रिया लिंग-वचन से प्रभावित न होकर पुरुष वचन से प्रभावित होती है। इस दृष्टि से राजस्थानी भाषा की बोलियाँ वैदिक संस्कृत के निकट है।

राजस्थानी के शब्दों का उच्चारण करते वक्त उदात्त एवं अनुदात्त ध्वनियों में फर्क रखते ही अर्थ परिवर्तित हो जाता है। उदात्त के लिए संकेत स्वरूप लोपक चिह्न

(') प्रयुक्त किया जाता है, जैसे - नारी (स्त्री) एवं ना'री (शेरनी), कान (कर्ण) एवं का'न (कृष्ण), कोड (खुशी) एवं को'ड (कुष्टरोग) आदि। इसी तरह 'ल' दन्त्य ध्वनि है तथा 'ळ' मूर्धन्य ध्वनि है। 'ल' के स्थान पर 'ळ' के स्थान पर 'ल' का प्रयोग करते ही अर्थ बदल जाता है। जैसे - पोल (थोथ) एवं पोळ (दरवाजा), बोलो (कहिए) एवं बोळो (बहरा) आदि।

राजस्थानी भाषा का अपना शब्दकोश, व्याकरण, छंदशास्त्र, काव्य शास्त्र, लोककथा कोश, लोकगीत कोश एवं कहावत कोश हैं। अन्य भारतीय भाषाओं में राजस्थानी का समानान्तर शब्द कोश है। सीताराम लालस का लगभग सवा दो लाख शब्दों वाला 'राजस्थानी शब्दकोश' तो भारतीय भाषाओं में अद्वितीय माना जाता है। अमेरिका की 'लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस' ने राजस्थानी को विश्व की तरेह समृद्धतम भारतीय भाषाओं में से एक माना है। शिकागो, मॉस्को, कैम्ब्रिज, लिडन सहित विश्व के तीन दर्जन विश्वविद्यालयों में राजस्थानी साहित्य के अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है। राजस्थानी भाषा की हस्तलिखित पांडुलिपियों की संख्या लगभग पांच लाख है। जो ग्रंथ भण्डारों एवं निजी संग्रहालयों में हैं। राजस्थानी भाषा बोलने वालों की संख्या प्रदेश, देश एवं विदेशों में मिलाकर लगभग दस करोड़ से अधिक है। सन् 2011 की जनगणना में राजस्थान में 4.83 करोड़ लोगों ने अपनी मातृभाषा राजस्थानी दर्ज करवाई है। वर्ल्ड पोएट्री फैस्टिवल एवं सार्क देशों में भी राजस्थानी काव्य पाठ व संगीत के कार्यक्रम होते हैं। नेपाल में एक स्वतंत्र भाषा के रूप में राजस्थानी मान्यता प्राप्त भाषा है। इस भाषा की प्राचीन लिपि का नाम 'मुड़िया लिपी' था किन्तु वर्तमान में यह देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती है। विडम्बना की बात है कि ऐसी समृद्ध एवं स्वतंत्र भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनूसूची में मान्यता नहीं है। इस भाषा के साहित्य का सम्यक अनुशीलन वृहद स्तर पर हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के लिए बहुत उपयोगी होगा, इस दिशा में विद्वानों को आगे आना चाहिए। अस्तु।

सुजानगढ़ (राज.)
मो. 9414587319

डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'
जन्म : 15 मार्च, 1972
शिक्षा : एम.ए. (हिंदी) स्लेट, पीएच.डी.
कृतियाँ : अखरावता आखर/अंतस री आवाज / सबद-सारंग /साख अर संवेदना आदि
अनुवाद /संपादन: 2/6 ग्रंथ
संप्रति : सह-आचार्य, जी.एच.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुजानगढ़ (राज.)
मोबा. : 9414587319

इतरा मत इतराओ

इतरा मत इतराओ लाला।
इतो ताव मत खाओ लाला।

ताती चीज ताळवो बाळै, ठार-ठार कर खाओ लाला।
गुण एहसान बिसारो मत ना, माथै राम रखाओ लाला॥

आती जाती रहै अमीरी, मत गरबो पछताओ लाला।
गा-गा जीभ जाँघ री गाथा, मत ना काख पिदाओ लाला॥

जाण समै अनुकूल जगत में, प्रेम-फसल पनपाओ लाला।
जे चाओ सुख-चैन सदीनो, खरी कमाई खाओ लाला॥

कुण जाणै कद पासो पलटै, बैर-बीज मत बा'ओ लाला।
स्वारथ-शंख सुणीजै सांप्रत, उण मारग मत जाओ लाला॥

दुख साटै तो दुख ही मिलसी, सुख बाँटो, सुख पाओ लाला।
'गजादान' कर जोड़ गुहारै, सत रै पंथ सिधाओ लाला॥

●●●

जंग ओ जीत्यां सरसी रे

अंधियारै नैं लख अड़वड़तो, कतइ न दुख्ख करीजे।
हाय मर्यो रे होय मर्यो म्हैं, सबद न मुख्ख धरीजे।
आसा-दीप चसा घट चात्रक, तम खुद डरसी रे।
रात रै गात पळै परभात, रात नैं बीत्यां सरसी रे।
जंग ओ जीत्यां सरसी रे.....

आ है आदू रीत अँधारो, ढळतां जोर दिखावै।
अनुभव-दीप अंजसै मन में, रह-रह नाड़ हिलावै।
पूगै तम पाताळ प्रथी, रवि जाजम ढळसी रे। रात रै गात....

पत्ता झड़ता लख पतझड़ में, रूंख न आंसू ढाळै।
सूखी डाळ देख नहीं सुबकै, गम में गात न गाळै।
सद आछो संदेश पेड़ पाछो पांगरसी रे। रात रै गात.....

कइ पाका फळ झड़्या बीछुड़्या, कइ कळियां कुम्हळाणी।
तन मन दुख छायो तरुवर रै, रो-रो जूण बिताणी।
फिर बेलां फूलां छाई लख, दुख्ख बिसरसी रे। रात रै गात....

महामारी मिट भळै मुलक में, होसी रंग-उमंग।
होसी जाजम ढाळ हथायां , हेत तणी हुड़दंग।
मंडसी ब्याव-उछाव मगरिया, मेळा भरसी रे। रात रै गात....

पल पल रूप बदळती परकत, ओ संदेश सुणावै।
दुख लारै सुख आवै यूं ज्यूं, आँधी लारै मेह आवै।
रखसी बात पात री राघव, सांसो हरसी रे। रात रै गात.....

- डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'

जगत में

कूड़ो हाहाकार जगत में।
मतलब री मनवार जगत में।

धीर धरम री फटी धजावां, पसर्यो पापाचार जगत में।
प्रतिभा, हुनर पड़्या पसवाड़ै, काम करै कलदार जगत में।

सब नैं भावै माल सींत रो, स्वारथियो सतकार जगत में।
दाई-फत्ती भेळी दीखै, बिल्कुल बंटाधार जगत में।

बिनां बात ठूँठीजै बिदकै, तीसूं दिन तकरार जगत में।
पुरस्कार पावण हित पड़पँच, रचणो अब रुजगार जगत में।

खुद नैं खुदा, सेस नैं बानी, समझै बरखुरदार जगत में।
उल्लू कह आँधो दिनकर नैं, देख बळत बोपार जगत में।

सरपां रै ब्यावां में कोरी, जीभां री लपकार जगत में।
मन जी तन जी मरता देख्या, इक धन जी रै लार जगत में।

'गजादान' क्यूं कुबध कमावै, है जीणो दिन चार जगत में।
कूड़ो हाहाकार जगत में, मतलब री मनवार जगत में॥

- डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'

•••

पवन पहाड़िया
जन्म : 09 जून, 1955
विधा : गद्य/पद्य
कृतियाँ : बधाऊड़ौ/नीतर्यो-नीर/तीजो-रूप/झपीड़/
सार-सतसई आदि तथा दर्जन भर बाल साहित्य
सहित 16 कृतियाँ।
संप्रति : डेह (नागौर) राजस्थान
मोबा. : 9414864009

दानी

पाँच हजार ई तो लिया हा बापजी ! हाल तो पूरा तीन बरस ई कोनी हूया। इयान क्यूं मारौ ? कीं तो गरीब कानी देखो। दस हजार रिपिया कठै सूं ल्याऊं म्हें ?

'म्हनैं कांईठा कठा सूं ल्यावै ! टापरो बेच। ठीकरा बेच। म्हनैं तो पण रिपिया चुकाणां पड़सी।'

'कीं तो बापजी भगवान कानीं देखो ! थें नित मिंदर जावो, तिलक-छापा करो। कबुड़ा नें दाणा न्हाको, लोग दिखाऊ तो धरम करो अर म्हारै जिस्या गरीब रै टाबरां नें रुळओ ! आ ई बात आपरै धरम मांय लिख्योड़ी है कांई ?'

'माँगतोड़ा पइसा तो देवणा ई पड़सी। पैलां लिया ई क्यूं हा ? रैयी धरम री बात तो उण में लिख्योड़ो है क 'जवो अर जीवण दयो 'अर ईं मारग माथै ई चालां हां। दान-पुन्न में पाछ नीं राखां। कठै ई काम पड़ो पानड़ी पेली चढ़ावां।'

बो मन ई मन सोच रियो हो - धिन है भगवान ! थारी लीक चालणियाँ नें। एक रो टापरो उठा' र दूजां ने दाणा चुगावै। वाह रै दान्यां ! वाह रै भगतां....!

आँत

दिनूगै दिनूगै नित का ई बारणै मुंडागै गाय आवती अर रंभाती। गाय ज्यूं ई रंभाती छुटकी रसोई कांनी न्हाटती अर मां सूं कैवती- मां बैगी सी'क रोटी द्यो, गाय माता मन्नैं हेलो पाड़ै। मां कैवती - तन्नै न्यारौ ई हेलो पाड़े ! अै तो आज कालै इयां ई गळ्यां-गळ्यां रोवती फिरै। बिनां धण्यां री गावड्यां है। थारै जियांकला घणां ई है, जिका आनै हिलावै। छुटकी मां सामी कदै ई कीं नीं बोलती। गाय माता नै ज्यूं ई रोटी देवती, बा रोटी खायनै व्हीर हुय ज्यांवती। जांवती जांवती छुटकी कानीं देखती देखती व्हीर हूंवती।

आज छुटकी मांदी हुगी। ताव ई आकरो आयो, जिण सूं बा माथौ ई ऊंचो नीं कर्यो। छुटकी रा पापा वीं नै अस्पताळ लेयग्या। कीं जांचां करियाँ पछै डागदर छुटकी नै मलेरिया ताव बताय'र भरती करली। परभातै गाय बारणै आई। दो तीन बार रंभाई जणां जाय'र छुटकी री मां बारणो खोलनैं गाय मुंडागै रोटी न्हांखी। गाय छुटकी री मां नै देखतां ई जाणै निजरां सूं पूछती व्है कै छुटकी कठै अर मां कानी देख'र बिनां रोटी खायां व्हीर होयगी। दूजै - तीजै दिन ई गाय रंभाई। छुटकी री मां रोटी लेयनैं आई पण गाय रोटी कानी झांक्यो ई नीं अर रंभा रंभा'र जाणै भळै पूछती सी लागी - छुटकी कठै ? मां रै उतरियोड़ै मूंडा स्यं गाय समझगी कै छुटकी अवस मांदी है अर पकांयंत ई अस्पताळ मांय भरती है। गाय सिधी अस्पताळ पूगगी। कोई री नीजर पड़ती जितरै तो गाय टाबरां रै वारड मांय बड़गी। वारड वाळा हाको करियो – गाय...गाय...जितरै तो गाय छुटकी रै मांचौ कनै पूगगी अर वीं नै चाटण लागगी। गाय रै चाटण सूं इसो चमत्कार हुयो कै बेहोश छुटकी चीमक'र बैठी हुगी। अठीनै छुटकी रा पापा ई डागदर नैं लेय'र आयग्या। डागदर साब अर छुटकी रा पापा ओ खिलको देख'र हाक बाक व्हैग्या। गाय छुटकी नैं चाट'र मतै ई पाछी व्हीर हुगी। वीं बगत ई छुटकी त्यार हुगी। आथण रा छुट्टी ई मिलगी। दिनूगै सागण टेम गाय बारणै आयनै रंभाड़ी तो न्हाट-र छुटकी रसोई मांय सूं मां कनैं सूं दोय रोट्यां लेयनै बारै आई। गाय सामी रोट्या रखी पण गाय तो छुटकी नै फैर चाटा लागी। धाप'र चाट्यां पछै आज गाय दोनूं रोट्यां खाय'र व्हीर हुई।

छुटकी रै लारै ऊभा छुटकी रा पापा अर मम्मी कणांई छुटकी नैं देखै तो कणांई गाय नैं। आज जाणै छुटकी री मां नैं जबाब मिलग्यो हो कै - अै गायां इयां ई गळ्यां-गळ्यां रोवती नीं फिरै आं रै ई कीं साख-सीर अर दुख-दरद रो रिस्तो तो हुवै। कई माइनां में ओ रिस्तो मिनखां सूं भी बधतो निगै आवै।

- पवन पहाड़िया

छाप

जैरामजी अर लादूजी आज दिनूगै ई आठ बज्यां वाळी बसड़ी में बैठनैं रामसर व्हीर हुआ। जैरामजी आपरै छोटकियै भाई लादूजी नैं सगळै रस्तै रामसर रै किसनोजी रै घराणै रौ बखाण सुणावता बतावै हा कै जे आपणै ओ रिस्तो बैठ ज्यावै तो आपणी बायली रै सातूं सुख रैसी। जमी जाग्यां रिपिया-पईस्या अर मिनखां रो ठाठ है। घर में च्यार-च्यार पांच-पांच हाळी न्यारा पण राख्योड़ा है। बंतळ बंतळ में रामसर कणां आयग्यो कीं ठाह ई नीं पड़ी। दोनूं भाई टेसण माथै उतर परा'र किसनोजी रै घर कानी व्हीर हुया। किसनोजी रै घरै पूगतां ई लादूजी घर रै बारै भींतां माथै लिख्योड़ै पीळै आखरां मांय राज री सूचनां नैं देखतां ई जैरामजी नै दिखावता थका कयो कै भाईजी थे तो आरै लांठापणा रा बखाण आखै मारग करता आया अर अठै ओ अठीनै देखो कांई लिख्योड़ो है - 'राज रै कानी सूं आरै ओ पाखानो बणाण खातर बारह हजार रिपियां से सैजोग मिल्यो है अर अठीनै और झांको - आं नै भामासा योजनां सूं जोड्योड़ा न्यारा मानै अर आनै दो रिपिया किला रा गेहूँ पण औरूं मिलै। इण हिसाब सूं तो अै काठा गरीब है अर आप तो अतरी बड़ायां करै हा।

'अरे जणां ई तो तनै समझ में कोनी आवै। आं रै घरां राम राजी है। आगो दियां पाछो पड़ै फैर ई पाखाना अर दो रिपिया किला रा गेहूं राज कानी सूं मिलै इणरो मतलब तू जाणै ?

नीं सा ! भाईजी ! म्हारै तो समझ में कोनी आवै .....

'अरे भोळा जीव ! इणरो मतलब ओ हुयो कै आं री राज मांय ई चौफेरां चालै जणां ई तो आरै सरपंच कानी सूं पाखानां बणग्या है अर दोय रिपिया किलो रा गेहूँ ई घरां आवै। आ बात तूं कम मती आंक। अै घर में तो लांठा है जिका है ई, राज मायनै ई लांठा है। अीं खातर ई तो आपां छोरी देवण री तेवड़ी हां। सातूं सुख आं रै बारणै ऊभा है।

लादूजी नैं समझ में नीं आय रिवी ही कै अै पीळा आखरां मांय मोड्योड़ी राज री सूचनावां गरीबां रै घरां मूंडागै हुवै का लांठोड़ा घरां रै....

- पवन पहाड़िया

शिवचरण सेन 'शिवा'
जन्म : 29 अक्टूबर, 1966
शिक्षा : स्नातकोत्तर (हिंदी साहित्य), बी.एड.
कृतियाँ : ठिठुरते रेत के कण/टेसू के फूल/खिलता बचपन/ रात में डूब्यौ चाँद/टरमक टूरे टरमकटूँ / सिरजण हलोळ/इन्तकाळ
संप्रति : व्याख्याता, गिरधरपुरा, झालवाड़ (राज.)
मोबा. : 8003134522

म्हारा गांव में

उन्हाला का बादळ छाया जद सूं म्हारा गांव में।
टांकी शैळी छाकळ सूखा रूंख सूं म्हारा गांव में॥

न्हार-बैंगड्या बैठ्या कांकड़ पै घात लगायां,
छिपग्या सांकळ चढार मनख म्हारा गांव में।

बीरान होरी छै नागफणी का डर सूं झूंपड्यां,
पण होर्‌या मांदळ का जापा नत म्हारा गांव में।

कागला का भै सूं छूट्यौ फंद बच्यारी माछळ्याँ को,
पण कर्‌या नांगळ बगला नत म्हारा गांव में ।

स्याणी होर'र जीबा लागी जद सूं उनमादण,
मचरी छै आकळ-बाकळ नत म्हारा गांव में।

कीड़ा मकौड़ा की नाई होरया छे पैदा लोगदणी,
झगड्र्या छै चातळ की नांई म्हारा गांव में।

•••

भाईला

म्हारी अेक वात जाण भाईला।
सोज्यै मत खूंटी ताण भाईला॥

कवीर मीरां नै भज्यां सूं प्हैला,
भजलै अपणो प्राण भाईला।

फरज्या सामै मूंछयां खैंच, बेटा
न राखै बापू की काण भाईला।

देख भरयौ घड़ो जनसंख्या को,
बसग्या घणा मसाण भाईला।

पाल्येगो अेक दन तू मंजिल,
भर आसा को उफाण भाईला।

नत करमां की करणी देख,
पढलै गीता-कुराण भाईला।

बना सोच्यां मत दीज्यै बेटी,
दीज्यै पाणी ज्यूं छाण भाईला॥

म्हारी अेक बात जाण भाईला।
सौज्यै मत खूंटी ताण भाईला॥

- शिवचरण सेन 'शिवा'

•••

मन कै भीतर

छाबा लाग्या बादळ काळा मन कै भीतर।
सबका गेला नाळा नाळा मन कै भीतर॥

खा कचकची बाथमरी असी जोर सूं थानै,
ज्यूं बखरी मोत्यां की माळा मन कै भीतर।

आंसू की लारां छलकी यूं ओळयूं थांकी,
टूटया जद भावां का ताळा मन कै भीतर।

धरम अरथ काम लोभ का खूण्यां छै देह में,
सगळा बण्या माकड़ जाळा मन कै भीतर।

खूब कटारियां घसी थनै तिरछी नजर सूं,
रोक न पाई यानै ढालां मन कै भीतर।

घणी गलगल्यां करी थानै म्हाका तन पै,
कर पाई न म्हाका चाळा मन कै भीतर।

तू न झांके म्हारा आड़ी तो कांई हुयौ,
घणा छै म्हई च्हाबा वाळा मन कै भीतर।

- शिवचरण सेन 'शिवा'

•••

प्रहलाद सिंह झोरड़ा
जन्म : 20 अक्टूबर, 1983
शिक्षा : बी.एससी., एम.ए. बी.एड.
कृतियाँ : रंगरूड़ौ मरुदेस/चाँद खिलौना/म्हारी ढाणी
संप्रति : वरिष्ठ अध्यापक, करणी कालोनी, नागौर (राज.)

म्हारै भारत रै

म्हारै भारत रै आंगण में खेलै शेर,
बातां चालै चौफेर, पलकां में कोरी प्रीत भरी रे !

सब धरमां रा लोग अठै, आपस में मिलजुल रेवै।
मुस्लिम पर आफत आवै तो हिन्दू माथा देवै।
म्हारै भारत रै हिरदे में गीता ज्ञान, कंठा में बसे कुरान,
दुनिया सूं न्यारी रीत भरी रे !

खून पसीनो एक करै करसा केसर निपजावै।
धान, बाजरी, गेहूँ सूं, दुनियां रो पेट धपावै।
म्हारै भारत रै चरणां री पावन रेत,
सोनै चाँदी रा खेत, खेतां में गरमी शीत भरी रे !

शरणागत री रक्षा में रघुकुल रो नेम निभावै।
प्राणां रै बदळै में भी वचनां री साख बचावै।
म्हारै भारत रै शासन रा मुखिया राम,
रजधानी चारूं धाम, निरमल गंगा सी नीत भरी रे !

वेदां री जननी आ धरती, जग नैं राह दिखावै।
संत सूरमा री ओळख चारण कविता में गावै।
म्हारै भारत रै मूंछ्यांळा ए मोट्यार,
जीणै मरणै नैं त्यार, रण आंगण में नित जीत भरी रे !

●●●

मन री बातां जाणी के

मन री बातां जाणी के, जाणी तो अणजाणी के ?
बूढी माँ रे काळजियै री, पीड़ा कदै पिछाणी के ?

तूं जद भी घर सूं निकळै तो, कितरा देव मानवै बा।
झुळक झुळक बाटड़ली जोवै, पल भर चौन न पावै बा।
पण तूं पाछौ आयां बीं सूं, बोलै मीठी वाणी के ?
मन री बातां जाणी के –

थारै चेहरै रा भावां नैं , परखै छांनै ओलै बा।
खुद रो दरद छुपावै मन में, था सूं हँसकर बोलै बा।
बीं रै नैणां में निरख्यौ तूं, गंगाजी रो पाणी के ?
मन री बातां जाणी के –

बीं रै बैठां थारै घर री, शोभा साख सवाई है।
बीं रै हाथां में ही थारी, बरगत करै कमाई है।
बीं री ही पुण्याई थारी, जिन्दगाणी समझाणी के ?
मन री बातां जाणी के –

समझै तो सारा तीरथ है, बीं रै पावन चरणां में।
जे बीं रो मन राख न पावै, कसर नहीं है मरणां में।
बा ही गीता बा रामायण, बाकी कथा कहाणी के ?
मन री बातां जाणी के –

- प्रहलाद सिंह झोरड़ा

•••

थें आज बचावो पाणी रे

थें आज बचावो पाणी रे,
थांनै के समझाणी रे, पाणी सूं ही जिन्दगाणी रे।

आज हकीकत आ है भूजळ, दिन दिन ऊंडौ जायौं है।
खेतां में सींचण नैं के पीवण नैं हाथ ने आयौं है।
थारै सूं के अणजाणी रे,
थांनै के समझाणी रे, पाणी सूं ही जिन्दगाणी रे।

अपणी ईं मुरधर माटी पर, ना नदियां ना नाळा है।
बिरखा रो पाणी संचण नैं, बस नाड्यां अर पाळां है।
होदां ल्यौ छत रो पाणी रे,
थांनै के समझाणी रे, पाणी सूं ही जिन्दगाणी रे।

सुणल्यौ भायां लोग लुगायां, जणै जणै नैं केणौ है।
मगरै रो पाणी ढाळां कर, कूवां में भर लेणौ है।
पाणी री बच सराणी रे,
थांनै के समझाणी रे, पाणी सूं ही जिन्दगाणी रे।

फंव्वारा अर बूंद बूंद सिंचाई नैं अपणाणी है।
ठावी गिणती री पाणत सूं कमती लागै पाणी है।
नूंवी तकनीकां जाणी रे,
थांनै के समझाणी रे, पाणी सूं ही जिन्दगाणी रे।

जे पाणी नैं नही बचायो, दुनियां कीकर रेवैली।
आवण वाळी पीढ्यां भी आपां नै गाळ्यां देवैली।
होवैली जग री हाणी रे,
थांनै के समझाणी रे, पाणी सूं ही जिन्दगाणी रे॥

- प्रहलाद सिंह झोरड़ा

लोक-मैत्रेय प्रकाशन खंडवा/उज्जैन/पूना

प्रस्तुति : निमाड़ी लोकभाषा परिषद्, खंडवा/स्व सेवा संयोजन समिति सिहोरा, जबलपुर